राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

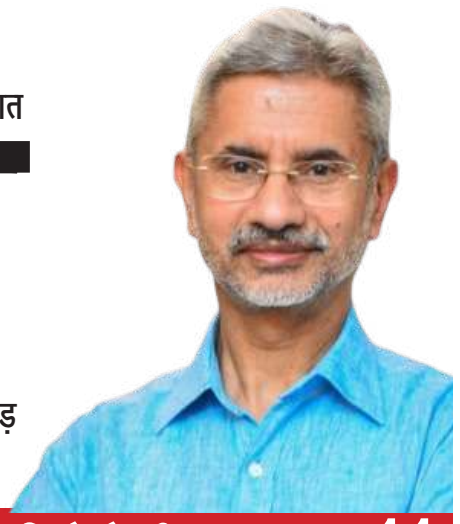

12 चीन एवं रूस बढ़ा रहे सैन्य सहयोग, जापान के विदेश मंत्री ने ...

एस जयशंकर ने स्वीडन में आठ देशों के विदेश मंत्रियों से की मुलाकात ... 11

वर्ष : 11 | अंक : 04 | पटना, सोमवार, 15 मई, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 41°C

न्यूनतम तापमान 27.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,995
चांदी	72,500
सेंसेक्स	57,635
निफ्टी	16,986

जयशंकर प्रसाद ने आठ देशों के विदेश मंत्रियों के साथ की द्विपक्षीय बैठक

प्रात : किरण

नई दिल्ली/स्टॉकहोम। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में आयोजित यूरोपीय यूनियन-इंडो पैसिफिक मिनिस्ट्रियल के इतर आठ देशों लातविया, ऑस्ट्रिया, फ्रांस, बेल्जियम, रोमानिया, साइप्रस और बुल्गारिया और लिथुआनिया के अपने समकक्षों के साथ द्विपक्षीय बैठकें की है। डॉ जयशंकर ने जिन विदेश मंत्रियों के साथ बातचीत की, उनमें लातविया के एडगर रिंकेविक्स, ऑस्ट्रिया के अलेक्जेंडर शालेनबर्ग, लिथुआनिया के गेब्रियलियस लैंड्सबर्गिस, फ्रांस के कैथरीन कोलोना, बेल्जियम के हादजा लाहबिब, बुल्गारिया के इवान कोंडोव, रोमानिया के बोगडान ऑरेस्कु और साइप्रस के कॉन्स्टेंटिनोस कोम्बोस शामिल रहे। भारतीय विदेश मंत्री ने अपने सिलसिलेवार ट्वीट्स में आठ देशों के अपने समकक्षों के साथ बातचीत का उल्ल्ख किया। लातवियाई विदेश मंत्री के साथ अपनी बैठक के बारे में कहा, हमने द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने और यूक्रेन संघर्ष के नतीजों पर बात की। इसके अलावा बहुपक्षीय सहयोग पर भी चर्चा हुई।

उन्होंने ऑस्ट्रिया के अलेक्जेंडर शालेनबर्ग के साथ अपनी बैठक के संबंध में दोनों पक्षों ने गतिशीलता और प्रवासन में समझौतों पर हस्ताक्षर किए और यूक्रेन संघर्ष और भारत-प्रशांत पर भी चर्चा की। डॉ जयशंकर ने आगे कहा, फ्रांसीसी विदेश मंत्री कैथरीन कोलोना के साथ बैठक में आगामी जुलाई में बैस्टिल दिवस समारोह के लिए मुख्य अतिथि के रूप में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की फ्रांस की आगामी यात्रा पर चर्चा की तथा हिंद-प्रशांत और ती-20 पर विचारों को साझा किया

गया। लिथुआनियाई समकक्ष गेब्रियलियस लैंड्सबर्गिस के साथ अपनी बैठक में कहा कि दोनों ने द्विपक्षीय सहयोग के साथ-साथ भू-राजनीतिक घटनाओं पर यूरोप के दृष्टिकोण पर चर्चा की। बेल्जियम के मंत्री हादजा लहबीब के साथ अपनी बैठक पर उन्होंने दोनों नेताओं ने अपने द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने के साथ-साथ बहुपक्षीय सहयोग के लिए मिलकर काम करने पर सहमति जतायी। डॉ जयशंकर ने बल्गेरियाई विदेश मंत्री के साथ अपनी बैठक के संबंध में कहा बुल्गारिया के विदेश मंत्री इवान कोंडोव के साथ क्षेत्र और इसके वैश्विक प्रभाव पर विचारों का आदान-प्रदान किया। हमारे बढ़ते द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों पर चर्चा की। अपने रोमानियाई समकक्ष बोगडान ऑरेस्कु के साथ अपनी बैठक पर भारतीय विदेश मंत्री ने कहा कि उन्होंने पिछले साल यूक्रेन से भारतीय छात्रों को निकालने के दौरान रोमानियाई सरकार की मदद के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। इसके साथ ही दोनों नेताओं ने रक्षा और ऊर्जा सहयोग पर भी चर्चा की। उन्होंने साइप्रस के विदेश मंत्री कॉन्स्टेंटिनोस कोम्बोस से मुलाकात पर कहा ह्व हमने गतिशीलता और पर्यटन के बारे में और अधिक द्विपक्षीय जुड़ाव की आवश्यकता पर भी बात की।

गंगा नदी में डूबे 4 युवक, दो की मौत, अन्य की तलाश जारी

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। राजधानी पटना में चार लोगों की डूबने की खबर का मामला प्रकाश में आया है। मिली जानकारी के मुताबिक गंगा नदी में स्नान के दौनार चार लोग गंगा नदी में डूब गये हैं। दो युवकों की गंगा नदी में डूबने से मौत हो गयी है, जबकि 2 की तलाश जारी है। इस घटना से गंगा घाट पर अफरा-तफरी का माहौल है। बताया जा रहा है कि चारों युवक गंगा नदी में स्नान करने आए हुए थे। तभी गंगा की तेज धार में चारों समां गये। चारों युवकों को नदी में डूबता देख उस वक्त गंगा घाट पर मौजूद लोगों ने पुलिस की इस बात की सूचना दी। जिसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने एसडीआरएफ

को मौके पर बुलाया और फिर छानबीन शुरू की गयी। घटना पटना के दीघा इलाके की है जहां गंगा नदीं से दो युवकों की लाश बरामद की गयी जबकि दो अन्य की तलाश अब भी जारी है। दोनों मृतक आरा के संदेश और नौबतपुर के रहने वाले थे। लोगों से मिली जानकारी के मुताबिक नौबतपुर के रहने वाले युवक दीघा अपने परिवार के यहाँ बरसी में आये थे। स्नान करने के दौरान ये बड़ा हादसा हुआ है जिसमे अचानक एक ही परिवार के चार लो गंगा में समा गए है। एक साथ चार युवकों के गंगा नदी में डूबने की खबर आग की तरह फैल गयी और देखते ही देखते गंगा घाट पर लोगों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। खबर की जानकारी मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया।

सीएम अपने पैतृक गांव कल्याण बिगहा में ग्रामीणों की सुनी समस्याएं, शीघ्र निष्पादन का दिए निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

- मुख्यमंत्री ने अपनी धर्मपत्नी स्व मंजू कुमारी सिन्हा की पुण्य तिथि के अवसर पर दी श्रद्धांजलि

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपनी धर्मपत्नी स्व मंजू कुमारी सिन्हा की 16वीं पुण्य तिथि के अवसर पर मंजू कुमारी सिन्हा स्मृति पार्क कंकड़बाग जाकर स्व मंजू सिन्हा की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। इसके पश्चात मुख्यमंत्री मंजू कुमारी सिन्हा स्मृति पार्क कंकड़बाग से अपने पैतृक गाँव कल्याण बिगहा, हरनौत स्थित कविराज रामलखन सिंह स्मृति वाटिका पहुंचकर अपनी धर्मपत्नी स्व मंजू कुमारी सिन्हा की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री ने अपनी माता स्व परमेश्वरी देवी एवं अपने पिता कविराज स्व रामलखन सिंह की प्रतिमा पर भी माल्यार्पण कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री के सुपुत्र निशांत कुमार, बड़े भाई सतीश कुमार सहित परिवार के अन्य सदस्यों ने भी स्व मंजू कुमारी सिन्हा की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार कल्याण बिगहा स्थित अपने पुश्तैनी गांव के देवी मंदिर में राज्य की सुख, शांति एवं समृद्धि के लिये पूजा अर्चना की। मुख्यमंत्री ने ग्रामीणों की समस्याएं सुनी एवं उनके त्वरित निष्पादन के लिए अधिकारियों को निर्देश दिया । इस अवसर पर ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष उदयकांत मिश्रा, सांसद कौशलेन्द्र कुमार, विधायक कृष्ण मुरारी शरण उर्फ प्रेम मुखिया, विधायक जितेन्द्र कुमार, विधान पार्षद रीना यादव, विधान पार्षद संजय कुमार सिंह उर्फ गांधी , विधान पार्षद ललन सर्राफ, पूर्व विधान पार्षद रणवीर नंदन, पूर्व विधायक इंजीनियर सुनील कुमार, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य मनीष कुमार वर्मा, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, भवन निर्माण विभाग के सचिव कुमार रवि, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, बिहार राज्य नागरिक परिषद के पूर्व महासचिव अरविंद कुमार सिंह, राज्य खाद्य आयोग के पूर्व सदस्य नंद किशोर कुशवाहा सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति, सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकताओं ने भी स्व मंजू कुमारी सिन्हा की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

सिद्धरमैया व डी के शिवकुमार मुख्यमंत्री पद की दौड़ में सबसे आगे

कर्नाटक में कांग्रेस विधायक दल की बैठक, पार्टी ने तीन पर्यवेक्षक नियुक्त किए

प्रात : किरण संवाददाता

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कर्नाटक में कांग्रेस विधायक दल का नेता चुनने के लिए पूर्व मुख्यमंत्री सुशील कुमार शिंदे और पार्टी नेताओं- जितेंद्र सिंह एवं दीपक बाबरिया को पर्यवेक्षक नियुक्त किया है। संगठन कांग्रेस महासचिव के सी वेणुगोपाल ने बताया कि केंद्रीय पर्यवेक्षक सीएलपी की बैठक की निगरानी करेंगे। उन्होंने ट्वीट किया कांग्रेस अध्यक्ष ने महाराष्ट्र के पूर्व सीएम सुशील कुमार शिंदे , पार्टी महासचिव जितेंद्र सिंह और पूर्व महासचिव दीपक बाबरिया को विधायक दल के नेता के चयन के लिए पर्यवेक्षक नियुक्त किया है। कांग्रेस ने भारतीय जनता पार्टी को उसके एकमात्र दक्षिणी गढ़ कर्नाटक से पर्याप्त बहुमत के साथ बेदखल कर राज्य में शनिवार को शानदार वापसी की। कांग्रेस विधायक दल की अहम बैठक आज शाम को होगी, जहां नेता के चयन को लेकर फैसला किया जाएगा। पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धरमैया और केपीसीसी अध्यक्ष डी के शिवकुमार दोनों ही मुख्यमंत्री पद की दौड़ में सबसे आगे हैं।

शिवकुमार को पार्टी के लिए संकटमोचक माना जाता है जबकि सिद्दरमैया का पूरे कर्नाटक में प्रभाव है। अगर जद(एस) से निलंबित होने के बाद कांग्रेस में शामिल होने वाले सिद्दरमैया को विधायक दल का नेता चुना जाता है तो यह मुख्यमंत्री के तौर पर उनका दूसरा कार्यकाल होगा। वह 2013-18 तक राज्य के मुख्यमंत्री रहे थे। शिवकुमार उनके मंत्रिमंडल में मंत्री रहे थे। पार्टी के सूत्रों के अनुसार, नव निर्वाचित विधायकों की राय ली जाएगी और उसके आधार पर उन्हें जरूरत पड़ने पर अपने नेता के लिए वोट करने को भी कहा जा सकता है। दरअसल, कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मिली जोरदार सफलता के बाद भी उसे राजस्थान सिंड्रोम का डर सता रहा है तथा मुख्यमंत्री पद के लिए वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मुख्यमंत्री सिद्दारमैया और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डीके शिवकुमार के बीच चयन की दुविधा की स्थिति है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा निर्वाचित विधायकों के लिए होटल के कमरे बुक करने और पार्टी पर्यवेक्षकों के संभावित दौरा इसका संकेत माना जा रहा है। पार्टी पर्यवेक्षकों का आना हालांकि सामान्य बात है लेकिन इतनी प्रचंड जीत के बाद भी यह कुछ असहज लग रहा है। मुख्यमंत्री के रूप में कांग्रेस के लिए बेहतर विकल्प कौन है -सिद्दारमैया या शिवकुमार, इस पर निर्णय लेने के लिए वे प्रत्येक विधायक से फीडबैक लेने के लिए बेंगलुरु में होंगे। मौजूदा परिस्थिति में पार्टी आलाकमान मुख्यमंत्री पद के लिए शिवकुमार का समर्थन कर रहा है, क्योंकि उन्होंने सोनिया गांधी से कर्नाटक को उनके पाले में लाने की प्रतिबद्धता जतायी थी। इसके बावजूद शिवकुमार के राज्याभिषेक के मार्ग में कुछ बाधाएं हैं। घन शोधन से संबंधित अदालती मामलों में उन पर लटकी तलवार उन्हें परेशान कर सकती हैं। इसके अलावा वह गिरफ्तारी और कारावास से बचने के लिए जमानत पर है। वहीं यदि मुख्यमंत्री के रूप में उन्हें अदालतों द्वारा तिहाड़ वापस भेज दिया जाता है, तो इससे सरकार की छवि को अपूरणीय क्षति होगी।

मन की बात के विषयों पर आधारित प्रदर्शनी देखने पहुंचे पीएम

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रविवार को राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय (एनजीएमए) में आयोजित एक दिलचस्प प्रदर्शनी जन शक्ति को देखने पहुंचे, जहां मन की बात में शामिल विषयों को भारत के शीर्ष कलाकारों की ओर से बनाई गई कलाकृतियां प्रदर्शित की गई हैं। मन की बात में शामिल विषयों जैसे स्वच्छता, जल संरक्षण, कृषि, अंतरिक्ष, पूर्वोत्तर, नारी शक्ति, योग, आयुर्वेद आदि पर भारत के शीर्ष कलाकारों द्वारा बनाई कलाकृतियों को जन शक्ति शीर्षक से आयोजित

प्रदर्शनी में शामिल किया गया है। मनु और माधवी पारेख, अतुल डोडिया, परेश मैती, इरन्ना जीआर, जगन्नाथ पंडा समेत देश के शीर्ष कलाकारों ने इसमें अपना योगदान दिया है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, मैं उन सभी कलाकारों को बधाई देता हूं, जिन्होंने अपनी रचनात्मकता से प्रदर्शनी को समृद्ध किया है। प्रदर्शनी का आयोजन संस्कृति मंत्रालय ने मासिक रेडियो कार्यक्रम ह्यमन की बात की 100वीं कड़ी के मौके पर किया है। इसमें 12 प्रमुख कलाकारों की ओर से निर्मित कलाकृतियों की प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शनी राजधानी स्थित राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय में लगाई है। उल्लेखनीय है कि ह्यमन की बातह्ल कार्यक्रम तीन अक्टूबर 2014 को शुरू किया गया था और हर महीने के आखिरी रविवार को सुबह 11 बजे आकाशवाणी (एआईआर) और दूरदर्शन (डीडी) नेटवर्क पर प्रसारित किया जाता है। 30 मिनट के कार्यक्रम की 100वीं कड़ी 30 अप्रैल को प्रसारित की गई थी।

प्रवीण सूद बने सीबीआई के नए निदेशक

प्रात : किरण

नई दिल्ली/ एजेंसी। कर्नाटक के पुलिस महानिदेशक प्रवीण सूद को केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) का अगला निदेशक नियुक्त किया गया है। सूद का कार्यकाल दो वर्ष का होगा। वे आगामी 25 मई को कार्यकाल पूरा करने वाले सुब्धोध जायसवाल का स्थान लेंगे। सीबीआई के नए निदेशक के चयन के लिए शनिवार को उच्चाधिकार प्राप्त समिति की बैठक हुई थी, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ और लोकसभा में सबसे बड़ी पार्टी के नेता अधीर रंजन चौधरी शामिल हुए। बैठक में तीन नामों का चयन

किया गया और नए केंद्रीय सतर्कता आयुक्त व सदस्य लोकपाल के नामों पर भी चर्चा हुई। केन्द्रीय मंत्रिमंडल की नियुक्ति मामलों की समिति ने प्रवीण सूद के नाम को मंजूरी प्रदान की। केंद्रीय कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय के एक आदेश में इसकी जानकारी दी गई है।

गहरी खाई में कैंटर गिरने से पांच की मौत

शिमला। हिमाचल प्रदेश के जिला कांगड़ा के धर्मशाला में रविवार को एक दर्दनाक हादसा पेश आया जिसमें एक ही परिवार के तीन सदस्यों समेत पांच लोगों की मौत हो गई है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार हादसा उथड़ाग्रां में उस वक्त पेश आया जब लोग गेहूं की कटाई कर उसे कैंटर में लाद कर ला रहे थे। लेकिन उथड़ाग्रां के पास संपर्क मार्ग पर कैंटर अनियंत्रित हो गया और सड़क से करीब 100 मीटर नीचे लढ़क गया। जिसके चलते चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई जबकि एक घायल महिला ने टांडा अस्पताल में उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। बताया जा रहा है कि इनमें से तीन लोग एक ही परिवार के थे। मौके पर पुलिस टीम और एसडीआरएफ के जवान भी पहुंच चुके हैं। पुलिस अधीक्षक हितेश लखनपाल ने हादसे की पुष्टि की है। धर्मशाला विधानसभा क्षेत्र के तहत उथड़ाग्रां पंचायत के रसेहड़ गांव में हुई सड़क दुर्घटना पर मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने गहरा दुख प्रकट किया है। उन्होंने कहा कि दुख की इस घड़ी में प्रदेश सरकार दुर्घटना प्रभावित लोगों के साथ है। उन्होंने शोक संतप्त परिजनों के प्रति गहरी संवेदनाएं प्रकट की हैं। उन्होंने घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की भी कामना की और कहा कि स्थानीय अस्पताल प्रशासन को घायलों के उचित उपचार के निर्देश दिए गए हैं।

नौसेना ने किया ब्रह्मोस मिसाइल का सफल परीक्षण

प्रात : किरण

नई दिल्ली/ एजेंसी। नौसेना की अग्रिम पंक्ति की मिसाइल विध्वंसक आईएनएस मोरमुगाओ से एक ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल का सफल परीक्षण किया गया। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मिसाइल परीक्षण ने समुद्र में नौसेना की शक्ति को प्रदर्शित किया है। नौसेना के एक अधिकारी ने कहा, नई निर्देशित मिसाइल विध्वंसक, आईएनएस मोरमुगाओ ने ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल के अपने प्रथम परीक्षण के दौरान सफलतापूर्वक लक्ष्य को भेदा। अधिकारी ने कहा, स्वदेश विकसित जहाज और उसकी हथियार प्रणाली आत्मनिर्भरता का तथा

समुद्र में नौसेना की शक्ति का एक और शानदार उदाहरण है। मिसाइल परीक्षण के स्थान के बारे में अभी जानकारी नहीं मिल पाई है। ब्रह्मोस एयरोस्पेस प्राइवेट लिमिटेड भारत-रूस का एक संयुक्त उद्यम है, जो सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल निर्मित करता है। यह मिसाइल, पनडुब्बी, जहाज और विमान या जमीनी प्लेटफॉर्म से दागी जा सकती है।

प्रतिबंध | आत्मनिर्भर भारत पहल के तहत चौथी स्वदेशीकरण सूची को मंजूरी

रक्षा मंत्रालय ने सैन्य महत्व वाले 928 आइटम के आयात पर प्रतिबंध लगाया

इससे पहले 3 सूचियों में 1238 वस्तुओं का आयात किया जा चुका है बंद

प्रात : किरण

नई दिल्ली/ एजेंसी। रक्षा मंत्रालय ने आत्मनिर्भर भारत पहल के तहत सैन्य महत्व के 928 सब-सिस्टम और पुर्जों के आयात पर प्रतिबंध लगाते हुए चौथी स्वदेशीकरण सूची (पीआईएल) को मंजूरी दे दी है। इन वस्तुओं का विवरण सृजन पोर्टल पर उपलब्ध है, जिन्हें सूची में निर्धारित की गई समय सीमा के बाद भारतीय-उद्योग से ही खरीदा जा सकेगा।]

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने और रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (डीपीएसयू) के आयात को न्यूनतम करने के लिए यह कदम उठाया है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सैन्य महत्व के 928 लाइन

रिप्लेसमेंट यूनिट, सब-सिस्टम्स, स्पेयर एंड कंपोनेंट्स की चौथी रचनात्मक स्वदेशीकरण सूची को मंजूरी दी है। इसमें हाई-ऐंड-मटीरियल्स और अतिरिक्त उत्पाद सहित 715 करोड़ मूल्य के आयात वाले सामान शामिल हैं। इन सभी वस्तुओं का विवरण सृजन पोर्टल पर उपलब्ध है। सभी वस्तुओं को सूची में निर्धारित की गई समय सीमा के बाद भारतीय-उद्योग से खरीदा जा सकेगा।

इससे पहले तीन रचनात्मक स्वदेशीकरण सूचियां दिसंबर 2021, मार्च 2022 और अगस्त 2022 में जारी की जा चुकी हैं। इन सूचियों में 2500 आइटम हैं, जो पहले से ही स्वदेशी हैं। तीनों सूचियों में 1238 (351 107 780) आइटम हैं जो दी गई समय सीमा के भीतर स्वदेशी किए जाएंगे। अब तक देश में 1,238 में से 310 वस्तुओं का स्वदेशीकरण किया जा चुका है। इसमें पहली सूची के 262, दूसरी सूची के 11 और तीसरी स्वदेशीकरण सूची के 37 आइटम शामिल हैं। अब चौथी सूची में 928 आइटम शामिल किये गए हैं।

रक्षा मंत्रालय ने रविवार को एक बयान में बताया कि रक्षा क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रम इस स्वदेशीकरण को विभिन्न साधनों के माध्यम से पूरा करेंगे। कुछ को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग विकसित करेंगे और निजी भारतीय उद्योग बनाएंगे, इससे अर्थव्यवस्था में विकास, रक्षा-क्षेत्र में निवेश और रक्षा के सार्वजनिक उपक्रमों के आयात में कमी आएगी। इसके साथ ही घरेलू रक्षा उद्योग में अकादमिक और अनुसंधान संस्थानों के शामिल होने से रक्षा उपकरणों की डिजाइन क्षमता भी बढ़ेगी।

संक्षिप्त खबरें

देश के अधिकांश हिस्सों में लू चलने का अनुमान

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और हरियाणा के साथ उत्तर और मध्य भारत में पारा चढ़ने के साथ ही देश के अधिकांश हिस्सों में लू चलने के आसार है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार रविवार को पश्चिम मध्य प्रदेश और विदर्भ में लू चलने का अनुमान है। पश्चिमी मध्य प्रदेश, विदर्भ, मध्य महाराष्ट्र, पश्चिमी राजस्थान और गुजरात के कुछ हिस्सों में भीषण गर्मी दर्ज की गयी है। तापमान लगातार बढ़ रहा है और बाहरी क्षेत्रों में तापमान 40 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। दूसरी ओर पर्वतीय क्षेत्र के उच्चतम तापमान में बढोतरी होने के बाद लू की स्थिति बन गयी है। पोर्ट ब्लेयर के पास तूफान ह्यमाचीह्ल बना हुआ है। बंगाल की खाड़ी में पैदा हुआ चक्रवाती तूफान मोचा अंडमान निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर के उत्तर में स्थित है। रविवार को इसके उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ने की संभावना है और यह बंगलादेश के कॉक्स बाजार और म्यांमार के कुकू के बीच जा सकता है।

अनंतनाग में सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़

अनंतनाग। जम्मू-कश्मीर में अनंतनाग जिले के अंडवान सागाम इलाके में रविवार को सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ शुरू हो गई है। माना जा रहा है कि दो-तीन आतंकी सुरक्षाबलों के घेरे में फंसे हुए हैं। इनके सफाये के लिए सैन्य अभियान जारी है। पुलिस को इस इलाके में आतंकियों की मौजूदगी की सूचना मिली थी। इसके बाद सेना, पुलिस और सीआरपीएफ के जवानों ने इनके सफाये का अभियान शुरू किया। इस दौरान आतंकियों ने सुरक्षाबलों पर गोलीबारी शुरू कर दी।

महाराष्ट्र : अकोला में हिंसा, एक की मौत, धारा 144 लागू

मुंबई। महाराष्ट्र में अकोला के पुराने शहर क्षेत्र में शनिवार देररात विवादित पोस्ट को लेकर दो गुटों के बीच हुई मारपीट के बाद आगजनी और पथराव में एक व्यक्ति की मौत हो गई। इस घटना में 10 लोग घायल हो गए। घायलों में दो पुलिसकर्मी भी हैं। रामदास पेठ पुलिस स्टेशन की टीम ने इस मामले में अब तक 26 लोगों को हिरासत में लिया है। गृहमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने घटना की जांच के आदेश दिए हैं। अकोला के पुलिस अधीक्षक संदीप घुगे ने बताया कि शहर में धारा 144 लागू कर दी गई है। स्थिति अब नियंत्रण में है। एहतियातन स्टेट रिजर्व फोर्स की दो यूनिट को तैनात किया गया है। बताया गया है कि रात करीब साढ़े11 बजे हरिहरपेठ क्षेत्र के राजराजेश्वर सेतु इलाके में विवादास्पद पोस्ट के कारण दो समूहों के बीच बहस शुरू हुई।

आंध्र प्रदेश में सड़क हादसे में छह लोगों की मौत, तीन घायल

काकीनाडा। आंध प्रदेश में काकीनाडा से 25 किलोमीटर दूर थलारेवु बाईपास रोडकेपास रविवार को एक बस, ऑटोरिक्शा से टकरा गयी जिससे छह लोगों की मौत हो गयी और तीन अन्य घायल हो गये। पुलिस ने बताया कि ऑटोरिक्शा खचाखच भरा हुआ था और उस पर सवार लोग यानम के पास नीलापल्ली गांव के मजदूर थे, जिनमें ज्यादातर महिलाएं थीं। हादसा उस समय हुआ जब ऑटोरिक्शा पर सवार लोग काकीनाडा के पास एक झींगा प्रसंस्करण कारखाने में काम के लिए जा रहे थे। निजी बस से हुयी जोरदार टक्कर में छह लोगों की मौके पर ही मौत हो गयी और तीन घायल हो गये।

संक्षिप्त खबरें

जीजस एंड मेरी एकैडमी के दशम बोर्ड में सभी छात्र सफल

पटना सिटी (प्राकि)। जीजस एंड मेरी एकैडमी के आईसीएसई की दशम बोर्ड में शत-प्रतिशत छात्र सफल हुए। इसके लिए यहां के छात्र एवं शिक्षकगण धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने अपनी कड़ी मेहनत से छात्रों को सफलता की राह में आने वाली हर बाधा को आसान करते हुए कड़ी मेहनत के लिए उन्हें प्रेरित किया। विशेषकर यहां पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं के साथ ही अभिभावकगण विशेष धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने इस विद्यालय पर विश्वास करते हुए अपने बच्चों को लगनशील एवं कठिन परिश्रम करने में हरसंभव सहायता प्रदान की। इस विद्यालय के दसवी बोर्ड में 94 प्रतिशत अंक लाकर कृष राज प्रथम स्थान पर, 91.6 प्रतिशत अंक के साथ प्रज्जवल देव स्वर्णकार दूसरे स्थान पर, 90.2 प्रतिशत के साथ प्रतीक राज तीसरे स्थान पर एवं 90 प्रतिशत अंक के साथ अनुराज नाथ चौथे स्थान पर रहे। अधिकतर छात्रों ने भी 80 से 90 प्रतिशत के बीच अंक प्राप्त किया।

छात्राओं का सामूहिक जन्मदिन व मातृ दिवस मनाया

पटना सिटी (प्राकि)। बिहार नेत्रहीन परिषद के द्वारा संचालित अंतरज्योति बालिका विद्यालय में मई माह में जिन छात्राओं का जन्मदिन था, उन सात छात्राओं का बर्थडे समारोह मनाया गया। इस अवसर पर परिषद के महासचिव विजय कुमार सिंह एवं सचिव रमेश प्रसाद सिंह उपस्थित थे। सचिव ने बताया कि जनवरी, 22 से अनिता विजय हिंगोरानी के द्वारा प्रायोजित कार्यकम का आयोजन हर महीने के द्वितीय रविवार को उस महीने में होने वाले छात्राओं का जन्मदिन मनाया जाता है। इस अवसर पर छात्राओं को उनके पसंद के अनुसार गिफ्ट प्रदान किया जाता है। उनके पसंद के अनुसार भोजन आदि की व्यवस्था भी की जाती है। साथ है सचिव रमेश सिंह ने बताया कि छात्राओं ने मातृ दिवस भी मनाया और मनमोहक गीत की प्रस्तुति भी दी।

सूढ़ी समाज को अतिपिछड़ा में शामिल कराने का संकल्प

पटना सिटी (प्राकि)। पटना साहिब विधानसभा क्षेत्र के काजीबाग में सूढ़ी समाज की बैठक विनोद शौंडिक की अध्यक्षता में हुई। इसमें डॉ अविनाश प्रसाद, दिलीप कुमार, शिव कुमार, संजय कुमार, देवी, महेंद्र प्रसाद, प्रभात कुमार, नयन कुमार, अमित कुमार, संतोष कुमार, पवन दीप, राकेश, उपेंद्र, राजीव, हरि प्रसाद, उदय प्रसाद, राकेश कुमार, प्रमोद कुमार, अवधेश कुमार, संजय, सोनू आदि उपस्थित थे। इस दौरान सूढ़ी समाज को अतिपिछड़ा वर्ग में शामिल करने के लिए संघर्ष का संकल्प लिया गया। इसके साथ ही वार्ड स्तर पर एकजुटता का निर्णय लिया गया।

हनुमत कथा स्थल पर मरीजों की सेवा कर रहे डॉ सुधीर

पटना (प्राकि)। होम्योपैथ के चिकित्सक डॉक्टर सुधीर कुमार भी बिहटा के तरेर में चल रहे हनुमत कथा में अपनी सेवा देने से पीछे नहीं रहे। पटना के लंगर टोली में प्रैक्टिस करने वाले डॉक्टर सुधीर कुमार अपनी टीम के साथ होम्योपैथ की जरूरी दवाओं को लेकर कथा स्थल के पास शिविर लगा रखे हैं। यहां वे विभिन्न बीमारियों से ग्रसित और उक्त शिविर में आने वाले मरीजों का इलाज करने के साथ ही उन्हें दवा भी प्रदान कर रहे हैं। उनके इस कार्य सेवा की सराहना अनेक होम्योपैथ चिकित्सकों से लेकर दवा विक्रेताओं ने भी की है।

सीबीएसई 10वीं की परीक्षा में विद्या निकेतन के छात्रों ने किया बेहतर प्रदर्शन

दानापुर। विद्या निकेतन, सराय, मनेर, दानापुर, पटना के छात्रों ने सीबीएसई दसवीं की परीक्षा में शानदार सफलता हासिल की। रिजल्ट आने के बाद बच्चों ने दोस्तों के संग खुशियां बांटी। बेहतर रिजल्ट से उत्साहित बच्चों ने अपने लक्ष्य का निर्धारण कर आगे की मंजिल पाने के लिए और भी मेहनत करने का निर्णय लिया। छात्रों ने 10वीं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। 349 विद्यार्थियों में से 27 विद्यार्थियों का 90-100 प्रतिशत के बीच में रहा। 48 विद्यार्थियों का 80-90 प्रतिशत के बीच में रहा। शेष विद्यार्थियों का भी परिणाम संतोषप्रद रहा। संस्थान के प्राचार्य डा विनय कुमार सिन्हा ने छात्रों की सफलता का श्रेय शिक्षकों को दिया है।

प्राधिकार के पूवार्नुमति के वोटर लिस्ट तिथि में विस्तार सही नहीं

चुनाव अथारिटी तख्तश्री कमेटी के अध्यक्ष को बिना अनुमति डेट बढ़ाने से नाराज, 20 तक सौंपें

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

बिहार राज्य चुनाव प्राधिकार के सचिव ने तख्तश्री हरिमंदिर जी प्रबंधक कमेटी की मतदाता सूची तैयार करने के लिए अध्यक्ष के द्वारा बिना अनुमति के तिथि विस्तार किए जाने को गंभीरता से लिया है ।उसने कहा कि बार-बार तिथि विस्तारित किया जाना कहीं से भी सही नहीं है। प्राधिकार के सचिव से मिलने गए लोगों के सामने दीपक लांबा, लकी बग्गा आदि के समक्ष भी नाराजगी जताई गई। स्थिति यह रही कि इस संबंध में कमेटी के महासचिव इंद्रजीत सिंह को भी प्राधिकार के सचिव पुरुषोत्तम पासवान की नाराजगी झेलनी पड़ी। बाद में उन्होंने हस्तलिखित में दिया कि उन्होंने अपने स्तर से चुनाव की तिथि 20 मई तक करने का आदेश जारी नहीं किया है, बल्कि अध्यक्ष के द्वारा यह निर्णय लिया गया है। तख्तश्री हरिमंदिर जी प्रबंधक कमेटी की मतदाता सूची तैयार कराने के 29 अप्रैल को पत्रांक तपस 3/4922/23 भेजा गया था। मतदाता सूची तैयार करने के लिए अंतिम तिथि 30 अप्रैल से विस्तारित कर 10 मई को किए जाने की सूचना प्राधिकार को दी गई थी। विदित हो कि प्राधिकार

के द्वारा 27 फरवरी को पत्रांक 430 से प्रबंधक कमेटी से अनुमोदित मतदाता सूची 14 मार्च तक सिटी एसडीओ को उपलब्ध कराने का निदेश दिया गया था। मगर हजारीबाग के गुरुद्वारा सिंह सभा के अध्यक्ष सरदार अवतार सिंह के एक मार्च के पत्रांक शून्य के द्वारा किए गए अनुरोध के आलोक में आपसे अनुरोध किया गया था कि यदि प्रारूप मतदाता सूची निर्वाचन पदाधिकारी को समर्पित करने की तिथि विस्तारित किए जाने की आवश्यकता हो, तो 31 मार्च तक प्रारूप मतदाता सूची निर्वाचन पदाधिकारी को उपलब्ध कराई जा सकती है। आपके एक अप्रैल, 23 के पत्रांक तपस 3/4896/23, तपस 3/4897/23, तपस 3/4898/23, तपस 3/4899/23 में तपस 3/4900/23 द्वारा पांचों हलका की मतदाता सूची तैयार करने की तिथि 23 अप्रैल तक विस्तारित किए जाने की सूचना प्राधिकार को दी गई। पुनः आपके 30 मार्च को पत्रांक तपस 3/4892/23 द्वारा प्रबंधक कमेटी की बैठक 22 मार्च के निर्णय की प्रति प्राधिकार को उपलब्ध कराई गई, जिसमें 30 अप्रैल तक वोटर लिस्ट तैयार करने का निर्णय हुआ था।

प्रबंधक कमेटी के निर्णय का सम्मान करते हुए प्राधिकार ने 24 अप्रैल को पत्रांक 829 के द्वारा मतदाता सूची अनुमोदित करने की तिथि 30 अप्रैल तक विस्तारित की थी। मगर आपके प्रसंगाधीन पत्र द्वारा यह तिथि 10 मई तक विस्तारित करने की सूचना प्राधिकार को दी गई है। फिर 20 मई बिना अनुमति किया गया। इससे प्रतीत होता है कि प्रबंधक कमेटी द्वारा मतदाता सूची तैयार करने में जान-बूझकर देर कर रही है। प्रबंधक कमेटी के निर्णय में चुनाव को टालने की मंशा दिख रही है। इस संबंध में प्राधिकार को शिकायतें भी प्राप्त हो रही हैं। कमेटी के सदस्य चरणजीत सिंह भी शिकायत कर चुके हैं। ज्ञातव्य हो कि ससमय मतदाता सूची तैयार कराने एवं निर्वाचन कराने की जिम्मेवारी प्राधिकार की है। किंतु प्राधिकार की पूवार्नुमति के बिना मतदाता सूची के संदर्भ में तिथि विस्तारित करने का निर्णय प्रबंधक कमेटी के द्वारा लिया जा रहा है, जो अनुचित है। पटना सिटी एसडीओ के चार मई के पत्रांक 150 के द्वारा सूचित किया गया है कि प्राधिकार के 24 अप्रैल के पत्रांक 829 के अनुपालन में चार मई तक उन्हें अनुमोदित मतदाता सूची उपलब्ध नहीं कराया गया है। मतदाता सूची तैयार कर निर्वाचन पदाधिकारी को उपलब्ध कराने में अनावश्यक विलम्ब करना और बिना प्राधिकार के पूवार्नुमति के मतदाता सूची जमा करने की तिथि में बार-बार विस्तार किया जाना किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं है। प्राधिकार के सचिव पुरुषोत्तम पासवान ने कहा कि विचारोपरांत 20 मई तक मतदाता सूची तैयार करते की अंतिम तिथि निर्धारित की जाती है। उक्त तिथि तक मतदाता सूची तैयार कर सिटी एसडीओ सह निर्वाचन पदाधिकारी को अचूक रूप से उपलब्ध कराया जाए एवं इसकी सूचना प्राधिकार को भी दी जाए।

आओ अंग्रेजी सीखें व सिखाएं अभियान शुरू

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। न्यू संत पॉल स्कूल के गुड़ की मंडी शाखा में रविवार को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका मूल मंत्र है आओ अंग्रेजी सीखें एवं अपने आसपास के लोगों को भी सिखाएं। इस कार्यक्रम के माध्यम से स्कूल ने ठाना है कि एक साल के अंदर अपने सभी ब्रांच में पढ़ने वाले छात्रों को अंग्रेजी में बातचीत करना सिखाना है। साथ ही छात्र जहां भी अपने घर पर रहते हैं, उनके आस-पड़ोस के लोगों को भी अंग्रेजी सिखाने के लिए प्रेरित करना है। कार्यक्रम में न्यू संत पॉल स्कूल के शिक्षकों एवं छात्रों ने मिलकर शपथ लिया कि वह सब शुद्ध हिन्दी लिखना, शुद्ध अंग्रेजी बोलना, संस्कृत भाषा का ज्ञान के साथ उर्दू भाषा को भी जानना है। इस एक साल में हम सभी मिलकर सभी भाषाओं के ज्ञान को प्राप्त करेंगे।

कार्यक्रम में इस विद्यालय के चेयरमैन शंकर चौधरी ने कहा है कि हमारे स्कूल के सभी ब्रांच में हर शनिवार को सभी छात्रों को 20-20 वाक्य दिए जाएंगे, जो उनके दैनिक उपयोग की होगी। इस तरह से वे लोग सभी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यक्रम में स्कूल के निदेशक अविनाश कुमार, सुजीत कुमार चौधरी, ब्रांच इंचार्ज सृष्टि सिंह, प्रिंसिपल सायरा इमाम सहित शिक्षक रितेश राज, मिस सरिता, मिस वंदना, रंजीत, एहतेशाम अहमद, दीपेंद्र, सौरभ, उज्जवल, मिस आकांक्षा आदि उपस्थित थे।

मातृ दिवस पर दिव्यांगता मुक्ति का संकल्प : डॉ अशोक चौधरी

मानसिक दिव्यांगता को समन्वित पुनर्वास केन्द्र की स्थापना इसी साल

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भारत विकास विकलांग न्यास के अंतर्गत सेवा और संस्कार प्रकोष्ठ द्वारा 154वां पोलियो एवं करेक्टिव शल्य चिकित्सा शिविर एवं निःशुल्क कृत्रिम उपकरण वितरण समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि भवन निर्माण मंत्री डॉ अशोक चौधरी ने कहा कि यह दिव्यांग अस्पताल बिहार से दिव्यांगता मुक्ति की ओर मजबूती से कदम बढ़ा रहा है। उन्होंने बिहार के विधायकों, विधान पार्षदों, राजनेताओं, सामाजिक कार्यकताओं से अनुरोध किया वे इस अस्पताल से मिलकर बिहार को दिव्यांगतामुक्त करने में अपना योगदान दें। जीवन के अंधेरे को रोशन करने का यह पवित्र मंदिर है। बिहार में भी सर्वश्रेष्ठ कोटि की सेवा निर्धनों की होती है, यह अद्भुत है। उन्होंने कृत्रिम उपकरण निर्माण केन्द्र, ऑपरेशन थिएटर एवं मरीज वार्ड को देखकर कहा कि यहां की सेवाए पीड़ित मानवता की सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में बीबीसी के पूर्व रिपोर्टर मणिकांत ठाकुर ने कहा कि यह अस्पताल

वास्तव में पीड़ित दिव्यांगों का अनोखा मंदिर है। अस्पताल की सेवाओं को देख वे अभिभूत थे। अस्पताल के प्राण एवं पीड़ित मानवता को समर्पित डॉ एसएस झा ने कहा कि इस अस्पताल ने हमें सेवा का अवसर देकर उन पर उपकार किया है। अस्पताल के महामंत्री पद्मश्री बिमल जैन ने जानकारी दी कि इस अस्पताल द्वारा जल्द ही मानसिक दिव्यांगता की दिशा में एक समन्वित पुनर्वास केन्द्र की स्थापना करने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है। इस वर्ष के अंत तक उम्मीद है कि हम इसे शुरू किया जाएगा। डॉ उमेश चौधरी सुमन ने मानसिक दिव्यांगता से संबंधित अस्पताल के बारे में विस्तार से बताया। आज के शिविर का प्रायोजन डॉ अशोक चौधरी, श्रीमती शांति अग्रवाल, जयदीप जैन एवं श्रीमती मीरा प्रसाद एवं समस्त परिवार के द्वारा आयोजित था। चुन्नीलाल मेगामार्ट के डायरेक्टर अमित अग्रवाल ने यहां की सेवा को देखकर आश्चर्यचकित थे। अगला शिविर 18 जून को तय किया गया है, जिसके लिए मरीजों को 17 जून को आना अनिवार्य है। रविवार को 15 मरीजों की शल्य चिकित्सा, 25 दिव्यांगजनों को कृत्रिम उपकरण तथा 60 से ज्यादा मरीजों की ओपीडी में जांच की गई। अस्पताल के चेयरमैन देशबन्धु गुप्ता ने आगत अतिथियों का स्वागत किया। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए विवेक माथुर ने कहा कि मातृ दिवस पर सफल ऑपरेशन में मां को जितनी खुशी होगी कहने लायक नहीं होगा। कार्यक्रम का प्रारंभ वंदे मातरम तथा समापन राट्रगान से हुआ। इस अवसर पर अमर कसेरा, रेखा कसेरा, वीणा गुप्ता, अनिता कृष्णा, जयदीप जैन आदि उपस्थित थे।

मंदिर स्थापना दिवस पर गर्भ, मुंडन व विद्यारंभ संस्कार कराया

प्रात : किरण संवाददाता

पटना सिटी। श्री गौरी शंकर सूर्य नारायण मंदिर न्यास, बालू घाट गंगा नदी के किनारे स्थित मंदिर में दसवां स्थापना दिवस मनाया गया। इस दौरान पूजा-अर्चना किया गया। अखिल भारतीय गायत्री परिवार, हरिद्वार से आए पंडित उपेन्द्र नाथ तिवारी, गया जिला से आए शंकर देव शर्मा, मीणा देवी एवं मुन्ना बाबा ने भजन, प्रवचन और हवन यज्ञ मंदिर में उपस्थित श्रद्धालुओं के बीच मंत्रोच्चारण के साथ पूजा-पाठ कराया गया। इस अवसर पर गर्भ संस्कार, छोटे बच्चों का मुंडन संस्कार एवं विद्यारंभ संस्कार भी कराया गया। सुबह में निर्मल गंगा जन अभियान के तहत गंगा की सफाई एवं शुद्धिकरण और स्वच्छ बनाए रखने के लिए गायत्री परिवार के द्वारा सफाई अभियान भी चलाया गया। शाम में 251 दीप प्रज्जवलित किया गया और गंगा मां की आरती उतारी गई। कार्यक्रम को संचालित करने में मुख्य संरक्षक शैलेन्द्र कुमार सिंह, शिवनाथ मेहता, गणेश कुमार, मुरलीधर, रजनीश कुमार और राहुल कुमार सहयोग दिए। मंदिर प्रागंण में आए श्रद्धालुओं के बीच डा आनन्द मोहन शर्मा, डा संजय कुमार, डा तरुण कुमार की टीम के द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाया गया। इसमें शुगर, बीपी, थायरॉइड, हृदय रोग, त्वचा रोग, कुष्ठ रोग, पेट रोग लिवर, फेफड़ा एवं मस्तिष्क रोग से संबंधित बीमारियों के डाक्टर शिविर में लोगों का इलाज किए और दवा भी दिया गया।

फरार दो आरोपित गिरफ्तार, शराब जब्त, जख्मी मौत

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

आलमगंज और दीदारगंज थाना की पुलिस ने फरार दो आरोपित को गिरफ्तार किया है। इधर मालसलामी थाना की पुलिस ने भी देसी शराब के साथ एक किशोर को गिरफ्तार किया है। आलमगंज थाना की पुलिस ने बताया कि मारपीट और हत्या के प्रयास एवं आर्म्स एक्ट के मामले में फरार आरोपित आलमगंज थाना क्षेत्र के शेरशाह रोड नूरानी बाग निवासी साहेब कुमार उर्फ शिव कुमार को गिरफ्तार किया गया है। उसके खिलाफ कांड संख्या 784/22 में मामला दर्ज था।

दीदारगंज थाना पुलिस की पुलिस ने बताया कि मारपीट व एससी-एसटी एक्ट में फरार सोनावां के रहने वाले ललन सिंह को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार के खिलाफ कांड संख्या 19/22 दर्ज है। दूसरी ओर मालसलामी थानाध्यक्ष प्रमोद कुमार ने बताया कि नुरुद्दीनगंज में छापेमारी कर 16 लीटर देसी महुआ शराब के साथ एक किशोर को गिरफ्तार किया गया है, जबकि शराब पीकर हंगामा मचाने में तीन लोगों डोमन, रितिक और संजय को गिरफ्तार किया गया है।

जख्मी युवक की हुई मौत गुलजारबाग के पास जख्मी हालत में 35 वर्षीय व्यक्ति का जख्मी हालत में रविवार की सुबह पड़ा था। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची गुलजारबाग जीआरपी ने उसे उपचार के लिए एनएमसीएच भेजा। गुलजारबाग पोस्ट प्रभारी मंजू देवी ने बताया कि अस्पताल पहुंच कर जख्मी व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक की पहचान नहीं हो सकी है। उम्र करीब 32-35 साल है। मृतक के सिर, पैर सहित शरीर के अन्य हिस्सों में गंभीर चोट के निशान थे। वह किस स्थिति में जख्मी हुआ है, यह स्पष्ट नहीं हो सका है। प्रथमदृष्टया ट्रेन के झटके से घायल होने और मौत की संभावना प्रतीत हो रही है। जीआरपी ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पहचान के लिए शव को 72 घंटा सुरक्षित रखा जाएगा। मृतक वेश-भूषा से भिखारी प्रतीत होता है।

पीपा पुल की जर्जर स्थिति पर बिफरे सांसद रामकृपाल

प्रात : किरण संवाददाता

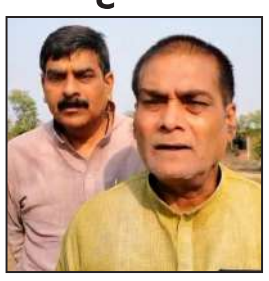

दानापुर। नगर के अंतर्गत पीपा पुल की दुर्दशा पर पाटलिपुत्र के सांसद रामकृपाल यादव क्षोभ व्यक्त किया और पुल निगम के अधिकारियों को अति शीघ्र दुरुस्त करने को कहा सनोज यादव के पहल पर सांसद ने संज्ञान लिया। पीपा पुल की नट बोल्ट सब ढीले हो गए हैं।

पुल की पहुंच पथ 3 किमी में से 1.5 किमी ईंट सोलिंग लगाकर छोड़ दिया गया है ,शेष पथ बालू से भरा है। दानापुर दियारा के लाइफ लाइन कहे जाने वाले पुल की जर्जर हालत से आय दिन दुर्घटनाएं होती रहती है। रामकृपाल यादव ने इसे अति शीघ्र दुरुस्त करने की मांग की है। इस पुल के निर्माण से लेकर अब तक इसके संवेदक और अभियंता खूब चांदी काटे। हैं, क्योंकि बाढ़ आ जाने पर कितना काम हुआ और कितना काम नहीं हुआ सब बाढ़ के पानी के साथ लीपापोती हो जाती है ।कार्य का कोई भौतिक साक्ष्य नहीं रह जाता है और फिर अगले वर्ष में नए कार्य का प्राक्कलन बनता है और काम होता है।

वकीलों की समस्या पर बार काउंसिल गंभीर

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर। नगर के युवा अधिवक्ता कल्याण समिति की ओर से रविवार को न्यायालय परिसर में सम्मान समारोह सह परिचर्चा का उद्घाटन बार काउंसिल इंडिया के अध्यक्ष मनन कुमार मिश्रा ने की। इस अवसर पर श्री मिश्रा ने कहा कि पूरे प्रदेश के वकील को एकजुट होना होगा। वकीलों की समस्याओं का समाधान मिलजुल कर निकाला जा सकता है।

उन्होंने कहा कि वकील के लिए कोई फंड नही है। इसके लिए सरकार पर दबाब कैसे डाला जाये ताकि वकीलओं का समस्याओं का समाधान किया जा सकेंगे। साथ ही वकील प्रोटेक्कशन एक्ट पर पहल किया गया है। उन्होंने कहा कि वकीलओं की समस्याओं को लेकर राज्य बार काउंसिल व बार काउंसिल

इंडिया हरसंभव समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करेंगा। इनके अलावे बिहार स्टेट बार काउंसिल के अध्यक्ष रामाकांत शर्मा , बार काउसिंल के उपाध्यक्ष धर्मनाथ प्रसाद यादव ,समिति के प्रदेश अध्यक्ष राजेश कुमार दूबे , समिति के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अरविंद प्रसाद मालाकार व कृष्ण कुमार गुप्ता ने भी विचार व्यक्त की। श्री मालाकार ने कहा कि समिति द्वारा एडवोकेट्स प्रोटेक्शन एक्ट , समान पैरवी प्रणाली , मृत्यु दावा राशि व सेवानिवृति राशि को समय पर भुगतान व बेलफेयर स्टांप की वृद्धि के अनुपात में वृद्धि करने , सभी अधिवक्ता संघों का चुनाव एक बार कराने , पेंशन स्क्रीम , नवोदित अधिवक्ताओं को प्रोत्साहन राशि उपलब्ध कराने , हत्या व मौत होने पर प्रभावित परिवार को राज्य सरकार से आर्थिक सहायता दिलाने, बार काउसिंल को अधिवक्ताओं के प्रति जिम्मेदार व संवेदनशील बनाने व अधिवक्ताओं के अन्य कल्याणकारी योजना पर विचार किया गया है। मौके पर समिति के दिलीप कुमार सिन्हा , प्रमोद कुमार, इंद्रजीत चक्रवर्ती, धर्मेंद्र कुमार सिन्हा , ब्रजेश नंदन , अमरेंद्र , अनिल कुमार सिन्हा , कमल कुमार समेत आदि मौजूद थे।

मदर्स डे पर रविवार को आनंद बाजार के जूनियर सैनिक स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित

दानापुर। नगर के. नन्हे मुन्ने बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में एक से बढ़कर एक गीत व नाटक की प्रस्तुति कर दर्शकों मंत्रमुग्ध कर दिया. जिंदगी में मोबाइल की बढती दखल ने किस तरह रिश्ते की अहमियत को खत्म कर जबरन अपनी दखल बढा ली है, लघु नाटिका मोबाइल एडिक्शन के जरिए बच्चों ने पेश कर मोबाइल और रिश्ते के जरुरत को समझाने की कोशिश की. मदर्स डे पर मां की महत्ता को बताने के लिए साथ ही मां के प्रति बच्चों का कर्तव्य क्या हो इसे भी बतलाया गया. मां को सर्वोपरि महत्व देने के लिए कार्यक्रम का उद्घाटन स्कूल के संस्थापक प्रकाश कुमार की मां शीलू भारती व राजकुमारी देवी ने संयुक्त रूप से किया. स्वागत गान के बाद गणपति नृत्य , फौजी आर्मी , गलती से मिस्टेक जैसे लधु नाटकों के जरिये बच्चों ने कमाल का प्रदर्शन किया. मौके पर बच्चों के अभिभावकों के साथ गणमान्य लोग मौजूद थे।

साइबर बदमाशों ने सैनिक से 92 हजार रुपए ठगा

प्रात : किरण संवाददाता

दानापुर। थाना क्षेत्र के बीआरसी के सैनिक कुंदन कुमार को ओएलएक्स एप पर वाहन खरीदना महंगा पड़ गया ।बाइक खरीदने के लिए सैनिक की जमा पूंजी तो गई लेकिन उसकी पसंदीदा बाइक भी उसे नहीं मिली। उसके खाते से साइबर बदमाशों ने 92 ,699 रुपए ठगा लिया है। इस संबंध में सैनिक कुंदन कुमार ने स्थानीय थाना में साइबर अज्ञात बदमाशों के विरूद्ध मामला दर्ज कराया है। दर्ज प्राथमिकी में सैनिक कुंदन कुमार ने बताया कि ओएलएक्स एप पर ऑनलाइन बाइक की बुकिंग किया । उसके बाद बाइक को भेजने के नाम पर मुझे झांसा देकर 92 हजार छह सौ 99 रुपए की ठगी कर लिया है। वही थाने के सगुना मोड के न्यू मैनपुरा निवासी ललिता कुमारी को एटीएम कार्ड कुरियर से मंगाना महंगा पडा । कुरियर कंपनी वाले से मोबाइल फोन पर एक एप भेजा ।एप को चालू करने के लिए पांच रुपए ऑनलाइन भेजा । उसके बाद मेरे खाते से एक मिनट में पांच बार में 64 हजार रुपए निकासी कर लिया गया । इस संबंध में ललिता कुमारी ने स्थानीय थाना में लिखित शिकायत की है। लिखित शिकायत में बताया है कि बैंक के चापरासी से फोन कर एटीएम कार्ड के बारे में पूछा तो बताया कि इंडियन पोस्ट से भेज दिए है। उन्होंने बताया कि मेरे मोबाइल फोन कर पता पूछ तो बताया कि चौसा प्रखंड है। दस मिनट के बाद पांच रुपए पेटीएम से भेजने के लिए कहा और पांच रुपए पेटीएम से भेजा। उसने कहा कि नही मिला है तो अपनी सहेली के पेटीएम से पांच रुपए भेजा । उसके खातें से 12 हजार रुपए निकासी कर लिया और मेरे खाते से पांच बार में एक मिनट में 64 हजार रुपए निकासी कर लिया गया है। थानाध्यक्ष ने बताया कि मामला दर्ज कर छानबीन की जा रही है।

अब भाजपामुक्त की चली आंधी

प्रात : किरण संवाददाता

पटना सिटी (प्राकि)। जनता दल यूनाइटेड महानगर के अध्यक्ष आसिफ कमाल, प्रवक्ता अनंत अरोड़ा, उपाध्यक्ष रामप्रवेश एवं पूर्व प्रदेश सचिव रुचि अरोड़ा ने संयुक्त बयान जारी कर कहा कि जिस तरह से कर्नाटक में भाजपा की शर्मनाक हार हुई है, उससे ऐसा लगता है कि 2024 में देश से भाजपा का सफाया होना तय है। कर्नाटक की जनता को धन्यवाद देते हुए नेताओं ने कहा कि देश के अंदर जाति और धर्म की राजनीति नही प्यार, मोहब्बत और विकास की राजनीति चलेगी। जिस तरह से भारतीय जनता पार्टी के लोग जनता दल यू के नेता और कार्यकताओं को तोड़ना चाह रहे हैं, वह कभी कामयाब नही हो पाएंगे ।बिहार में सीएम नीतीश कुमार के साथ बिहार की जनता गोलबंद है ।आने वाले समय में देश की जनता नीतीश को देश के नेतृत्व का मौका जरूर देगी। इसमें महासचिव विक्की निषाद, महासचिव प्रवीण चौधरी, उपाध्यक्ष गुड्डू पाठक, अभय यादव आदि उपस्थित थे।

नप में एक और कनीय अभियंता बहाल करने की मांग

दानापुर। नगर परिषद क्षेत्र के 40 वार्डों में समुचित विकास करने के लिए एक और कनीय अभियंता बहाल करने की मांग की है। परिषद के उपमुख्य पार्षद सरिता देवी ने परिषद के मुख्य पार्षद व कार्यपालक पदाधिकारी सुशील कुमार को लिखित ज्ञापन सौंपा है। उपमुख्य पार्षद सरिता देवी ने बताया कि परिषद के 40 वार्डों में समुचित विकास कार्यों बेहतर ढंग से कार्य करने के लिए एक और कनीय अभियंता का बहाल करने, रंजीत कुमार को सफाई निरीक्षक के पद पर पदोन्नति करने और टैक्स वसूली पूर्व की तरह वसूली करने की मांग की है और प्राइवेट कंपनी द्वारा ट्रैक्स वसूली पर रोक लगाने की मांग की है।

मातृ दिवस पर माताएं सम्मानित

फतुहा। फतुहा की साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था जन्म साहित्य परिषद् के तत्वाधान में फतुहा के मकसूदपुर स्थित संस्कार शिक्षा निकेतन के प्रांगण में भव्य मातृ दिवस समारोह का आयोजन रविवार को किया गया जिसमें दर्जन अधिक माताओं को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया। इस मौके पर आयोजित इस समारोह का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर प्रख्यात गीतकार विजय गुंजन ने किया। समारोह को जिन कवियों ने अपनी कविता से प्रभावित किया एवं उनमें कुमार कांत गया, श्री रामरक्षा मिश्र बक्सर, सुनील कुमार दुबे पटना, अभिलाषा सिंह बख्तियारपुर, रश्मि गुप्ता, रेनू शर्मा हाजीपुर, पीयूष आजाद पटना विशेष रहे। इनके अलावा गौतम कुमार सिंह, राणा राजेंद्र पासवान, संजय राय, श्यामनंदन यादव आदि ने भी मां का महत्व पर प्रकाश डाला।

कर्नाटक में कांग्रेस की जीत पर सियासी बयानबाजी जारी

राज वही करेगा जो जनता की बात करेगा : कांग्रेस

पटना। बिहार विधानसभा में सत्तारूढ़ दल के सचेतक सह कांग्रेस विधायक राजेश कुमार ने कर्नाटक में पार्टी की जीत पर जश्न मनाते हुए कहा है कि भाजपा की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। जनता अब भाजपा के मजहबी नारों और तुष्टीकरण की नीति से उब चुकी है। इसलिए कर्नाटक की जनता ने कांग्रेस के जनहित के मुद्दों को समर्थन दिया है। उन्होंने कहा कि अब वही राज करेगा जो जनता की बात करेगा। इस जीत में राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा ने अच्छी भूमिका निभाई है. साथ ही सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी मल्लिकार्जुन खड़गे समेत सभी वरिष्ठ नेताओं की अहम भूमिका रही। कर्नाटक में कांग्रेस की जीत की खुशी में विधायक राजेश कुमार ने कार्यकताओं एवं सहयोगियों के बीच जश्न मनाया। इस अवसर पर कांग्रेस नेता अरविंद लाल रजक, राजेंद्र चौधरी, राहुल पासवान, पंकज मिश्रा, किशोर कुमार, हीरालाल चौधरी, श्याम बाबू सिंह, बालेश्वर ठाकुर, सत्येंद्र कुमार समेत अन्य नेता मौजूद रहे। कर्नाटक में कांग्रेस की जीत से उत्साहित कार्यकताओं ने कहा कि यह तो अभी झांकी है, 2024 का लोकसभा चुनाव बाकी है।

झूठे भाषण और भगवान ने डुबो दी बीजेपी की लुटिया: जदयू

पटना। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में बीजेपी की करारी हार पर जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता सह पार्टी महासचिव राजीव रंजन ने जबरदस्त चुटकी ली। उन्होंने कहा कि बीजेपी के झूठे भाषण और चुनावों में भगवान के गलत इस्तेमाल ने बीजेपी की लुटिया डुबो दी। राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा कि बीजेपी अब झूठे भाषण देने की बजाय लोगों की भलाई के लिए काम करे और अपने वादे पूरे करे। वहीं, पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता डॉक्टर सुनील कुमार सिंह ने कहा कि कर्नाटक में बीजेपी की हार विपक्षी एकता की बड़ी शुरूआत है और आने वाले दिनों में विपक्षी पार्टियों की एक जुटता और मजबूत होगी। जदयू प्रवक्ता ने कहा कि आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर देश में अब पीएम की वेकेंसी क्रिएट हो रही है। उधर पार्टी के एक और प्रवक्ता श्री हिमराज राम ने कहा कि कर्नाटक में बीजेपी की हार से अब 2024 के लोकसभा की तस्वीर साफ हो रही है। पार्टी प्रवक्ता ने कहा कि आगामी चुनाव में देश की सभी विपक्षी पार्टियां एक होने जा रही हैं। उन्होंने कहा कि कर्नाटक में मिली हार दिखाती है कि अब बीजेपी का वर्चस्व और लोगों का पार्टी से लगाव कम हो रहा है।

कर्नाटका हार की नैतिक जिम्मेवारी पीएम की : राजद

पटना। राष्ट्रीय जनता दल विधायक डॉक्टर रामानुज प्रसाद एवं राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश महासचिव भाई अरुण कुमार ने कहा है कि कर्नाटका विधान सभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी जिस प्रकार शर्मनाक ढंग से चुनाव हारी है उस, हार की जिम्मेवारी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बनती है। राजद नेताओं ने कहा कि जिस प्रकार चुनाव में तरह-तरह के हथकंडे अपनाए गए, वह स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार हुआ है। आगे कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने बजरंग दल को बजरंगबली से जोड़ने का काम किया और राजनीति में धर्म का दखलअंदाजी धड़ल्ले से किया। वहीं चुनाव जीतने के लिए केरला स्टोरी जैसी हेट फिल्म, को दिखाकर हिंदू भावनाओं को भड़काने का काम किया गया। सरकारी तंत्रों का भरपूर दुरुपयोग किया गया। परंतु कर्नाटक की जनता ने तमाम हथ कंडो को किनारा करते हुए भारतीय जनता पार्टी को हराने का काम किया। राजद नेताओं ने कहा कि कर्नाटक के चुनाव में प्रधानमंत्री ने रोड शो किया और रोड पर फूलों की बारिश करवाई। चुनाव में सिर्फ और सिर्फ एक ही चेहरा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आ रहा था। राजद नेताओं ने कहा कि इस हार की नैतिक , और भौतिक जिम्मेवारी प्रधानमंत्री की ही बनती है।

संपूर्ण क्रांति दिवस पर 5 जून को सभी मुख्यालयों पर राजद का धरना

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव के निर्देश के आलोक में एवं लालू प्रसाद यादव के मार्गदर्शन में युवा राष्ट्रीय जनता दल की दो दिवसीय मैराथन बैठक राजद के राज्य कार्यलय में संपन्न हुई। जिसमें बिहार के सभी जिलों के युवा राजद के अध्यक्ष व प्रदेश युवा राजद के पदाधिकारी सम्मिलित हुए। जिसमें निर्णय लिया गया कि संपूर्ण क्रांति दिवस पर एक दिवसीय धरना बिहार के सभी जिला मुख्यालयों पर 5 जून को किया जायेगा। उक्त जानकारी रविवार को राजद कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता में राजद के मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव ने दी। संवाददाता सम्मेलन में युवा राजद के प्रदेश अध्यक्ष राजेश यादव, राष्ट्रीय जनता दल के प्रधान महासचिव रणविजय साहू, युवा राजद के प्रवक्ता अरुण यादव सहित पार्टी के पदाधिकारी मौजुद रहे।

राजद नेतओं ने बताया कि संपूर्ण क्रांति के अवसर पर नई शिक्षा नीति, जाति जनगणना, महंगाई जैसे जनता के मुद्दे पर मुख्य रूप से आमजन के बीच बताया जाएगा। ताकि आवाम भाजपा नीत केन्द्र सरकार की जन विरोधी नीतियों से लोग रूबरू हो सकें। खाद्य पदार्थ डीजल पेट्रोल की कीमतें आसमान छू रहीं हैं। भारतीय जनता पार्टी महंगाई को और बढ़ावा दे रही है वही समावेशी विकास के लिए जाति की गणना राज्य हित और देश हित में है। जिसका भारतीय जनता पार्टी पुरजोर विरोध कर रही है। बीजेपी को डॉक्टर भीमराव अंबेडकर द्वारा रचित संविधान पर भरोसा नहीं है। भाजपा नही चाहती है धन धरती शिक्षा नौकरी राज पाट हिस्सा दलित शोषित वंचित पिछड़ा अति पिछड़ा के बिच जाए। भाजपा नही चाहती है कि शोषित वंचित वर्गों को सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक हिस्सेदारी मिले। जबकि राष्ट्रीय जनता दल लालू प्रसाद व तेजस्वी प्रसाद यादव बाबा भीमराव अंबेडकर द्वारा रचित संविधान में विश्वास रखते हैं और संकल्प लेते हैं की संविधान हर हाल में देश में सुरक्षित रहें।

लालू प्रसाद चाहते हैं धन धरती शिक्षा नौकरी राज पाट हिस्सा दलित शोषित वंचित पिछड़ा अति पिछड़ा के पास हो। साथ ही सामाजिक आर्थिक और राजनितिक हिस्सेदारी आबादी के अनुरूप मिले। भाजपा मनुस्मृति का विस्तार चाहती है। जबकि राजद वंचित शोषित दलित के शिक्षा का अधिकार चाहती है। बिहार के सभी जिला मुख्यालयों पर 5 जून को युवा राजद का असरदार एक दिवसीय धरना होगा। गरीब विरोधी नीतियां और देश की हालात को प्रमुखता से रखकर सवालातों को आमजन तक पहुंचाया जायेगा संवादाताओं को संबोधित करते हुए राजद के मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव ने कहा कि हमारी महागठबंधन की सरकार जनहित में समावेशी विकास की नीतियों को लागू करने के लिए जाति आधारित गणना को कराने के लिए कृत संकल्पित है।

परीक्षा में निगेटिव मार्किंग शिक्षक अभ्यर्थियों के साथ अन्याय : लोजपा रा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने बिहार लोक सेवा आयोग शिक्षक भर्ती परीक्षा के लिए सरकार द्वारा जारी किए गए सिलेबस का विरोध किया है। पार्टी के मुख्य प्रदेश प्रवक्ता राजेश भट्ट का कहना है कि सिलेबस में निगेटिव मार्किंग और अंग्रेजी को अनिवार्य कर सरकार शिक्षक अभ्यर्थियों के साथ ज्यादती कर रही है। श्री भट्ट ने कहा कि बीपीएससी के चेयरमैन ने आखिर किस आधार पर यह कहा था कि परीक्षा में निगेटिव मार्किंग नहीं होगी। क्या वे अभ्यर्थियों झूठा दिलासा दे रहे थे या सरकार के फैसले सामने उनके फैसले की कोई अहमियत नहीं। श्री भट्ट ने कहा कि बिहार सरकार लगातार शिक्षक अभ्यर्थियों के धैर्य की परीक्षा लेते आ रही है। वह हर बार उनके साथ छल करते आ रही है। सरकार ने पहले 2017 और 2019 में एसटीईटी पात्रता परीक्षा में उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को सातवें चरण की बहाली के तहत नियुक्त करने का सपना दिखाया, फिर सात वर्षों के उपरांत सरकार ने उनके सारे सपनों को चकनाचूर कर दिया। सरकार उनकी नियुक्ति के बजाय शिक्षक भर्ती नियमावली 2023 लागू कर उनके पूर्व की पात्रता परीक्षा के तहत योग्यता को निरस्त करते हुए उनपर नई तुगलकी फरमान थोप दिया और अब बीपीएससी के तहत ली जाने वाली परीक्षा में निगेटिव मार्किंग और अंग्रेजी विषय को अनिवार्य कर सरकार उन्हें मानसिक रूप से परेशान कर रही है, जो बिल्कुल गैर-वाजिब है। श्री भट्ट ने कहा कि लोक जनशक्ति पार्टी अभ्यर्थियों के विरूद्ध सरकार के इस मनमाने फैसले का विरोध करती है। पार्टी हर मोर्चे पर अभ्यर्थियों के साथ मजबूती से खड़ी है और जरूरत पड़ने पर वह सड़क से सदन तक उनकी लड़ाई लड़ने को भी तैयार है। श्री भट्ट ने कहा कि सरकार को छात्रों पर जबरन सिलेबस ठोकने की बजाए छात्रों से उनकी राय को प्राथमिकता देनी चाहिए। उक्त आशय की जानकारी लोजपा (रा) के प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन पासवान ने दी।

यंग इंडिया के बोल सीजन-3 का प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता में 50 प्रतिभागियों ने लिया भाग

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय युवा कांग्रेस द्वारा आयोजित यंग इंडिया के बोल सीजन-3 का प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन रविवार को सदाकत आश्रम में संपन्न हुआ। जिसमें प्रदेश भर के सभी जिलों से आए 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिन्होंने बेबाकि के साथ प्रतियोगिता के तीनों फार्मेट में भाषण, वाद-विवाद एवं कविता/व्यंग्य में अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। प्रदेश भर से आए प्रतिभागियों के प्रदर्शन का आंकलन जज के पैनल के रूप में बिहार कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता असित नाथ तिवारी, प्रवक्ता ज्ञानरंजन, पूर्व प्रवक्ता राज छवि राज ने किया। यंग इंडिया के बोल सीजन 3 की विस्तृत जानकारी देते हुए बिहार राज्य प्रभारी एवं सह प्रभारी यंग इंडिया के बोल के राष्ट्रीय प्रवक्ता जावेद खान एवं रत्नेश मिश्रा ने बताया कि भारतीय युवा कांग्रेस लगातार लोकतांत्रिक तरीके से अपने संगठन का विस्तार करते हैं, जिसके अंतर्गत चुनाव की प्रक्रिया भारतीय युवा कांग्रेस से लेकर प्रदेश युवा कांग्रेस और जिला से लेकर विधानसभा तक पूरी होती है। चुनाव द्वारा पदाधिकारियों को चुना जाता है। 2023 में पुनः यंग इंडिया के बोल सीजन 3 का आयोजन किया जा रहा है। जिसके अंतर्गत बिहार से भी प्रदेश में प्रवक्ताओं के चयन हेतु पूरे प्रदेश से 321 लोगों ने ऑनलाइन आवेदन किया था। स्क्रूटनी के बाद 50 लोगों का चयन कर प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता के लिए पटना बुलाया गया था। इसमें स्वाति सिंह को पहला, धीरज कुमार को दूसरा और अजमेर करीम को तीसरा स्थान हासिल हुआ। बिहार युवा कांग्रेस के प्रभारी राजेश सिन्हा एवं बिहार युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष शिव प्रकाश गरीबदास ने यंग इंडिया के बोल को लेकर कहा कि इस आयोजन को लेकर प्रदेश भर के युवाओं में गजब का उत्साह देखने को मिला। आयोजन में बिहार युवा कांग्रेस के प्रभारी राजेश सिन्हा (सन्नी), बिहार युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष शिव प्रकाश गरीब दास, यंग इंडिया के बोल सीजन 3 के बिहार प्रभारी युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता जावेद खान, सह-प्रभारी उत्तर प्रदेश सह प्रवक्ता रत्नेश मिश्रा, खुर्रम, मोदस्सिर, आयुष, विकास यादव सोनू, अमित कुमार, कलामुद्दीन और अमितेश समेत सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

हम की राष्ट्रीय परिषद की बैठक : संतोष सुमन ने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के लिए किया नामांकन

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा से के संस्थापक संरक्षक बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी की गरिमामय उपस्थिति में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह बिहार सरकार में मंत्री डॉ संतोष कुमार सुमन के अध्यक्षता में 14 एवं 15 मई को पूर्व से राजगीर कन्वेंशनल हॉल नालंदा में निर्धारित राष्ट्रीय परिषद की बैठक पार्टी के झंडोत्तोलन एवं दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम की विधिवत शुरूआत किया गया। हम की राष्ट्रीय परिषद की बैठक में पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर संतोष कुमार सुमन ने राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद पर, पार्टी के प्रधान महासचिव के लिए राजेश पांडेय, पार्टी के कोषाध्यक्ष पद के लिए कामता ऋषियासन ने निर्वाचन पदादिकारी शक्ति सावंत एवं सहायक निर्वाचन पदाधिकारी राजेश रंजन के समक्ष अपना नामांकन का पर्चा दाखिल किया। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं अन्य पदों के लिए उम्मीदवारों के द्वारा पर्चा भरे जाने के समय पार्टी के बड़े संख्या में नेता एवं कार्यकर्ता मौजूद थे। राजेश पांडेय ने बताया कि चुनावी प्रक्रिया के दूसरे दिन कल 15 मई को निर्वाचन पदाधिकारी शक्ति सावंत एवं सहायक निर्वाचन पदाधिकारी राजेश रंजन के द्वारा हम पार्टी के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं अन्य पदों के लिए विजय उम्मीदवारों के नाम की घोषणा की जाएगी। राजेश पांडेय ने बताया कि हम की राष्ट्रीय परिषद की बैठक में बहुत से मुद्दे पर चर्चा हुई। सोमवार को नए नए सिरे से राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव के बाद पार्टी के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ पार्टी के नेता एवं कार्यकर्ता आगे की रणनीति पर काम करेंगे। हम की राष्ट्रीय परिषद की बैठक में मंच पर डॉ अनिल कुमार टेकारी विधायक, ज्योति मांझी, बाराचट्टी विधायक, रामेश्वर यादव, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, बीरेंद्र सिंह, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश सिंह आदि हम के वरिष्ठ नेता मौजूद थे।

लोजपा रा में कई दल के नेता हुए शामिल

पटना। लोजपा (रामविलास) अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ को धारदार संगठन बनाने के उद्देश्य से रविवार को पटना जिला के सदिशोपुर के वक्खपुर में आयोजित मिलन समारोह का कार्यक्रम भव्य रूप से सपन्न हुआ। मिलन समारोह कार्यक्रम में लोजपा(रा) अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मो सलीम शाहिल की उपस्थिति में कई दलों के नेताओं ने आज लोजपा(रा) में शामिल हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता मो नियाज आलम उप मुखिया एवं संचालन मिन्हाज आलम ने किया। मिलन समारोह को संबोधित करते हुए पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष विष्णु पासवान ने कहा कि आने वाले दिनों में बिहार में लोजपा(रा) की सरकार बनेगी एवं चिराग पासवान बिहार के मुख्यमंत्री होंगे। लोजपा(रा) में शमिल होने वाले नेताओं में नियाज आलम उप मुखिया, मिन्हाज आलम उप सरपंच, कमरान आलम, मो मोजिव आलम, मो मतिन आलम, मो सलीम, मो महताब, चन्दन कुमार यादव उप मुखिया, सचिन वर्मा, पूर्व सरपंच ललेश्र यादव पूर्व पंचायत समिति प्रमुख है। कार्यक्रम में पार्टी के लेबर सेल के जिलाध्यक्ष सत्येन्द्र पासवान, सुनिल पासवान, गुड़िया देवी आदि नेताओं ने भाग लिया। उक्त आशय की जानकारी लोजपा (रा) के प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन पासवान ने दी।

पहलवानों के समर्थन में संयुक्त किसान मोर्चा ने निकाला प्रतिरोध मार्च

पटना। धरना पर बैठी देश की बेटियों का हौसला बढ़ाने तथा बृजभूषण शरण सिंह को गिरफ्तार करने तथा उसका नार्को टेस्ट कर उसे संसद की सदस्यता से बर्खास्त करने की मांग को लेकर रविवार को पटना में संयुक्त किसान मोर्चा और बिहार एटक की ओर से अदालत गंज स्थित केदार भवन से एक प्रतिरोध मार्च निकाला गया। जो जीपीओ गोलंबर, पटना जंक्शन होते हुए, बुद्ध स्मृति पार्क पहुंचा। इस मौके पर मोर्चा ने के प्रतिनिधियों ने कहा कि ओलंपिक एवं राष्ट्रमंडल खेलों में कई पदक दिला चुके, देश के कई नामी पहलवान पिछले तीन माह तक केंद्र सरकार से न्याय की गुहार लगाते-लगाते थक हार कर, विगत 23 अप्रैल से दिल्ली के जंतर-मंतर पर भीषण वर्षा एवं हीटवेव के बीच भयानक लू का सामना करते हुए, खुले आसमान के नीचे धरना पर बैठी है। परंतु केंद्र सरकार ने बदले मे उनका पानी और बिजली भी बंद कर दिया। केंद्र की अंधी, बहरी, गूंगी एवं जुमलेबाज सरकार के कान पर अभी तक जू नहीं रेंग रही है। खिलाड़ियों के समर्थन में सभी तरह के खिलाड़ी, फिल्मी कलाकार, कवि, लेखक, पत्रकार, वकील, डॉक्टर, विभिन्न राजनीतिक दलो के नेता एवं कार्यकर्ता और विभिन्न किसान संगठनों के नेता विभिन्न खापो के नेता जंतर-मंतर पर जाकर धरना पर बैठी सातों खिलाड़ियों का हौसला बढ़ा रहे है। जबकि बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ का नारा देने वाले, नकली राष्ट्रवादी और सबका साथ, सबका विकास का खोखला नारा लगाने वाले पार्टी भाजपा खामोश है। जब हमारे खिलाड़ी दुनिया भर के खिलाड़ियों से देश के लिए मेडल जीत कर लायी थी, तो पीएम मोदी बगल में खड़ा होकर फोटो खिंचवाया और कहा कि यह हमारी बेटी है, देश की बेटी है। सुप्रीम कोर्ट के हस्तक्षेप के बाद किसी तरह उनका मुकदमा दर्ज हुआ। जबकि भाजपा और केंद्र सरकार जी जान से अपने सासंद को बचाने में लगी है। जस तरह से किसान आंदोलन के खिलाफ अफवाह फैलायी गई थी। पुनः भाजपा सरकार द्वारा धरना पर बैठी देश की बेटी के खिलाफ झूठी अफवाह फैलाने का प्रयास कर रही है। इस सभा की अध्यक्षता रामाधार सिंह ने की। सभा को किसान नेता अशोक प्रसाद सिंह, रविंद्र नाथ राय, अमेरिका महतो, मणिलाल, बी वी सिंह, गोपाल कुमार सिंह, बिहार एटक के नेता अजय कुमार सिंह, डी पी यादव, हरदेव ठाकुर एवं वशिष्ट सिंह ने संबोधित किया। इस अवसर पर यौन उत्पीड़क बृजभूषण शरण सिंह का पुतला को मुखाग्नि एटक नेता गजनफर नवाब एवं किसान नेता भरत कुमार सिंह ने दी।

दक्षिण भारत का दरवाजा भाजपा के लिए बंद : भाकपा माले

पटना। भाकपा माले ने कर्नाटक चुनाव में भाजपा की हार पर पर तंज कसार है। भाकपा माले ने बयान जारी कर कहा है कि इस जीत ने आगामी 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के पतन का रास्ता खोल दिया है। कर्नाटक के आवाम का जनादेश भाजपा सरकार के अभूतपूर्व भ्रष्टाचार, बढ़ती कीमतों व जीने का खर्च, चरमराते बुनियादी ढांचे, किसान और मजदूर विरोधी कानूनों, आसमान छूती बेरोजगारी, राज्य की अपंग होती अर्थव्यवस्था, महिलाओं व उनकी स्वायत्तता के खिलाफ हिंसा, बढ़ते जातिगत अत्याचार, सांप्रदायिक वैमनस्य, मजहबी नफरत और कट्टरता के खिलाफ उनकी आवाज है। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की तैनाती कर राज्य भर में बड़े पैमाने पर रोड शो और जनसभाएं करने के बावजूद भाजपा को मिली करारी हार इस बात का संकेत है कि ब्रांड मोदी अभेद्य नहीं है। हेट स्पीच, आदर्श आचार चुनाव संहिता , चुनाव प्रचार की समयसीमा के उल्लंघन के मामलों में अप्रभावी चुनाव आयोग द्वारा करवाई न करना राज्य की लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की अनदेखी करना है। इस चुनाव में मौजूदा भाजपा सरकार के कई मंत्रियों को हार का सामना करना पड़ा। बयान में कहा गया है कि भाकपा माले कर्नाटक के लोगों को भाजपा हराओ, कर्नाटक बचाओ के नारे का साथ देने और दो निर्वाचन क्षेत्रों में वोट देने के लिए शुक्रिया अदा करती है। भाकपा माले बहुत्व कर्नाटक, एड्डेलु कर्नाटक और अन्य नागरिक समाज संगठनों और व्यक्तियों को भी सलाम पेश करती है, जिन्होंने पिछले कुछ महीनों के दौरान अथक रूप से काम किया है और खासतौर से सेक्टर आधारित रिपोर्ट कार्ड के जरिये भाजपा की जनविरोधी नीतियों को उजागर किया है, जिससे उनकी पराजय हुई है। आने वाले महीनों में छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, मिजोरम, राजस्थान और तेलंगाना में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं और हम यह उम्मीद करते हैं कि वहां की जनता भी भाजपा की जनविरोधी और नफरत की राजनीति को खारिज करते हुए इसी तरह का जनादेश देकर लोकतंत्र और भारतीय संविधान की हिफाजत करेगी।

दृष्टि बाधित बच्चियों के साथ मनाया मदर्स डे, बांटी खुशियां

मां है हम बच्चों का संसार, वही है जीवन का आधार

पटना।आधार फाउंडेशन और जैन संघ ने मदर्स डे अंतरज्योति बालिका विद्यालय की दृष्टि बाधित बच्चियों संग मनाया। मौके पर आधार फाउंडेशन की डॉ. गीता जैन, पुष्पा जैन और जैन संघ के महासचिव मुकेश जैन, उपाध्यक्ष सुबोध जैन, नितिन जैन एवं मनोज सिपानी ने बच्चियों के साथ खुशियां बांटी। मौके पर सभी बच्चियों को नाश्ता और शीतल पेय पदार्थ दिया गया। डॉ. गीता जैन ने बच्चियों को मदर्स डे और मां का महत्त्व बताया। बच्चियों ने सामूहिक रूप से भोजपुरी में मां के महत्व पर गाना गाया। माई संग बीतल बचपन याद सतावेला...। अंतरज्योति विद्यालय के संरक्षक पद्मश्री डॉ. आरएन सिंह ने बच्चियों को मातृ दिवस की शुभकामनाएं दी। डॉ. सिंह ने बताया कि जो भी दृष्टिबाधित से शादी करेंगे, उनको शादी के लिए परिसर निःशुल्क दिया जाएगा तथा 50 लोगों का खाना भी दिया जाएगा। मौके पर बच्चियों के बीच मदर्स डे पर स्लोगन प्रतियोगिता हुई। इसमें अंजु, अन्नु कुमारी, पुष्पा, अनिता, लवली, किरण, तनीषा समेत दर्जनों बच्चियों ने भाग लिया। प्रथम पुरस्कार अंजु को स्लोगन मां है हम बच्चों का संसार, वही है जीवन का आधार पर दिया गया। द्वितीय पुरस्कार लवली को बिना बोले जो सब कुछ समझ जाती है, वह मां कहलाती है पर मिला। वहीं तृतीय पुरस्कार किरण को स्लोगन बिना मतलब के प्यार इस धरती पर केवल मां ही करती है पर दिया गया। आधार फाउंडेशन की पुष्पा जैन ने कहा कि बच्चियों के खिले, मुस्कुराते चेहरे देखकर मातृ दिवस का यह कार्यक्रम काफी सफल रहा।

पूर्व मध्य रेल

खुली ई-निविदा सूचना

सूचना सं.:– 02सोनपुर 2023-24

मंडल रेल प्रबन्धक (इंजी.)/सोनपुर भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य के लिए 'खुली ई–निविदा आमंत्रित करते हैं। ई–निविदा की अंतिम तिथि 02.06.2023 को 13:00 बजे तक निर्धारित है।ई–निविदा संबंधी एवं निविदा प्रपत्र का अवलोकन वेबसाइट www.ireps.gov.in पर किया जा सकता है।

1. कार्य का नाम मद सं. सहित: गोल्डिनगंज एवं छपरा ग्रामीण के बीच समपार सं. 36, 37 एवं 38 पर एलएचएस के जलनिकासी में सुधार हेतु नाले की ढकाई एवं सम्प का प्रावधान। **अनुमानित लागत (रू.में):** 90,23,421.91/- **अग्रधनराशि (रू. में):** 1,80,500.00

2. कार्य का नाम मद सं. सहित: समइ/प./बरौनी के अधीन बरौनी (छोड़) – बछवारा (मिला) अनुभाग की रेल भूमि पर 36 माह की अवधि के लिए जलनियंत्रण एवं मतस्य पालन का अधिकार (अवधि 01.04.2023 से 31.03.2026 तक), **अनुमानित लागत (रू. में):** 3,57,511/-, **अग्रधनराशि (रू. में):** 35,800.00

3. कार्य का नाम मद सं. सहित: समइ/थानाबिहपुर के अधीन थानाबिहपुर में पुल सं0 10 के पास किमी. 70/20 से 42/01 तक की रेल भूमि पर 36 माह की अवधि के लिए जलनियंत्रण एवं मतस्य पालन का अधिकार (अवधि 01.04.2023 से 31.03.2026 तक) **अनुमानित लागत (रू. में):** 01,09,97,623/-, **अग्रधनराशि (रू. में):** 10,99,800.00

4. कार्य का नाम मद सं. सहित: समइ/थानाबिहपुर के अधीन अवधि 01.04.2023 से 31.03.2026 तक अर्थात 36 माह के लिए कुरसेला में पानी टंकी के दक्षिण 719 वर्गफीट परिक्षेत्र रेलवे भूमि पर तहबजारी का अधिकार। **अनुमानित लागत (रू. में):** 06,56,025/- **अग्रधनराशि (रू. में):** 65,700.00

5. कार्य का नाम मद सं. सहित: समइ/लाइन/सोनपुर के अधीन दिघवारा (छोड़) – नयागाँव (मिला) के बीच की रेल भूमि पर 36 माह की अवधि के लिए जलनियंत्रण एवं मतस्य पालन का अधिकार (अवधि 01.04.2023 से 31.03.2026 तक), **अनुमानित लागत (रू. में):** 9,11,326/-, **अग्रधनराशि (रू. में):** 91,200.00

6. कार्य का नाम मद सं. सहित: समइ/लाइन/सोनपुर के अधीन बड़ागोपाल (छोड़) – दिघवारा (मिला) के बीच की रेल भूमि पर 36 माह की अवधि के लिए जलनियंत्रण एवं मतस्य पालन का अधिकार (अवधि 01.04.2023 से 31.03.2026 तक), **अनुमानित लागत (रू. में):** 4,20,890/-, **अग्रधनराशि (रू. में):** 42,100.00

7. कार्य का नाम मद सं. सहित: समइ/लाइन/सोनपुर के अधीन बड़ागोपाल (मिला) – छपरा ग्रामीण (छोड़) के बीच की रेल भूमि पर 36 माह की अवधि के लिए जलनियंत्रण एवं मतस्य पालन का अधिकार (अवधि 01.04.2023 से 31.03.2026 तक), **अनुमानित लागत (रू. में):** 2,59,716/-, **अग्रधनराशि (रू. में):** 26,000.00

8. कार्य का नाम मद सं. सहित: समइ/पू0/बरौनी के अधीनउमेशनगर–मानसी अनुभाग के मध्य कि.मी.–128/7 से कि.मी. 116/0 तक की रेलभूमि पर 36 माह की अवधि के लिए जलनियंत्रण एवं मतस्य पालन का अधिकार (अवधि 01.04.2023 से 31.03.2026 तक) **अनुमानित लागत (रू. में):** 11,02,815/-, **अग्रधनराशि (रू.में):** 1,10,300.00

उपरोक्त निविदा सूचना वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है। निविदा संबंधी रेल का अधिकार–किसी भी निविदा को स्थगित करने/निरस्त करने अथवानिविदा में सुधार करने हेतु रेलवे का अधिकार सुरक्षित रहेगा।निविदा दाता का इसमे कोई दावामान्य नही होगा।

मंडल रेल प्रबन्धक (इंजी.)/ पूर्व मध्य रेल, सोनपुर

पीआर/00310/एसईई/ईएनजीजी/टी/23–24/80

बाबा के करीब से दर्शन के लिए घंटों धूप में बेसब्री से इंतजार करती रही महिलाएं

बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री की दूसरे दिन की कथा में श्रद्धालुओं का उमड़ा सैलाब

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना में बाबा बागेश्वर का दूसरा दिन है। रविवार को दूसरे दिन अहले सुबह से ही नौबतपुर स्थित तरेत पाली मठ में आचार्य धीरेंद्र शास्त्री की कथा सुनने के लिए श्रद्धालुओं की उमड़नी शुरू हो गई।। देखते ही देखते जनसैलाब उमड़ पड़ा। तरेत गांव बागेश्वर धाम वाले बाबा की भक्ति के सैलाब में पूरी तरह डूब चुका है। भव्य दरबार के दूसरे दिन बाबा के सभा स्थल पर सुबह से ही दूर दराज और दूसरे राज्यों से आने वाले श्रद्धालुओं से पूरा गांव पट गया है। बागेश्वर धाम वाले बाबा के लोगों के आस्था और श्रद्धा का ऐसा सैलाब की कथा स्थल से लगभग 3 किलोमीटर दूर तक पैर रखने की जगह भी नहीं। हनुमंत कथा वाचन से पहले पूरा पंडाल श्रद्धालुओं की भीड़ से भर गया है। बनारस, लखनऊ, मथुरा, वृंदावन, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखंड, बंगाल, नेपाल समेत कई दूर-दराज के इलाकों से श्रद्धालु पहुंचे हैं। इधर, होटल पनाश से निकलकर बाबा सीधे तरैत पाली मठ पहुंचे। बाबा के पहुंचते ही करीब 10 मिनट तक महिलाओं और पुरुषों ने जय श्री राम और जय हनुमान के जयकारे लगाए। बाबा ने दोनों हाथ को जोड़कर समर्थकों को प्रणाम किया। उन्होंने हाथ उठाकर सभी का अभिनंदन किया। बाबा ने कहा कि कल दिव्य दरबार है। दस किलोमीटर में लोग फंसे हैं, इसलिए कल किसी को मत लेकर आइएगा। टीवी पर ही कथा सुनिए। करीब 4 लाख भक्त कथा सुनने तरेत पाली गांव पहुंचे हैं। भीड़ इतनी है कि अंदर जाने के लिए लोगों ने पुलिसकर्मियों से धक्कामुक्की की। कथा के शुरूआत में धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि कइसन बा, दो कि ही गर्मी है, पैसे की गर्मी और मौसम की गर्मी। मौसम की गर्मी तो ठीक हो जाएगी। भारत के दो ही गौरव हैं, एक वृंदावन के बांकेबिहारी और दूसरा यहां के बिहारी। कल 15 मई को तरेत पाली मठ में हनुमंत कथा के तीसरे दिन दोपहर 12 से 3 बजे धीरेंद्र शास्त्री का दिव्य दरबार लगेगा। आयोजकों के मुताबिक दिव्य दरबार में ब

संक्षिप्त खबरें

मारपीट की घटना में दो लोग गंभीर रूप से घायल

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के खरसंड पंचवटी चौक के समीप शनिवार की देर शाम दो दिन पूर्व बच्चों के बीच हुए विवाद को लेकर उसके अभिभावकों में विवाद हो गया। जिसके कारण एक पक्ष के लोगों ने पंचवटी चौक पर पहुंचकर दूसरे पक्ष के छोटू साह के चाय-नाश्ते की दुकान का सामान यत्र-तत्र फेंकने लगा। जिससे दोनों पक्ष के लोग आमने-सामने हो गए। वहीं दोनों पक्षों में जमकर मारपीट की घटना हुई। जिसमें दोनों पक्षों के दो लोग गंभीर रूप से जख्मी हो गए। जख्मी में खरसंड गांव के मो० इमदाद एवं दूसरे पक्ष के नथुनी राय गंभीर रूप से जख्मी हो गए। जिनका उपचार स्थानीय किसी निजी क्लीनिक में किया गया। इस मामले को ले स्थानीय पूर्व मुखिया रविशंकर सिंह ने कहा कि मामले को शांत कर लिया गया है। सामाजिक स्तर पर मामले का निपटारा करने का प्रयास किया जा रहा है। वहीं थानाध्यक्ष गौतम कुमार ने इस घटना की जानकारी से इनकार किया है।

गहरे पानी में डूबने से बच्चे की मौत, परिवार में मातम

खानपुर प्रखंड अंतर्गत खतुआहा गांव के वार्ड 13 में तालाब में डूबने से एक बालक की मौत हो गई। अहले सुबह एक किशोर गांव स्थित तालाब में स्नान करने चला गया जहां स्नान करने के दौरान उसका पैर फिसल गया और गहरे पानी में चला गया जहां उसकी मौत डूबने से हो गई। मृतक की पहचान खतूआहा गांव के वार्ड संख्या 13 निवासी फूलो पासवान का 14 वर्षीय पुत्र रंजीत कुमार पासवान के तौर पर हुई है। किसी ने इस घटना की जानकारी खानपुर थाना को दी, जानकारी मिलते ही थानाध्यक्ष विपिन कुमार के नेतृत्व में एएसआई मो० एहसान फारूकी घटना स्थल पर पहुंच जांच में जुटे गए। स्थानीय मुखिया गोविंद पासवान मौके पर पहुंचे और किशोर के लाश को ग्रामीणों के सहयोग से तालाब से बाहर निकलवाया। मुखिया ने बताया की किशोर पांचवें वर्ग का छात्र था। बहरहाल खानपुर पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेजने की तैयारी में लग गये हैं। खानपुर प्रखंड प्रमुख सन्नी हजारी ने इस घटना को लेकर गहरा दुःख व्यक्त किया है, तथा उन्होंने कहा है की मृतक के परिजन को तहत 20 हजार रूपए देने की बात कही है। वहीं किशोर के मौत होने पर परिजन सहित खतुआहा गांव में कोहराम मच गया है।

मक्के के खेत से शव बरामद

कल्याणपुर थाना क्षेत्र के धर्मपुर गांव के पोखर के पास मक्के के खेत से बरामद शव मामले में दो लोगों को पुलिस ने हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही हैं। दोनों युवक चकमेहसी थाना क्षेत्र के हजपुरवा गांव के बताए गए हैं। मामले में बरामद युवक का शव को दो दिनों तक पहचान भी नहीं हो पाई थी। जबकि शब बरामद स्थल से मृतक के घर की दूरी बहुत पास थी। जिसको लेकर लोग सवाल खड़ा कर रहे थे। बता दे, कि बरामद शव का चेहरा बुरी तरह झुलसा दिया गया था। ताकि पहचान नहीं हो सके। मृतक की पहचान चकमेहसी थाना क्षेत्र के हजपुरवा गांव निवासी सतनारायण महतो के 26 वर्षीय पुत्र चंदन कुमार के रूप में हुई। मामले में मृतक के परिजनों का बताना है, कि वह 27 अप्रैल से ही घर से गायब था। जिसकी खोज परिजन कर रहे थे। जिसके बाद पुलिस ने पूरे मामले की जांच में पुनः नए सिरे से जुट गई। मामले में हत्या के दो संदिगधो को पुलिस ने गिरफ्तार भी किया है। बिट्टू दास बबलू दास के गिरफ्तार करने की बात कही गई है। इस मामले में थानाध्यक्ष गौतम कुमार ने पूरे मामले से अनभिज्ञता जाहिर करते हुए, कुछ भी बताने से इनकार किया है।

सांसद से की जर्जर विद्यालय के भवन निर्माण की मांग

शिवाजीनगर प्रखंड के राधा कान्त राजकीय बुनियादी विद्यालय बल्लीपुर (बंधार) की हैं। यहां प्रथम कक्षा से लेकर 8 कक्षा तक के बच्चे पढ़ाई करते हैं। परंतु दुर्भाग्य हैं की इस विद्यालय का जर्जर भवन हर वक्त मौत को न्योता दे रहा है। इस विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों की जिंदगी खतरे में है। विद्यालय में 400 के करीब नौनिहाल अपने जीवन को संवारने के लिए शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं। बताते चलें कि इस विद्यालय में सात शिक्षक और दो शिक्षिका व पांच रसोइया हैं। विद्यालय का खंडहर भवन इतना जर्जर है कि ईंट टूट कर गिरते रहता हैं। इसी डर के बीच बच्चे विद्यालय में पढ़ने को मजबूर है। इसका डर विद्यालय के शिक्षकों बच्चों के अभिभावकों को सता रहा है। बेकार पड़े जर्जर भवन को तंदुरूस्त करने की मांग को लेकर बंधार पंचायत की मुखिया चंदन कुमारी, मुखिया प्रतिनिधि बैजनाथ कुमार गुड्डू, एवं पूर्व विधायक विश्वनाथ पासवान ने समस्तीपुर सांसद प्रिंस पासवान से मिलकर विद्यालय के निर्माण करवाने की मांग की है। मुखिया ने कहा कि बंधार गांव स्थित बुनियादी विद्यालय भवन निर्माण को लेकर सांसद ने दिया आश्वासन। मुखिया ने कहा तीन से चार छतदार कमरा बन जाने से यहां पढ़ने वाले बच्चे हो को काफी सहूलियत होगी।

डीएम ने दिया विभागों में मृत्यु संबंधी लंबित मामलों का जल्द भुगतान करने का निर्देश

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

जिला पदाधिकारी योगेंद्र सिंह के द्वारा विभिन्न विभागों में मृत्यु में मुआवजा भुगतान से संबंधित लंबित मामलों की समीक्षा शनिवार की देर शाम की गई। स्वास्थ्य विभाग में आशा कार्यकताओं के मृत्यु के संबंधित 51 मामलों में से 30 का भुगतान हो चुका है। 12 भुगतान के मामले प्रक्रियाधीन है। जिला पदाधिकारी के द्वारा इन 12 मामलों का भुगतान अविलंब करने का निर्देश सिविल सर्जन को दिया गया। आपदा प्रबंधन विभाग में विभिन्न आपदाओं से मृत्यु में भुगतान के 60 मामलों में से 49 का भुगतान किया जा चुका है। वहीं अग्नि कांडों में मृत्यु के 11 मामलों में से 5 का भुगतान किया जा चुका है। जिला कार्यक्रम पदाधिकारी आईसीडीएस के यहां सेविका सहायिका के मृत्यु में मुआवजे हेतु कुल मामलों की संख्या 45 है। 41 स्वीकृत मामलों में से 14 मामले में भुगतान किया जा चुका है 4 मामले त्रुटि निवारण के लिए संबंधित बाल विकास परियोजना पदाधिकारी को भेजा जा चुका है। विधि व्यवस्था, भूमि विवाद, खनन, मद्य निषेध, कब्रिस्तान घेराबंदी, धार्मिक न्यास परिषद्, अभियोजन की बैठक जिला पदाधिकारी योगेंद्र सिंह एवम् पुलिस अधीक्षक विनय कुमार तिवारी के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। जिला पदाधिकारी के द्वारा जिले में स्थित हसनपुर के मोहिउद्दीन कब्रिस्तान, ताजपुर का कोठिया कब्रिस्तान, मोहिउद्दीनगर का सेखटोली कब्रिस्तान एवम् उजियारपुर का परोड़िया कब्रिस्तान की जांच संबंधित अनुमंडल पदाधिकारी व अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी को संयुक्त रूप से करने का निर्देश दिया गया। बताते चले कि अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के द्वारा जिले में 48 कब्रिस्तानों की घेराबंदी का कार्य किया जा रहा है। कार्यपालक अभियंता एलईओ 1 व 2 अविलंब इस पूर्ण कराने का निर्देश दिया गया। प्रभारी पदाधिकारी खनन के द्वारा बताया गया कि जिले के बूढ़ी गंडक के 2 बालु घाटो, जीतबारपुर समस्तीपुर व रोसड़ा में खनन हेतु बंदोबस्ती की कारवाई की जा रही है। इसमें निविदा की प्रक्रिया पूर्ण की जा चुकी है। जिला पदाधिकारी के द्वारा अवैध बालू खनन पर छापामारी कर रोकने का निर्देश दिया गया। समीक्षा के दौरान बताया गया कि उत्पाद व मद्य निषेध विभाग के द्वारा पटोरी व रोसड़ा में नए मद्य निषेध थाने खोले जाने हैं। इसको लेकर जिले में 3 मद्य निषेध थाने हो जायेंगे समस्तीपुर सदर, पटोरी व रोसड़ा। जिला पंचायती राज पदाधिकारी के द्वारा पटोरी में मद्य निषेध थाना खोलने हेतु अनुमंडल अस्पताल के पीछे स्थित पंचायत सरकार भवन में स्वीकृति दी गई है। रोसड़ा में अनुमंडलीय अस्पताल के पीछे जिला पशुपालन विभाग के खाली भवन में थाना खोलने के लिए अनुमंडल पदाधिकारी द्वारा चिन्हित किया गया है। उत्पाद अधीक्षक के द्वारा बताया गया कि जिले में 1021 व्यक्तियों को नीरा का लाइसेंस दिए गया है। डीपीएम जीविका के द्वारा बताया गया कि नीरा उत्पादन में बिहार में जिले का चौथा स्थान है। जिला पदाधिकारी द्वारा इसमें और सुधार की बात कही गई। पुलिस अधीक्षक विनय कुमार तिवारी द्वारा अभियोजन की बैठक में स्पीडी ट्रायल, गवाही के साथ ही सभी लोक अभियोजकों को सरकार का पक्ष गंभीरतापूर्वक न्यायालय में रखने का निर्देश दिया गया।

सिपाही भर्ती की परीक्षा को लेकर बनाए गए थे 17 केंद्र, शांतिपूर्ण व कदाचार मुक्त हुई संपन्न

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर जिला मुख्यालय के 17 केंद्रों पर रविवार को केंद्रीय चयन पर्षद सिपाही भर्ती के तहत मद्य निषेध सिपाही के पद पर चयन के लिए लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया। जहां एक पाली में 10-12 बजे लिखित परीक्षा ली गई। बताया गया कि सभी केंद्रों पर कदाचारमुक्त व शांतिपूर्ण परीक्षा कराई गई। इसके बारे में डीईओ मदन राय ने बताया कि सिपाही भर्ती की परीक्षा जिला मुख्यालय के 17 केंद्रों ओर ली गई। इसमें 80 फीसदी से अधिक परीक्षार्थियों ने भाग लिया। इसको लेकर बीआरबी कॉलेज मोहनपुर, आरएनएआर कॉलेज, तिरहुत अकादमी काशीपुर, होली मिशन मोहनपुर, श्रीकृष्ण उवि जितवारपुर, विधि महाविद्यालय काशीपुर, सीपीएस, एसएस उवि मुक्तापुर, गर्ल्स हाई स्कूल काशीपुर, रेलवे गोल्फ फिल्ड, कपूरीग्राम इंटर स्कूल, मोडेल इंटर स्कूल बहादुरपुर, गर्ल्स हाई स्कूल घोषलेन, राजकीय कन्या विद्यालय कचहरी, उउमावि शंभूपट्टी, उमावि मोहनपुर व अल्फा मध्य विद्यालय विरसिंहपुर एलौथ में परीक्षा केंद्र बनाया गया था। सभी केंद्रों पर कड़ी सुरक्षा के बीच परीक्षार्थियों को अंदर जाने दिया गया। केंद्रों पर 9 बजे तक परीक्षार्थियों को केंद्र के अंदर प्रवेश दिया गया। वहीं सुरक्षा बलों के साथ दंडाधिकारी की प्रतिनियुक्ति के बीच परीक्षा कड़ी सुरक्षा में ली गई। वहीं एसडीओ दीपक कुमार ने बताया कि सभी केंद्रों पर परीक्षा शांतिपूर्ण रही। एसडीओ ने कई केंद्रों का जायजा लिया।

सऊदी अरब में आयोजित बिहार अंजुमन के सातवें वार्षिक सम्मेलन का समस्तीपुर विधायक ने किया उद्घाटन

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

सऊदी अरब में रहने वाले बिहार के लोगों का संगठन बिहार अंजुमन का सातवां वार्षिक सम्मेलन राजधानी रियाद में आयोजित किया गया। जिसमें सऊदी अरब में रहने वाले बिहार के एक हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया तथा विभिन्न मुद्दों पर चर्चा किया। बिहार अंजुमन के अध्यक्ष डॉक्ट्र अब्दुल फराह ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि बिहार अंजुमन का मकसद सऊदी अरब में रहने वाले बिहार वासियों को एकजुट रखना एवं गरीब व जरुरतमंदों के कल्याण व उत्थान के लिए कार्य करना है। समारोह के मुख्य अतिथि व बिहार विधानसभा के उप मुख्य सचेतक अख्तरुल इस्लाम शाहीन ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने बिहार अंजुमन के कार्यों की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा कि बिहार अंजुमन का कार्य सराहनीय, स्वागतयोग्य तथा अनुकरणीय है। बिहार अंजुमन बाल कल्याण, श्रम कल्याण, भिक्षुक कल्याण, महिला कल्याण, वृद्धावस्था कल्याण, छात्र कल्याण, अल्पसंख्यक कल्याण, रोगियों का कल्याण, विकलांग व्यक्तियों का कल्याण तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों का कल्याण का कार्य लगातार कर रही है। मानव होने के नाते जब तक हम एक-दूसरे के दुःख-दर्द में साथ नहीं निभाएंगे तब तक इस जीवन की सार्थकता सिद्ध नहीं होगी। वैसे तो हमारा परिवार भी समाज की ही एक इकाई है, किन्तु इतने तक ही सीमित रहने से सामाजिकता का उद्देश्य पूरा नहीं होता। हमारे जीवन का अर्थ तभी पूरा होगा जब हम समाज को ही परिवार माने। वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को हम जितना अधिक से अधिक विस्तार देंगे, उतनी ही समाज में सुख-शांति और समृद्धि फैलेगी। मानव होने के नाते एक-दूसरे के काम आना भी हमारा प्रथम कर्तव्य है। हमें अपने सुख के साथ-साथ दुसरे के सुख का भी ध्यान रखना चाहिए। अगर हम सहनशीलता, संयम, धैर्य, सहानुभूति, और प्रेम को आत्मसात करना चाहें तो इसके लिए हमें संकीर्ण मनोवृत्तियों को छोड़ना होगा। धन, संपत्ति और वैभव का सदुपयोग तभी है जब उसके साथ-साथ दूसरे भी इसका लाभ उठा सकें। जब तक सेवाभाव को जीवन में पर्याप्त स्थान नहीं दिया जाएगा तब तक आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकता। भारतीय संस्कृति में सदैव मानव कल्याण पर जोर दिया गया है। परोपकार की भावना ही सबसे बड़ी मनुष्यता है। संसार का हर धर्म दया और परोपकार को सर्वोच्च मानता है। प्रकृति भी हमें दूसरों की भलाई की शिक्षा देती है तथा नेक कार्य करने वाले को दुनिया सदैव याद करती है। बिहार अंजुमन मानवता, सेवा भाव, समरसता तथा जन कल्याण की पर्याय है।

पुलिस की छापेमारी में बदमाश गिरफ्तार, देसी कट्टा और भारी मात्रा में कारतूस बरामद

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर। समस्तीपुर जिले के मोहनपुर ओपी पुलिस के द्वारा रविवार को छापेमारी कर एक बदमाश को गिरफ्तार किया। पुलिस ने उसके पास से एक देसी कट्टा और आठ एमएम के 29 एवं 12 बोर का 10 जिंदा कारतूस बरामद किया। जानकारी देते हुए ओपी अध्यक्ष नंदकिशोर ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी दल ने डुमरी दक्षिणी पंचायत के स्वर्गीय रामलगन राय के पुत्र शिवबालक राय को उसके घर से ही गिरफ्तार किया है। जिसे पुलिस के द्वारा न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। छापेमारी में एसआई विशद विश्वास व रंजीत कुमार शर्मा, एएसआई अरूण कुमार सिंह व ब्रज किशोर सिंह, पीएसआई संजीत कुमार शामिल थे।

बोर्ड में 90 प्रतिशत अंक लगाकर बढ़ाया माता-पिता का मान, सीए बनने की चाहत

प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखंड के सिंघिया बुजुर्ग दक्षिण पंचायत के रहने वाला अनुकल्प रंजन ने सीबीएसई बोर्ड की दसवीं परीक्षा में 90 प्रतिशत अंक लाकर अपने परिवार समाज एवं गांव के नाम को रौशन किया है। वे तमिलनाडु के माउंट फोर्ट स्कूल में रहकर पढ़ाई कर रहा था। आगे सी ए बनना चाहता है। इस सफलता से उनके परिवार में काफी खुशी का वातावरण बना हुआ है। पिता ज्ञानेश कुमार रंजन व्यवसाई हैं मां कुमारी सुमा कौशल, बहन आनती रंजन ने खुशी जाहिर करते हुए सफलता के लिए बधाई दी।

मध्याह्न भोजन रसोइया के प्रति सौतेला व्यवहार का आरोप

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। सरकार मध्याह्न भोजन रसोइयों के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है।, पटना उच्च न्यायालय के आदेश की भी अवहेलना की जा रही है। उक्त बातें गायघाट प्रखंड परिसर में राष्ट्रीय मध्याह्न भोजन रसोईया फ्रंट की बैठक में फ्रंट के जिलाध्यक्ष अजोधी देवलाल ने कही। उन्होनें कहा कि सरकार बार -बार रसोइयों को ठगने का काम कर रही है। मानदेय की बढोतरी करने की घोषणा करने के बावजूद मानदेय बढ़ा कर नहीं दिया गया। जबकि पटना उच्च न्यायालय भी रसोइयों को प्रति माह न्यूनतम मजदूरी सात हजार रुपए देने के लिए सरकार को निर्देश दे चुकी है। उसके बावजूद बढ़ते महंगाई के दौर में ऊंट के मुख जीरा के सामान मानदेय दिया जा रहा है। इस मौके पर संगठन के महासचिव रामकृपाल ने कहा कि माननीय उच्च न्यायालय के आदेश का बिहार सरकार अवहेलना कर रही है। बताया कि तत्काल हाई कोर्ट का आदेश का पालन करते हुए रसोईया मजदूरों का मानदेय बढ़ाकर दिया जाए। अन्यथा पूरे बिहार के मध्याह्न भोजन रसोईया आंदोलन करने को मजबूर होंगे। इस मौके पर प्रफुल्ल कुमार, कांति देवी, रेहाना खातुन, जगदीश राम, नंद किशोर यादव, रेखा देवी, विमल देवी सावित्री देवी, प्रमिला देवी मीरा देवी शिवकुमारी देवी समेतकाफी संख्या मे रसोईया उपस्थित थे।

हथौड़ी थाना व शिवाजीनगर ओपी में चौकीदारों की परेड आयोजित

शिवाजीनगर, प्रात : किरण संवाददाता

शिवाजीनगर प्रखंड अंतर्गत हथौड़ी थाना एवं शिवाजीनगर ओपी परिसर में रविवार को क्षेत्र के चौकीदार की परेड करायी गई। जहां मौजूद अपर थाना अध्यक्ष रमेश कुमार एवं ओपी अध्यक्ष कमल राम ने क्षेत्र के चौकीदार को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि सभी लोग अपने-अपने क्षेत्र में शराब तस्करी और आपराधिक गतिविधियों पर नजर बनाए रखें कुछ संदेह होने पर थाना में जरूर सूचना दें। चौकीदारों को निर्देश दिया कि वे लोग अपने-अपने क्षेत्रों में लाल वारंटी, फरार वारंटी व अपराधियों को चिन्हित कारक बताएं। अपर थाना अध्यक्ष ने कहा कि चौकीदार जमीन से जुड़े लोग हैं।

उनकी सक्रियता से चोरी सहित अन्य आपराधिक घटनाओं पर लगाम लगाई जा सकती है। इस मौके पर हथौड़ी थाना परिसर में अपर थाना अध्यक्ष रमेश कुमार, ओपी परिसर में ओपी अध्यक्ष कमल राम, प्रशिक्षु एसआई राहुल कुमार, शबाना आजमी, चौकीदारी मनोज कुमार, रामजतन, अमृत प्रसाद, मिथिलेश पासवान, एवं क्षेत्र के सभी चौकीदार मौके पर उपस्थित थे।

कर्नाटक में कांग्रेस की जीत पर सभी धर्मों के लोगों ने दिया है योगदान : शीतलाम्बर झा

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी कांग्रेस कार्यालय में कर्नाटक विधानसभा चुनाव के मतगणना की रुझान एवं परिणाम पर सुबह से ही जिलाध्यक्ष प्रो शीतलाम्बर झा सहित सैकड़ों कार्यकताओं ने पल पल नजर बनाए हुए थे जैसे जैसे कांग्रेस बम्पर जीत की ओर बढ़ती गई कांग्रेस कार्यकताओं में उत्साह बढ़ता गया अंतिम परिणाम आते ही मिठाई खिलाकर एक दूसरे को बधाई देने लगे वहीं जोरदार आतिशबाजी एवं नारेबाजी करते रहे ।कर्नाटक की ऐतिहासिक जीत पर जिलाध्यक्ष प्रो झा ने कहा यह जीत कांग्रेस की नीतियां गरीबों एवं धर्मनिरपेक्षता की जीत हुई है मोहब्बत से नफरत को हराया गया यह मोदी का हार है ।प्रो झा ने कहा जिस तरह प्रधानमंत्री मोदी एवं अमित शाह अपने भाषण में धार्मिक उन्माद पैदा करना चाहा उसको कर्नाटक की महान जनताओं ने करारा जवाब दिया है और भारत की गंगा यमुनी संस्कृति को अक्षुण बनाए रखा इसके लिए वे बधाई के पात्र है कांग्रेस की जीत में सभी धर्मों के लोगों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है जो ऐतिहासिक है यहां से कांग्रेस को जीत की सुगंध लगी है और आने वाले आगामी विधानसभा चुनाव में भी कांग्रेस की परचम लहराने लगेगी और दो हजार चौबीस में राहुल गांधी के नेतृत्व में केंद्र में कांग्रेसनीत सरकार बनेगी कांग्रेस ने हमेशा से राष्ट्रीय हितों की रक्षा की है आज देश मे कमरतोड़ महंगाई बढ़ती बेरोजगारी एवं भ्रष्टाचार पर चोट की है और पूंजीपतियों को हराया है यह मूलतः मोदी जी की हार है उन्होंने अपने सम्पूर्ण चुनाव में धार्म को बदनाम करने का काम किया है उन्होंने प्रभु बजरंगबली को भी अपमानित करने का काम किया जिससे श्री हनुमानजी ने बीजेपी पर अपने गद्दा से जोरदार प्रहार कर औकात में ला दिये और बीजेपी और उनके नेताओं को भी संदेश दिया कि राजनीति में धर्म को शामिल करना बंद करने का भी संदेश है, कांग्रेस की जीत में कांग्रेस के सभी बड़े नेताओं ने राहुल गांधी मलिकार्जुन खड़गे सोनिया गांधी प्रियंका गांधी एवं अन्य नेताओं का कलेक्टिव प्रयास किया है ।कार्यक्रम में ज्योति झा मनोज कुमार मिश्रा डॉ राशिद फाकरी मो आकिल अंजुम गंगाधर पासवान प्रो इश्तिहाक अहमद सुनील झा सुजीत झा मो शाहिद हुसैन विजय कृष्ण झा राघव बाबा मुकेश कुमार झा पप्पू अशोक प्रसाद श्रीराम मंडल, आलोक कुमार झा,प्रफुल्ल चन्द्र झा, रामइकबाल पासवान, बालेश्वर पासवान मो अबुबकर मो शकील बिनय झा इंद्र नारायण झा अजय कुमार झा मुन्नी कुमार झा मो फैजी आर्यन दानिश इकबाल मुरलीधर झा आदि दर्जनों कार्यकताओं ने भाग लिया।

मजदूरी करने निकले अधेड़ की अज्ञात वाहन की ठोकर से मौत, परिजनों में मचा कोहराम

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर थाना क्षेत्र के महमदपुर सकड़ा में घर से मजदूरी करने निकले अधेड़ की घटोर चिमनी के निकट अज्ञात वाहन की ठोकर से मौत हो गई। मृतक की पहचान महमदपुर सकड़ा वार्ड दो निवासी स्वर्गीय शिवन यादव के 38 वर्षीय पुत्र मेघन यादव के रूप में किया गया। घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि मेघन यादव मजदूरी कर अपने परिवार का किसी तरह भरण पोषण करता था। हर दिन की भांति आज रविवार की सुबह 8:00 बजे साइकिल से मजदूरी करने निकले। जहां रास्ते में ही किसी अज्ञात वाहन ठोकर मारकर फरार हो गया। जहां मौके पर ही उनकी मौत हो गई। दो घंटे बाद गांव के ही घटोर चिमनी के निकट खजूर के पेड़ के नीचे वे मृत पड़ा था। वहीं घटना की सूचना मिलते ही पत्नी रेणु देवी सहित परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो रहा था। वहीं ग्रामीणों द्वारा इसकी सूचना विभूतिपुर थाना को दी गई। जिसके बाद पुलिस के कहने पर परिजन व ग्रामीण शव को टेम्पो से लेकर थाना पहुंची। जहां प्रारंभिक कागजी प्रकिया के बाद पुलिस शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल समस्तीपुर भेज दिया। बता दें कि मृतक के पांच पुत्री ही है। बड़ी पुत्री ममता कुमारी 14 वर्ष, कविता कुमारी 12 वर्ष, श्वेता कुमारी 10 वर्ष, सुजाता कुमारी आठ वर्ष, सुलेखा कुमारी छह वर्ष। पिता की साया पांचों पुत्री के ऊपर से उठ जाने से मानो परिवार के ऊपर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। परिवार का एक मात्र सहारा जिसे भी भगवान ने छीन लिया।

ड्यूटी से गायब रहने वाले सुरक्षा गार्ड पर की जाएगी कार्रवाई

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी खजौली सीएचसी के सभागार में रविवार को सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डा. जोतीन्द्र नारायण के अध्यक्षता में सीएचसी में इलाइट फालकोंन प्राइवेट लिमिटेड एनजीओ द्वारा कार्यरत पुरुष एव महिला सुरक्षा गार्ड के साथ बैठक किया गया. इस बैठक के दौरान उपस्थित सभी गार्ड को निर्देश दिया कि सीएचसी में सातों दिन सभी पुरुष,महिला सुरक्षा गार्ड अपने ड्यूटी के दौरान पोशाक में रहने का निर्देश दिया गया.उन्होंने सुरक्षा गार्ड सुपरवाईजर को निर्देश दिया कि सभी सुरक्षा गार्ड को रोस्टर के अनुसार डियूटी करवाने का निर्देश दिया गया. वही सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी ने उपस्थित सभी सुरक्षा गार्ड से कहा कि सीएचसी परिसर , ओपीडी भवन,प्रसाशनिक भवन एव मुख्य द्वार पर आम जनता एव मरीजों के अभिभावक द्वारा यंत्र तंत्र वाहन को खड़ा करके जाम लग जाती है.इस लेकर सभी वाहन को सीएचसी में पार्किंग में वाहन को लगाने की निर्देश दिया गया. उन्होंने कहा कि हास्पिटल में दवा काउंटर,मरीज पंजीयन स्थल,जांच घर ,आपातकालीन भवन में भीड़ की व्यवस्थित ढंग से बैठाकर सभी मरीजों को स्वास्थ सेवाएं मुहैया कराने का निर्देश दिया गया. इस मौके पर सीएचसी चिकित्सा पदाधिकारी डा. रवि चौधरी,फार्मासिष्ट उमेंद्र कुमार,एलटी मनोज कुमार मंडल,डाटा ऑपरेटर बबलू कुमार,सुरक्षा सुपरवाईजर कुमार शशि शौरव,गार्ड पवन कुमार राम,दीपक कुमार राम,मुकेश कुमार राम,राम भजन राम,संतोष कुमार पासवान,वीरेंद्र कुमार राम,विपिन कुमार पासवान, सरिता कुमारी,कुसुम कुमारी,विनिता कुमारी,वेवी कुमारी,बबिता कुमारी सहित सभी सुरक्षा गार्ड मौजूद थे।

मातृ दिवस के अवसर पर प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत शंकर चौक स्थित प्राथमिक उच्च विद्यालय बेलसंडी तारा के प्रांगण में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम बेलसंडी तारा के मुखिया प्रभात प्रसून की मां पूर्व जिप सदस्य सह पूर्व मुखिया किरण देवी पति स्वर्गीय राजेश राय की स्मृति में अंतरराष्ट्रीय मातृ दिवस पर आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में प्रखंड प्रमुख रूपांजलि कुमारी, जिप सदस्य रीना राय, मुखिया प्रभात प्रसून, उप मुखिया राजबली राय, कवि रामबालक सिंह बालक, सरपंच संघ के अध्यक्ष अरविंद कुशवाहा मौजूद थे। कार्यक्रम के माध्यम से विद्यालय के 100 से अधिक प्रतिभागी छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुखिया प्रभात प्रसून ने कहा कि सरकारी विद्यालयों में ऐसे कार्यक्रम के आयोजन से बच्चों के प्रतिभा में निखार आती है। वहीं उपस्थित अतिथियों ने कविता, शायरी एवं मातृ दिवस पर समां बांधा। मौके पर विद्यालय के सभी शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मी, छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

प्रखंड के 36 आवास के लाभुको पर होगी निलाम वाद दायर

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिला के खजौली प्रखंड कार्यालय प्रकोष्ट में बीडीओ मनीष कुमार ने रोजगार सेवक एवं आवास कर्मियों के साथ पीएम आवास योजना एवं मुख्यमंत्री आवास योजना की प्रगति की समीक्षा की। जिसमें पंचायत वार योजना के प्रगति की समीक्षा की. जिन पंचायत की प्रगति धीमा पाया उसे फटकार लगाते हुए काम में तेजी लाने का निदेश दिया. वहीं सभी पंचायत रोजगार सेवकों को निदेश देते हुए कहा कि पीएम आवास योजना के लाभुका का पारिश्रमिक भुगतान ससमय करने का निदेश दिये और किस-किस पंचायत में कितना भुगतान लंबित है उसकी अद्यतन जानकारी ली.प्रखंड के 36 आवास के लाभुकों पर नीलाम पत्र वाद करने का निदेश भी दिया गया।

संक्षिप्त खबरें

अलग-अलग जगहों पर हुए मारपीट में तीन जख्मी

गोपालगंज । जिले के उचकागांव थाना क्षेत्र के दो अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग मामले को लेकर हुए मारपीट में तीन लोग जख्मी हो गए। जिनका इलाज उचकागांव सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में कराया गया। थाना क्षेत्र के लुहसी गांव में गाली गलौज का विरोध करने पर हुए मारपीट मामले में गांव के शिव कुमारी देवी और उनकी बेटी सोनम कुमारी जख्मी हो गई। मामले में घायल शिवकुमारी देवी के आवेदन पर अपने पड़ोसी प्रदीप महतो, उसके भाई गुड्डू महतो, धर्मेंद्र सिंह और अमित सिंह के विरुद्ध प्राथमिकी कराई गई है। जबकि थाना क्षेत्र के दहीभाता गांव में आपसी विवाद को लेकर कुछ लोगों ने गांव के मजिस्टर महतो पर जानलेवा हमला कर जख्मी कर दिया। मामले में घायल मजिस्टर महतो के आवेदन पर अपने पट्टीदार रामाकांत महतो, उनके भाई पप्पू महतो, जयप्रकाश महतो और उनके पिता सुरेश महतो के विरुद्ध थाने में प्राथमिकी कराई गई है। पुलिस मामले में जांच कर रही है।

पति की मौत के बाद पत्नी से धोखे से लिखवा ली संपत्ति

गोपालगंज। जिले के भोरे थाना क्षेत्र के कावे गांव में कुछ लोगों ने एक महिला से उसके पति की मौत के बाद धोखे से उसकी पूरी संपत्ति अपने नाम करा ली। बाद में उसे प्रताड़ित कर घर से बाहर निकाल दिया। मामले को लेकर कोर्ट के आदेश पर स्थानीय थाने में चार लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। बता दें कावे निवासी छोटेलाल राम की पत्नी छठिया कुंवर ने आरोप लगाया है कि उसके पति की मौत वर्ष 2018 में हो गई थी। उसके बाद विधवा पेंशन बनवाने के नाम पर कावे गांव के ही जयप्रकाश राम, उनकी पत्नी रिंकू देवी विजयीपुर थाना क्षेत्र के हंकार पुर के सुरेंद्र राम और यूपी के कुकुरघांटी के राम बड़ाई राम ने विधवा पेंशन पास कराने के नाम पर उससे उसकी पूरी संपत्ति अपने नाम करा ली। बाद में उसे प्रताड़ित कर घर से बाहर निकाल दिया। मामले को लेकर पीड़िता के बयान पर प्राथमिकी दर्ज की गई है।

उचकागांव में शराब के नशे में दो गिरफ्तार

गोपालगंज । जिले के उचकागांव थाना क्षेत्र के दो अलग-अलग जगहों पर पुलिस ने सूचना के आधार पर छापेमारी कर शराब के नशे में हल्ला हंगामा करते दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपितों की पहचान थाना क्षेत्र के साथी गांव के बिजली बैठा और सिवान जिले के बड़हरिया थाना क्षेत्र के सोहावन हाता गांव के सोहन कुमार साह के रूप में की गई है। दोनों गिरफ्तार आरोपितों को पुलिस ने रविवार के दिन न्यायालय में प्रस्तुत किया प्रस्तुत किया।

स्काउट गाइड प्रशिक्षण से होता है बच्चों में शारीरिक और नैतिक विकास

मशरक। मशरक प्रखंड के ए० एन० शिक्षक संस्थान गंडामन में चल रहे प्रथम सोपान परीक्षण शिविर के पांचवे दिन ध्वजारोहण कार्यक्रम में विद्यालय के निदेशक सत्यप्रकाश मिश्रा ने प्रतिभागी स्काउट गाइड को संबोधित करते हुए कहा कि स्काउट गाइड प्रशिक्षण विकास के साथ अनुशासन की भावना को जागृत करता है। प्रत्येक विद्यालयों में बच्चों को स्काउट गाइड का प्रशिक्षण लेना चाहिए।

वही विद्यालय के प्राचार्य उज्जवल कुमार ने बताया कि स्काउट गाइड के छह दिवसीय शिविर में स्काउट गाइड को प्राथमिक सहायता, गांठ विद्या, बीपी सिक्स, मार्च पास्ट, सिद्धांत, स्काउट चिन्ह, सैलूट, प्रतिज्ञा, नियम का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की ऐतिहासिक जीत पर कार्यकर्ताओं ने मनाया जश्न

पूर्णिया। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मिले अपार बहुमत से उत्साहित कांग्रेस कार्यकताओं ने बड़हरा कोठी बाजार में कांग्रेस सेवा दल के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अमित कुमार एवं प्रखंड अध्यक्ष अरविन्द कुमार जायसवाल के नेतृत्व में आतिशबाजी एवं एक दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार किया। इस अवसर पर वरिष्ठ कांग्रेसी कार्यकर्ता रामानंद तिवारी उर्फ कल्लू तिवारी ने कांग्रेस के गौरवमयी इतिहास का बखान करते हुए पार्टी के स्वर्णिम भविष्य का कामना किया। उन्होंने कार्यकर्ताओ को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आमजन कांग्रेस के शासनकाल काल और भाजपा के वर्तमान शासनकाल में भलीभांति फर्क महसूस कर रहा है। आमजन भाजपा के शासन से तंग आ चुका है। अब वह दिन दूर नही जब भारत सहित भारत के सभी राज्यों में कांग्रेस की सरकार ही होगी।

आरएसए कार्यकर्ताओं ने कुलपति व कुलसचिव का किया पुतला दहन

दोषी पदाधिकारियों को अविलंब गिरफ्तारी की मांग

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

शोध छात्र संघ (आरएसए) कार्यकताओं के द्वारा महेंद्र महिला कॉलेज में कुलसचिव एवं कुलपति का पुतला दहन किया गया। पुतला दहन के दौरान छात्र नेताओं ने कहा कि शुक्रवार को आरएसए कार्यकताओं के द्वारा विश्वविद्यालय में अपनी विभिन्न मांगों को लेकर आंदोलन किया जा रहा था। इसी दौरान विश्वविद्यालय के पदाधिकारी एवं कर्मचारी मिलकर छात्रा के साथ अश्लील हरकत कर रहे थे। जिसका विरोध करने पर विश्वविद्यालय प्रशासन ने अपना कुकृत्य छिपाने के लिए उल्टे छात्र नेताओं पर ही

प्राथमिकी दर्ज करा दी। वही छात्रा के आवेदन पर अब तक कारवाई नही की गयी है। छात्र नेताओं ने सारण जिला प्रशासन से अविलंब दोषी पदाधिकारी एवं कर्मचारियों पर प्राथमिकी दर्ज करते हुए गिरफ्तारी की मांग की है। वही छात्र नेताओं ने राजभवन से कुलपति और कुलसचिव को तुरंत बर्खास्त करने की मांग की है ताकि विश्वविद्यालय में शैक्षणिक माहौल कायम हो सके। पुतला दहन कार्यक्रम में मुख्य रूप से सोनू, सुनील सिंह, प्रिंस यादव, मो० अफजल, जयराम, मंजीत कुमार, राजा कुमार, अनीश, धर्मेंद्र कुमार, इरफान, उपेंद्र यादव, शुभम कुमार सहित अन्य छात्र मौजूद थे।

फुलवरिया में चार घर में लगी आग लाखों की संपत्ति जलकर हुई राख

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

जिले के फुलवरिया थाना क्षेत्र के रामपुर गांव में शनिवार की मध्यरात्रि अचानक आग लगने से लाखों रुपए की संपत्ति जलकर राख हो गई। इस अगलगी में चार घर जलकर राख हो गया। अगलगी से गांव में अफरा-तफरी का माहौल व्याप्त हो गया। अगलगी की सूचना मिलते ही गांव के ग्रामीण आग पर काबू पाने के लिए पानी की बौछारें करने लगे, लेकिन तेज पछुआ हवा के कारण आग की लपटें इतनी तेज थी कि ग्रामीण नजदीक से पानी फेंकने में असफल रहे। अगलगी की सूचना ग्रामीणों ने स्थानीय पुलिस को दी। सूचना मिलते ही त्वरित कार्रवाई करते हुए फुलवरिया पुलिस फायर ब्रिगेड की गाड़ी के साथ पहुंचे। जहां आग पर काबू पाने के

लिए प्रयास करने लगे। परंतु पूस की झोपड़ी में लगी आग पर काबू पाने में असमर्थ रहे। इतने में स्थानीय ग्रामीणों की मदद से किसी तरह आग पर काबू पाया गया। तब तक चारों घर जलकर राख हो गया। आगलगी की सूचना पर बीडीसी सदस्य अकबर अली, उप मुखिया संजय गुप्ता तथा सरपंच प्रतिनिधि अली हुसैन मियां पहुंचकर अग्नि पीड़ित को आर्थिक मदद दिलाने की बात कही। अग्नि पीडितों में रामपुर गांव के निवासी स्वर्गीय बिंदेश्वरी महतों का पुत्र विक्रमा महतों, स्वर्गीय शिवजी साह के पुत्र छोटेलाल साह, दशरथ साह तथा देवानंद साह शामिल हैं। अग्नि पीड़ित ने बताया कि अगलगी में गेहूं, धान, साइकिल, मवेशियों का चारा, बर्तन, कपड़ा सहित अन्य सारी सामग्रियां जलकर राख हो गई। उधर अगलगी के कारण गांव में अफरा-तफरी का माहौल व्याप्त गया। अग्नि पीड़ितों ने बताया कि आग कैसे लगी। इसकी जानकारी नहीं है। फिलहाल अग्नि पीड़ित परिवार खुले आसमान में जीने को विवश है।

पूरी पारदर्शिता के साथ स्वच्छ वातावरण में सिपाही भर्ती परीक्षा हुआ संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा । कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच मद्य निषेध सिपाही भर्ती परीक्षा 41 केंद्रों पर संपन्न हो गया। जिलाधिकारी अमन समीर व एसपी डॉ गौरव कुमार मंगला ने सिपाही भर्ती परीक्षा केंद्र सरस्वती शिशु विद्या मंदिर सहित कई केंद्रों व गरखा के परीक्षा केंद्रों का भी दौरा किया और चल रहे परीक्षा का जायजा लिया। कदाचार में लिप्त 32 अभ्यर्थियों को निष्कासित किया गया। बताते चले कि शांतिपूर्ण माहौल में सिपाही भर्ती परीक्षा संचालन के लिए जिलाधिकारी द्वारा कई दिशा निर्देश दिए गए थे, जिसके तहत सभी केंद्रों पर केंद्र अधीक्षक व उनकी टीम के सदस्य सीट प्लानिंग और बुनियादी सुविधाओं के साथ-साथ ध्वनि विस्तारक यंत्र से अभ्यर्थियों को परीक्षा संबंधित जानकारी देने की व्यवस्था की गई थी । आयोग के दिशा- निर्देश के अनुसार डीएम अमन समीर ने सभी मजिस्ट्रेट व कर्मियों को परीक्षा शुरू होने से 2 घंटा पहले केंद्र पर पहुंचने का निर्देश दिया था। परीक्षा की निगरानी के लिए सभी केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे, जैमर के अलावा परीक्षा अवधि तक वीडियोग्राफी कराने का भी निर्देश दिया गया था। वही प्रवेश पत्र एवं फोटो पहचान पत्र के बिना किसी भी अभ्यर्थियों को केंद्र में प्रवेश की अनुमति नहीं दी गई थी ।

मध निषेध सिपाही भर्ती परीक्षा को लेकर रेल प्रशासन द्वारा भी रविवार को स्पेशल ट्रेनों का संचालन भी किया गया जिससे यात्रियों को आने-जाने में काफी सहूलियत मिली। मिली जानकारी के अनुसार सिपाही भर्ती परीक्षा में कदाचार को रोकने को लेकर जिला प्रशासन द्वारा सभी केंद्रों पर बायोमेट्रिक हाजिरी, जैमर सीसीटीवी कैमरा एवं वीडियोग्राफी के माध्यम से परीक्षाओं का संचालन किया गया। जिला में चल रहे सिपाही भर्ती परीक्षा के 41 केंद्रों पर लगभग 20692 परीक्षार्थियों को शामिल होना था। चाक-चौबंद सुरक्षा व्यवस्था के बीच चल रहे सिपाही भर्ती परीक्षा में आठ उड़नदस्ता तथा 18 समन्वय शिक्षकों ने निगरानी किया। वही परीक्षा केंद्रों पर प्रवेश से पहले महिला परीक्षार्थियों के लिए महिला पुलिस लगाया गया था जिसे बारी-बारी से तलाशी के बाद ही अभ्यर्थियों को अंदर जाने दिया जाता था। जिले में पूरी पारदर्शिता के साथ स्वच्छ वातावरण में सिपाही भर्ती परीक्षा संपन्न हो गया। निष्काषित अभ्यर्थियों पर प्राथमिकी दर्ज कर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

विप्र समाज के उत्थान को एकजुटता जरूरी: डॉ. अजय

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

शहर के एक निजी होटल में विप्र समाज के उत्थान एवं सर्वांगिण्क विकास को लेकर बैठक का अयोजन किया गया। बैठक में विप्र समाज कैसे चटानी मजबूती के साथ एकजुट रखा जाए इस पर भी सर्वसम्मति से चर्चा की गयी। बैठक के दौरान सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि प्रत्येक रविवार को लक्ष्मी होटल में बैठक आयोजित कर समाज के उत्थान व एकजुटता को लेकर चर्चा की जाएगी। इसके साथ ही व्रिप समाज के लोगो को घुम-घुम कर जागरूक भी किया जाएगा। बैठक में मुख्य रूप से डॉ अजय कुमार दुबे, शिव प्रकाश उपाध्याय, विमलेन्दु कुमार द्विवेदी, मनिंद्र कुमार ओझा, पं. मुकेश ओझा, चंद्र मोहन पांण्डेय, अमरेश तिवारी, अनुज पांण्डेय, अंशु

कुमार मिश्र, अनिल पांण्डेय, विकास पांण्डेय, बिपिन बिहारी दुबे, पं. युगल किशोर पांण्डेय, जितेंद्र गिरी, रविंद्र कुमार चतुवेर्दी, धनंजय पांण्डेय, मनिकेश कुमार तिवारी, बंटी मिश्रा, बृज कुमार पांण्डेय, अरुण कुमार मिश्रा, रजनीश कुमार द्विवेदी, प्रदीप कुमार मिश्रा, संतोष कुमार मिश्रा, आशुतोष कुमार मिश्र, राजेश कुमार तिवारी, डॉ गजेंद्र कुमार पाठक, प्रदीप कुमार तिवारी, अवध कुमार तिवारी, धनंजय पांडेय, असीम उपाध्याय अभिरंजन कुमार त्रिपाठी, बृज कुमार पांडे, संतोष कुमार मिश्र सहित अन्य मौजूद थे।

दिल्ली के जाम को मधुबनी में छलकाने की थी तैयारी, तीन गिरफ्तार

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

जिले के कुचायकोट थाना क्षेत्र के बलथरी चेक पोस्ट के पास वाहन जांच के दौरान उत्पाद विभाग की टीम ने दिल्ली से मधुबनी जा रही एक बस की छत पर बने तहखाने से 15 बोतल विदेशी शराब के साथ चालक व खलासी सहित तीन लोगो को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार चालक सहित अन्य लोगो से पूछताछ की जा रही है। गिरफ्तार चालक मधुबनी जिले के बोडहर थाने के हिसार गांव के अशोक कुमार दास, सहारघाट थाने के मुखियापट्टी गांव के गोविन्द पासवान और दिनेश पासवान बताए गए है। इसकी जानकारी देते हुए उत्पाद अधीक्षक राकेश कुमार ने बताया कि उत्पाद विभाग की टीम बलथरी चेकपोस्ट के समीप एनएच 27 पर वाहनों की जांच पड़ताल कर रही थी। इस दौरान दिल्ली से मधुबनी जा रही एक बस बलथरी चेकपोस्ट के समीप पहुंची। पुलिस ने बस को रोककर बस की तालासी ली तो बस की छत पर फ्रेम में तहखाना बनाकर 15 बोतल शराब रखी गयी थी। पुलिस ने शराब जब्त करते हुए दोना चालक व खलासी को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार किए गए चालक व खलासी के खिलाफ उत्पाद अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर पुलिस ने उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया। उत्पाद अधीक्षक ने बताया कि किसी भी हाल में जिले में शराब की तस्करी नही होने दी जाएगी। शराब तस्करी रोकने के लिए जहां एनएच पर हैंड स्कैनर मशीन से जांच की जा रही है तो दियारे इलाकें में ड्रोन कैमरे की मदद से शराब तस्करों पर नजर रखी जा रही है।

नटवां में सड़क निर्माण के दौरान हुए विवाद की बीडीओ ने की जांच

प्रात : किरण संवाददाता

गोपालगंज। जिले के पंचदेवरी प्रखंड की सिकटिया पंचायत के नटवां में सड़क के निर्माण के दौरान हुए विवाद की बीडीओ ने जांच की। संत पदम दास ने शनिवार की शाम आवेदन दे कर बीडीओ मनीष कुमार श्रीवास्तव से जांच की मांग की थी।

दिये गये आवेदन के माध्यम से संत पदम दास ने बीडीओ को बताया कि नटवां में झरही नदी के किनारे छठ घाट से लेकर भरपटिया पुल तक स्थानीय मुखिया द्वारा मिट्टीकरण का कार्य कराया जा रहा है। मिट्टीकरण का कार्य पश्चिम की ओर से होना चाहिए, जबकि झरही नदी से सटे पूरब की ओर से कराया जा रहा है। संत ने पश्चिम की ओर से सड़क का निर्माण कराने की मांग की। वहीं, आस-पास के कुछ ग्रामीण निर्माण कार्य को सही बता रहे हैं। मुखियापति व पूर्व प्रमुख वीरेंद्र मधेशिया का कहना है कि पूरब की ओर से मिट्टीकरण कराने पर सड़क पुल तक सीधी हो रही है। रविवार की सुबह मौके पर पहुंच कर बीडीओ ने इसकी जांच की। जांच के दौरान कार्य प्रगति पर था।

बीडीओ के सामने संत, मुखियापति व ग्रामीणों ने अपना-अपना पक्ष रखा। संत द्वारा जिधर से सड़क निकलवाने की मांग की जा रही थी, उधर सरकारी जमीन कहां तक है, इसकी स्थिति स्पष्ट करने के लिए बीडीओ ने जमीन की पैमाइश कराने की बात कही। उन्होंने कहा कि जमीन की पैमाइश कराकर तथा इस जमीन में जो पेड़ हैं, इसके संबंध में विभाग के पदाधिकारियों से बात कर आगे का निर्णय लिया जायेगा। मौके पर वीरेश यादव समेत काफी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

प्रकृति के प्रति सजग रहना सबका कर्तव्य : डॉ कौशिक

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। नेहरू युवा केंद्र, सारण (युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार) के तत्वावधान में जल संरक्षण हेतु संचालित कैच द रेन तृतीय चरण जागरूकता अभियान रविवार को नेहरू युवा केंद्र सारण द्वारा तीसरे वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं संचालन जिला युवा अधिकारी मयंक भदौरिया द्वारा किया गया। डी ए वी, सिवान के भूगोल विभाग के अध्यक्ष डॉ. रामानुज कौशिक ने जल संरक्षण में सरकार की भूमिका विषय पर विस्तार से बताया।

उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा जल संरक्षण की दिशा में कई कार्य किए गए हैं जिसमें कैच द रेन प्रमुख है। जल जीवन हरियाली अभियान भी इस दिशा में कार्य कर रहा है। सरकार की योजनाओं जैसे नल जल योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, अटल भू जल योजना, जल जीवन हरियाली योजना के बारे में विस्तारपूर्वक बताया साथ ही कहा कि इसके अलावा समुदाय की सहभागिता जल संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में बढ़ती जनसंख्या, अधौगिक विकास, नगरीकरण से आदि से जलस्रोत विलुप्त होते जा रहे हैं। अतः जलस्रोतों का संरक्षण, वेटलैंड संरक्षण, रेन वाटर हार्वेस्टिंग जैसी तकनीकी से संरक्षण करना आवश्यक है क्योंकि जल है तो कल है। इसके अतिरिक्त उन्होंने सभी से प्रकृति के प्रति सजग और संवेदनशील रहने का आव्हान किया और सामूहिक प्रयासों से जल संरक्षण हेतु अथक प्रयास एवं इस अभियान को अधिकतम जनसहभागिता के माध्यम से प्रचार प्रसार करने को भी प्रेरित किया। इस ऑनलाइन संगोष्ठी में शामिल युवाओं ने भी प्रश्नों के माध्यम से अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज की। इस दौरान सहायक प्राध्यापक डॉ. अनुपम कुमार सिंह सहित विभिन्न कॉलेजों से युवा जुड़े थे।

कर्नाटक में कांग्रेस की प्रचंड जीत पर महागठबंधन कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर

इसुआपुर। कर्नाटक में कांग्रेस की प्रचंड जीत पर महागठबंधन कार्यकताओं में खुशी की लहर व्याप्त है। रविवार को आरजेडी नेता सह प्रखंड प्रमुख मितेंद्र प्रसाद यादव के पिपरहिया बाजार स्थित निजी कार्यालय पर खुशियां और जश्न मनाई गई। महागठबंधन के कार्यकताओं ने एक-दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर तथा मिठाइयां खिलाकर खुशी का इजहार किया। कार्यकताओं को संबोधित करते हुए प्रखंड प्रमुख आरजेडी नेता मितेंद्र प्रसाद यादव ने कहा कि कर्नाटक की तरह बिहार में भी भाजपा का यही हश्र होने वाला है। बशर्ते महागठबंधन के कार्यकर्ता एकजुट रहें तथा पार्टी के नीतियों को घर-घर तक पहुंचावें। इस मौके पर राजद के जिला उपाध्यक्ष सह पैक्स अध्यक्ष राजेश राय, बीडीसी प्रतिनिधि हरेराम कुमार राम, सुरेंद्र राम, सूरज श्रीवास्तव, विजय राय, जिला पार्षद सह जदयू नेता छविनाथ सिंह, जदयू के प्रखंड अध्यक्ष अनवर हुसैन, कांग्रेस के प्रखंड अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह, रामदेव चतुवेर्दी, इंद्रदेव ओझा समेत दर्जनों कार्यकर्ता थे।

हरि किशोर श्रीवास्तव को दिया गया सचिव पद की जिम्मेवारी

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा । श्रीचित्रगुप्त समिति द्वारा गठित वार्ड गठन को लेकर बनी उपसमिति के संयोजक कमल किशोर सहाय की स्वीकृति के उपरांत श्री चित्रगुप्त समिति के संयुक्त महासचिव राकेश नारायण सिन्हा एवं उप समिति के सदस्य प्रिंस राज एवं सक्रिय सदस्य रविश कुमार श्रीवास्तव के नेतृत्व में नगर निगम क्षेत्र के वार्ड नंबर 05 हरि किशोर श्रीवास्तव के आवास पर रविवार को सभी चित्राश बंधुओं की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता अजीत कुमार वर्मा ने की जिसमें वार्ड समिति का गठन किया गया। श्री प्रिंस राज ने बताया कि सुधांशु वर्मा को अध्यक्ष, विनय कुमार श्रीवास्तव एवं आशुतोष दत्त को उपाध्यक्ष,

हरि किशोर श्रीवास्तव को सचिव, वरुण कुमार एवं राहुल कुमार सहाय को वार्ड संगठन सचिव एवं सर्वजीत कुमार को कोषाध्यक्ष बनाया गया। वहीं महिला प्रतिनिधि के रूप में नीरू श्रीवास्तव एवं रूमा कुमारी को रखा गया। सदस्य के रूप में विजय कुमार श्रीवास्तव, मनोज कुमार सहाय, विजेंद्र प्रसाद, मधुकर कलर्स, रवि आनंद, अभिजीत कुमार सिन्हा, अनिल कुमार वर्मा, विजय प्रसाद, संजय कुमार श्रीवास्तव, विशाल कुमार श्रीवास्तव को बनाया गयो इस बैठक में सभी चित्रांश बंधुओं ने श्री चित्रगुप्त समिति संयुक्त महासचिव राकेश नारायण सिन्हा, समिति सदस्य प्रिंस राज की उपस्थिति में यह संकल्प व्यक्त किया कि चित्रांश परिवारों को दुःख दर्द में सम्मिलित होने, एकजुटता बनाये रखने एवं सामाजिक रचनात्मक कार्यो में सक्रिया रूप से भाग लिया जाएगा। सदस्य प्रिंस राज ने बताया कि श्री चित्रगुप्त समिति के आम सभा की बैठक में यह निर्णय लिया गया था कि उप समिति के माध्यम से नगर निगम क्षेत्र के सभी 45 वार्डो में वार्ड समिति का गठन किया जाएगा जिसके अनुपालन में करीब एक दर्जन से ज्यादा वार्डो का गठन कर लिया गया है।

पुलिस परिवार परामर्श केंद्र में कुल 35 मामले की हुई सुनवाई, 10 का किया गया निष्पादन

पूर्णिया । पूर्णिया पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर आयोजित होने वाले पुलिस परिवार परामर्श केंद्र में 6 उजड़े हुए घरों को समझा-बुझाकर फिर से बसा दिया गया। प्रत्येक सप्ताह आयोजित होने वाले पुलिस परिवार परामर्श केन्द्र में कुल 35 मामले सुनवाई हुई जिसमें से 10 मामलों को निष्पादित किया गया। डगरूआ थाना क्षेत्र से आयी एक महिला ने शिकायत की कि उसके पति ने दूसरी शादी कर ली है। पति ने बताया कि उसकी बीबी बार-बार मायके चली जाती थी। इससे तंग आकर उसने दूसरी शादी कर ली है। फिर भी पहली पत्नी अपने पति के साथ रहना चाहती है, लेकिन सौतन के साथ नहीं रहना चाहती है। इस पर पति ने तीन महीने का समय मांगते हुए कहा कि नया घर बनाने के बाद वह पहली पत्नी को अपने साथ लेकर जाएगा। तब तक 3 हजार रूपए प्रति महीना गुजारा भत्ता के रूप में दूंगा। इसका बाउंड बनाया गया। वहीं मरंगा थाना क्षेत्र के हरदा बस्ती से आयी एक महिला ने केन्द्र के सदस्यों को बताया कि उसके पति हमेशा गाली गलौज व मारपीट करता रहता है। इसको लेकर पंचायत भी बैठी फिर भी कोई फैसला नहीं हो सका। केन्द्र के सदस्यों के समझाने बुझाने के बाद दोनों एक साथ रहने को राजी हो गए। बंध पत्र बनाकर खुशी-खुशी अपने घर को विदा हुए। कसबा थानाक्षेत्र के मजगामा बस्ती से आयी एक पति की दो बीबीयां का मामला भी केन्द्र के सदस्यों ने सुनकर निदान किया।

चिरांद महोत्सव की तैयारी जोरों पर, कार्य में जुट गयी समितियां

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा । गंगा, सरयू व सोन नद के संगम स्थित चिरांद के वार्षिक समारोह की तैयारी के लिए रविवार को चिरांद विकास परिषद की बैठक हुई जिसमें आयोजन के निमित समितियों का गठन किया गया। ज्येश्ठ पूर्णिमा के अवसर पर 3 जून को आयोजित चिरांद चेतना महोत्सव, गंगा गरिमा रक्षा संकल्प समारोह व गंगा महाआरती को सुव्यवस्थित एवं भव्य बनाने के लिए आठ समितियों का गठन किया गया। अभिजीत कुमार सिंह, हरिमोहन सिंह, भरत पासवान, गिरजन पासवान, चुमन सिंह के संयोजन में आरती समिति, रघुनाथ सिंह, श्याम बहादुर सिंह, तारकेश्वर सिंह, श्रीकांत पांडेय, हरिद्वार सिंह, संयोजन में अतिथि व्यवस्था समिति गठित की गयी है। सांस्कृतिक आयोजन समिति के संयोजक व सह संयोजक कुमार आनंद, षारदा देवी तथा बंटी पांडेय

को बनाया गया है। भोजन व्यवस्था के संयोजक सुमन कुमार, सुभाष महतो, राजू साह ढ़ोढा प्रसाद, बिजय राय भीड़ प्रबंधन व्यवस्था के संयोजक मोहन पासवान, जूही राय, राधेश्याम चौधरी, शंकर पासवान, जयदिनेश पाण्डेय, मुकेश सिंह, समन्वय समिति के संयोजक विपिन बिहारी, अतुल कुमार सिंह, रणजीत सिंह, राजकिशोर चौरसिया होंगे। वहीं पंजीयन एवं लेखा समिति के संयोजक राशेश्वर सिंह सुशील पाण्डेय व सह संयोजक रविकांत सिंह होंगे। वहीं मंचीय व्यवस्था की जिम्मेदारी किरण सिंह एवं श्री राम तिवारी की होगी। गठित समितियां आज से ही तैयारी में जूट गयी हैं।

इस वर्ष के चिरांद महोत्सव में गंगा की धारा के साथ उद्धुत भारत की सर्वसमावेशी संस्कृति व प्रकृति के साथ अनुकूलता वाली विकास माडल जीवंत होगा। 16वें आयोजन में गंगा गरिमा रक्षा के लिए चिरांद के महत्व को भी दृष्यमान किया जाएगा।

आज की बैठक में चिरांद विकास परिषद के संरक्षक महंत श्री कृश्णदास उपाख्य नागा बाबा, चिरांद विकास परिशद के सचिव श्रीराम तिवारी, संस्थापक न्यासी रामदायाल षर्मा, समाज सेवी श्री देवेश नाथ दीक्षित, जितेंद्र शर्मा, भोला मिश्रा, जजन प्रसाद यादव, जितेंद्र कुमार साह, ललन भक्त, रमेश मिश्रा, सुबोध कुमार, सीता लालच शरण, चंदन कुमार आदि मौजूद थे।

भाजपा की बैठक में लोकसभा चुनाव की तैयारी को लेकर विचार विमर्श

रूपौली (पूर्णिया) । रूपौली विधानसभा क्षेत्र के भाजपा मंडल टीकापट्टी के शक्ति केंद्र धूसर टीकापट्टी के गायत्री मंदिर परिसर में मंडल अध्यक्ष अरविंद कुमार साह की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा जिला उपाध्यक्ष सह विधानसभा प्रभारी ज्ञानेंद्र सिंह झुन्नू की उपस्थिति में भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारी एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता की बैठक हुई। बैठक का मुख्य उद्देश्य पन्ना प्रमुख एवं बूथ कमिटी का सत्यापन हेतु टीम गठित किया गया। साथ ही हर शक्ति केंद्र के लिए प्रभारी नियुक्त किया। भाजपा मंडल अध्यक्ष अरविंद कुमार साह ने कहा कि जल्द से जल्द सारा काम पूर्ण होने के उपरांत मंडल कमिटी का विस्तार हो सकें, और आने वाले 2024 लोक सभा चुनाव में भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मजबूती के लिए साथ बन सके एवं 2025 बिहार विधानसभा चुनाव में भी बिहार में भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बन सकें।

टीबी उन्मूलन में उत्कृष्ट योगदान के लिए सारण जिला को मिला कांस्य पदक

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। टीबी उन्मूलन को लेकर स्वास्थ्य विभाग प्रतिबद्ध है। इसको लेकर विभिन्न स्तर पर प्रयास किया जा रहा है। सारण जिला में भी टीबी उन्मूलन को लेकर कई महत्वपूर्ण कार्य किये गये है। इसको लेकर केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा सारण जिले को कांस्य पदक और इनाम के तौर 2 लाख रुपए की राशि दिया गया है। जिसे सूबे के स्वास्थ्य मंत्री तेजश्वी यादव के द्वारा पटना में आयोजित कार्यक्रम में प्रदान किया गया है। सिविल सर्जन डॉ. सागर दुलाल सिन्हा और डीपीएम अरविन्द कुमार ने पुरस्कार को प्राप्त किया। इस मौके पर सीएस ने कहा कि यह सारण के लिए गौरव की बात है। टीम वर्क के कारण ही यह सफलता मिली है। भारत सरकार ने 2025 तक भारत को टीबी मुक्त करने का लक्ष्य रखा है। केंद्र सरकार प्रति वर्ष टीबी उन्मूलन में बेहतर कार्य करने के लिए जिलों के यक्ष्मा विभाग व राज्य स्वास्थ्य विभाग द्वारा पुरस्कृत किया जाता है।

सीएस डॉ. सागर दुलाल सिन्हा ने कहा कि जिले में राष्ट्रीय यक्ष्मा उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत टीबी मुक्त पंचायत अभियान की की गयी. अभियान के तहत पंचायतों का चयन किया जाएगा। 1000 जनसंख्या पर 50 संदिग्धों की खोज होगी मरीज मिलने पर प्रतिवर्ष उस पंचायत में अभियान चलाया जाएगा 2 से कम मरीज मिलने पर पंचायत को टीबी मुक्त माना जाएगा. जिले के चयनित प्रखंड के चयनित पंचायत के वार्ड, ग्राम को टीबी मुक्त ग्राम पंचायत के लिए कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। जिसके तहत कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान रोगियों के इलाज के साथ आमजन को जागरूक किया जाएगा।

सम्पादकीय

कर्नाटक चुनाव : कांग्रेस को संजीवनी, भाजपा को सबक

कर्नाटक चुनाव परिणाम के जो राजनीतिक चित्र बना है, उससे यही लग रहा है कि अब कांग्रेस मुक्त भारत की बात केवल नारा बनकर रह गई है। कर्नाटक ने लगातार सिमटती जा रही कांग्रेस की उखड़ती साँसों को एक प्रकार से जीवनदान दिया है। कांग्रेस को मिली इस संजीवनी के बाद निश्चित ही कांग्रेस की भावी उम्मीदों में नए रंग भरने का काम किया है। कांग्रेस के नेताओं को यह भी लगने लगा है कि अब दिल्ली दूर नहीं। लेकिन कांग्रेस के लिए यह चिंतनीय विषय है कि राजस्थान भी चुनाव के मुहाने पर खड़ा है और वहां कांग्रेस के अंदर जिस प्रकार से अशोक गहलोत और सचिन पायलट के बीच राजनीतिक रस्साकशी चल रही है, वह कांग्रेस के भविष्य के लिए नकारात्मक संदेश देने वाला ही है। खैर जो भी हो कर्नाटक के परिणामों ने कांग्रेस में निराशा के बादलों को हटाने का काम किया है। वैसे कर्नाटक में प्रदेश की सरकार का यह इतिहास रहा है कि लम्बे समय से वहां किसी भी राजनीतिक दल को दूसरी बार सत्ता नहीं मिली है। इस कारण कहा जा सकता है कि कर्नाटक की जनता ने अपने इतिहास पर इस बार भी मुहर लगाने का काम किया है। इसलिए इस बार कांग्रेस को राज्य की सत्ता मिलना किसी भी प्रकार से अप्रत्याशित नहीं माना जा रहा है। हालांकि परिणाम के बाद कांग्रेस को बंपर जीत मिली है, ऐसा नहीं कहा जा सकता, लेकिन सीटों के हिसाब से कांग्रेस को बहुमत का आंकड़ा मिल गया है। जहां तक जनता दल सेक्युलर की बात है तो उसके सपने चकनाचूर होते दिखाई दे रहे हैं। प्रारंभिक चुनाव परिणामों के रुझानों ने जनता दल सेक्युलर की उम्मीदों को बनाए रखा था, उसे लग रहा था कि वह पिछली विधानसभा की तरह ही किंग मेकर की भूमिका में आएगी, लेकिन दोपहर तक यह स्पष्ट हो गया कि कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत मिल रहा है।

कर्नाटक चुनाव के पश्चात निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि आगामी लोकसभा चुनाव के लिए कांग्रेस अपने आपको प्रमुख विपक्षी दल के तौर पर प्रस्तुत करने का प्रयास करेगी, लेकिन राजनीतिक विसंगति यह है कि विपक्ष के कई राजनीतिक दल कांग्रेस के नेतृत्व में एक मंच पर आने को तैयार नहीं हैं। इसके पीछे क्षेत्री दलों की अपनी महत्वाकांक्षाएं हैं। जहां एक ओर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बिहार से निकलकर केंद्रीय राजनीति में आने का मंसूबा पाले बैठे हैं, वहीं दूसरी ओर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पहले ही इस बात का संकेत दे चुकी हैं कि वह कांग्रेस का नेतृत्व स्वीकार नहीं करेंगी। ऐसे में कर्नाटक के परिणामों के बाद कांग्रेस के लिए भविष्य की राजनीतिक राह आसान हो जाएगी, यह कहना एक दम से ठीक नहीं होगा। हालांकि लोकसभा और विधानसभा के चुनाव समान परिणाम वाले रहेंगे, ऐसा कहना भी संभव नहीं है। पिछले पांच साल में कर्नाटक ने जिस प्रकार से राजनीतिक अस्थिरता को झेला है, उसका प्रभाव प्रदेश की सत्ता पर भी व्यापक रूप से हुआ। यह सभी ने देखा कि कर्नाटक में कांग्रेस ने तीसरे नम्बर पर आने वाली पार्टी को सत्ता की कमान सौंप दी थी। जो एक प्रकार से लोकतंत्र का अपमान ही कहा जाएगा, क्योंकि कर्नाटक की जनता ने जनता दल सेक्युलर को मुख्य विपक्षी दल की हैसियत से भी नीचे कर दिया था। लम्बे समय तक कर्नाटक में राजनीतिक नाटक चलता रहा और फिर भाजपा का शासन स्थापित हो गया। इसको जनता ने किस रूप में लिया।

कर्नाटक नतीजे नई इबारत तो नहीं लिखेंगे?

ऋतुपर्ण दवे

कर्नाटक विधान चुनाव में कांग्रेस की बम्पर और ऐतिहासिक जीत ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि देश में लोकतंत्र न केवल मजबूत है बल्कि जनता के मूल मुद्दों से इतर ध्रुवीकरण की कोशिशों नाकाम होंगी। कांग्रेस के बहुमत की उम्मीद तो थी, लेकिन नतीजा ऐसा चौंकाने वाला आएगा ये हैरान करता है। शायद भाजपा और खुद प्रधानमंत्री मोदी भी नतीजों से असहज होंगे। हर वक्त चुनावी मोड में रहने वाली भाजपा नेमोदी मैजिक को भंजाने के लिए सारे दांव-पेंच चले।सारी चुनावी बिसातें को बिछाकर एक-एक कार्यकताओं को साधने की जुगत में महारत के बावजूद ऐसे नतीजों से ना उम्मीदहोगी बल्कि सतर्क भी होगी क्योंकि 2024 के आम चुनाव दूर नहीं हैं। निश्चित रूप से कर्नाटक का चुनाव कांग्रेस के लिए संजीवनी वहीं भाजपा को दूसरी बार झटका है। अपने मैजिक से आगे दूसरों के मैजिक को नकारने की गलती पर भी मंथन को मजबूर होना पड़ेगा।

इसके पहले हिमाचल प्रदेश में भी भाजपा को उम्मीद से इतर नतीजों ने हैरान किया था। वहां भी प्रधानमंत्री मोदी को प्रमुख चुनावी चेहरा बनाकर चुनावी वैतरणी में भाजपा ने गोता लगाया था। कमोवेश इससे बड़ी रणनीति बनाकर प्रधानमंत्री ने कर्नाटक में बड़े-बड़े रोड शो किए और जनमानस को लुभाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। जबकि हिमाचल में कांग्रेस ने राहुल की यात्रा के बीच प्रियंका को सामने रख चुनाव लड़ा था। वहीं कर्नाटक में राहुल, प्रियंका, खरगे सहित पूरी पार्टी एकजुटता के साथ मैदान में डटी रही और भाजपा की हर बिसातों को मात दी।

ऐसा लगता है कि देश की जनता को अब लोक लुभावन वायदों, जातीय और धार्मिक ध्रुवीकरण से आगे की चिन्ता होने लगी है जो बेहद अच्छा संदेश है। कर्नाटक में जिस तरह से धर्म और जाति के आधार पर मतदाताओं की संख्या और आंकड़ों का गणित लगाया गया इससे इतर नतीजों ने बता दिया कि वहां का मतदाता अलग सोच रखता है। कर्नाटक में भाजपा के मुख्यमंत्री बदलने के फॉमूर्ले से भी अलग संदेश गया जिसको शायद भाजपा नहीं समझ पाई? जब कर्नाटक की जनता वहां के मुख्य मुद्दे मंहगाई, बेरोजगारी के साथ-साथ गैस सिलेण्डर जैसे आम जरूरतों पर नफा-नुकसान को चिंतित थी तब भाजपा बजरंग बली और लिंगायत मतदाताओं को लुभाने सक्रिय थी। जबकि कांग्रेस स्थानीय मुद्दों, मंहगाई और भ्रष्टाचार पर केन्द्रित रही। वहां चुनाव में बजरंग बली और टीपू सुल्तान की गूंज खूब सुनाई दी। लेकिन जिस खामोशी से कर्नाटक के मतदाताओं ने नतीजे दिए उससे यही लगता है कि नेताओं से ज्यादा परिपक्व भारत का मतदाता है। सच भी है ये पब्लिक है, सब जानती है।

कर्नाटक में जिस तरह से भाजपा के तमाम तुरुप के पत्ते भी ढ़ह गए। कई मंत्री और दिग्गज तो हारे ही लेकिन जिन मुद्दों को चुनावी एजेण्डा बनाया गया उसे भी जनता ने नकार दिया। साल की आखिरी तिमाही में फिर विधानसभा चुनावों की सरगर्मियां बढ़ेंगी। अंत तिमाही में मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, मिजोरम और तेलंगाना राज्यों में चुनाव प्रक्रिया होगी। संभव है इसी समय केंद्र शाषित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में भी चुनाव हो जाएं। कांग्रेस के पास केवल राजस्थान और छत्तीसगढ़ है। मिजोरम की सत्ता पर भाजपा के सहयोग से क्षेत्रीय दल काबिज है। तेलंगाना में भारत राष्ट्र समिति यानी बीआरएस सत्तासीन है। मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव हैं जिन्होंने कर्नाटक में जनता दल (सेकुलर) का समर्थन किया। ऐसे में बीआरएस अब तक भाजपा को चुनौती मान रही थी, अब कांग्रेस के आत्मविश्वास से चिंतित होगी। केंद्र शासित प्रदेश बनने के बाद से जम्मू-कश्मीर में चुनाव नहीं हुए। वहां मतदाता सूची संक्षिप्त पुनरीक्षण के अंतिम चरण में है, प्रकाशन 27 मई को होगा। वहां 19 जून 2018 से सरकार बेदखल है और केन्द्र के अधीन है। बिगड़ती सुरक्षा स्थिति के चलते महबूबा मुफ्ती की सरकार से भाजपा ने समर्थन खींचा था।

उधर हिन्दी पट्टी चुनावी क्षेत्रों में मध्यप्रदेश है। वहां भाजपा संगठन में दिख रहा अंर्तकलह और दलबदल कर आए विधायकों को लेकर हुए उलट फेर और दिग्गजों के चौंकाने वाले बयान सामने हैं। वहीं छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल की छवि बेहद अलग व साधारण लेकिन लोकहितैषी छवि के चलते कांग्रेस में कोई बड़ी गुटबाजी दिखती नहीं। गाय, गोबर, आत्मानन्द स्कूल और नए जिलों के गठन से बनी अलग छवि भाजपा के लिए बड़ी चुनौती है। हां राजस्थान में कांग्रेस की आपसी खींचतान बड़ा नुकसान का सबब जरूर बन सकती है। न तो पायलट रुकने वाले और न ही अशोक गहलोत थमते दिखते। ऐसे में भाजपा कौन सा दांव चलेगी यह देखने लायक होगा। वसुंधरा राजे सिंधिया को लेकर भी अक्सर कई तरह के कयास लगाए जाते हैं। वैसे भी तीन दशक से वहां सरकार बदलने का चलन है।

लेकिन इतना जरूर है कि जिस मेहनत और एकाग्रता से कांग्रेस ने कर्नाटक के जरिए राष्ट्रीय राजनीति में वापसी की है उससे उसका आत्मविश्वास इतना जरूर बढ़ गया है कि 2024 के आम चुनाव के लिए नई ताकत व जोश से सामने हो। यह भी नहीं भूलना होगा कि पंजाब के जालंधर लोकसभा उप-चुनाव में आम आदमी पार्टी ने करीब 56 हजार वोटों से बड़ी जीत दर्ज कर कांग्रेस कोपटखनी दी।

पाकिस्तान में गहरी होती जा रही हैं विभाजन की रेखाएं

क्योंकि पाकिस्तान की सर्वोच्च अदालत ने उनको प्रकरण में बरी नहीं किया है, केवल जिस स्थान से गिरफ्तार किया, वह तरीका गलत बताया है। इस दौरान पाकिस्तान में जो चला या चल रहा है, उसे किसी भी प्रकार से पाकिस्तान के लिए हितकारी नहीं माना जा सकता। तहरीक-ए-इंसाफ के कार्यकताओं ने एक प्रकार से पाकिस्तान को राजनीतिक आतंक की आग में झोंकने का काम किया है। पिछले कई वर्षों से बेहद दयनीय स्थिति का सामना कर रहे पाकिस्तान में इस प्रकार के हालात उत्पन्न करना अपने स्वयं के पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा ही कहा जाएगा। इसी कारण पाकिस्तान की स्थिति दिनों दिन और ज्यादा विकराल होती जा रही है। ऐसी स्थिति में सरकार के विरोध में खतरनाक ढंग से प्रदर्शन करना कहीं न कहीं पाकिस्तान के लिए खतरे की घंटी निरूपित होता जा रहा है।

सुरेश हिन्दुस्थानी
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की गिरफ्तारी और फिर उनकी रिहाई के बाद हालात बेकाबू हो रहे हैं। इसके बाद भी उन पर गिरफ्तारी की तलवार लटकी हुई है, क्योंकि पाकिस्तान की सर्वोच्च अदालत ने उनको प्रकरण में बरी नहीं किया है, केवल जिस स्थान से गिरफ्तार किया, वह तरीका गलत बताया है। इस दौरान पाकिस्तान में जो चला या चल रहा है, उसे किसी भी प्रकार से पाकिस्तान के लिए हितकारी नहीं माना जा सकता। तहरीक-ए-इंसाफ के कार्यकताओं ने एक प्रकार से पाकिस्तान को राजनीतिक आतंक की आग में झोंकने का काम किया है। पिछले कई वर्षों से बेहद दयनीय स्थिति का सामना कर रहे पाकिस्तान में इस प्रकार के हालात उत्पन्न करना अपने स्वयं के पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा ही कहा जाएगा। इसी कारण पाकिस्तान की स्थिति दिनों दिन और ज्यादा विकराल होती जा रही है। ऐसी स्थिति में सरकार के विरोध में खतरनाक ढंग से प्रदर्शन करना कहीं न कहीं पाकिस्तान के लिए खतरे की घंटी निरूपित होता जा रहा है। इससे पाकिस्तान की स्थिति और ज्यादा खराब ही होती जाएगी।

पाकिस्तान की विसंगति यही है कि वहां आतंकवाद को खुले तौर पर आश्रय दिया जाता है। आतंकी आकाओं को संरक्षण प्रदान करने वाली सरकार न चाहते हुए भी उनके संकेत पर कार्य करने के लिए विवश रहती है। इतना ही नहीं पाकिस्तान की सेना भी दूसरे देश के लिए आतंकियों जैसा ही व्यवहार करती है। आज पाकिस्तान की स्थिति को देखते हुए यह सहज ही कहा जा सकता है कि आतंक केवल आतंकवादी ही नहीं फैलाते, बल्कि हर स्तर पर आतंक का सहारा लिया जाता है। अभी जिस प्रकार से राजनीतिक प्रदर्शन किया गया, वह प्रदर्शन कम आतंक फैलाने वाला ज्यादा दिखाई दे रहा है। हालांकि पाकिस्तान के लिए किसी बड़े नेता की गिरफ्तारी कोई नई बात नहीं है। इससे पहले भी नेताओं पर भ्रष्टाचार के मामले चले हैं। जब कोई नई सरकार बनती है कि पूर्ववर्ती सरकार के मुखिया को राजनीतिक विद्वेष का शिकार होना पड़ा है। वर्तमान प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के भाई नवाज शरीफ भी इसके शिकार हो चुके हैं। स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो यही कहना तर्कसंगत होगा कि पूरा पाकिस्तान राजनीतिक विद्वेष की अवधारणा को लेकर ही राजनीति कर रहा है।

जहां तक पाकिस्तान की सेना की बात है तो यह सर्वविदित है कि सेना के संरक्षण में ही पाकिस्तान की सरकार बनती है, जैसे ही सरकार सेना के विरोध में आती है, तब पाकिस्तान की सरकार का या तो तख्तापलट हो जाता है या फिर सेना किसी दूसरे दलों को समर्थन देकर नई सरकार बनवा देती है। उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान में जब इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ सत्ता में आई थी, तब इमरान खान की पार्टी को कुछ दलों के साथ स्पष्ट बहुमत मिला था, इस समय सेना का पूरा समर्थन इमरान को प्राप्त था। आज से एक साल पूर्व पाकिस्तान की इमरान खान सरकार को सत्ता से बेदखल कर शहबाज शरीफ पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बने। इमरान खान के समर्थन में इस बार का प्रदर्शन खतरनाक स्थिति में है। इस बात का अंदाजा इससे ही लगाया जा सकता है कि आगजनी की घटनाओं के बाद पूरे पाकिस्तान में इंटरनेट सेवाएं बंद कर दी गई हैं। वहां सरकारी वाहनों पर खतरनाक ढंग से पत्थरबाजी की जा रही है। जिससे जहां एक ओर आठ से ज्यादा नागरिक और कार्यकर्ता मारे गए हैं, वहीं कई घायल भी हुए हैं। इन घटनाओं से इस बात के साफ संकेत मिल रहे हैं कि पाकिस्तान बहुत बड़े गृह युद्ध की ओर कदम बढ़ा रहा है।

स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो यह कहना समीचीन होगा कि पाकिस्तान में उसके ही नागरिक एक दूसरे की जान के दुश्मन बन चुके हैं। यानी आतंक भरा वातावरण तैयार करके एक दूसरे के खून के प्यासे बनते जा रहे हैं। पाकिस्तान जैसे बदहाल देश के लिए इस प्रकार की स्थिति किसी भी प्रकार से ठीक नहीं कही जा सकती, क्योंकि इस प्रकार की आपसी लड़ाई में पाकिस्तान कभी उबर नहीं सकता। वैसे यह कहा जाना तर्कसंगत ही होगा कि विरोध प्रदर्शन के नाम पर हिंसा, आगजनी और पत्थरबाजी करना किसी भी समस्या का हल नहीं है, बल्कि उस समस्या को और ज्यादा विकराल बना देने जैसा ही है। उल्लेखनीय है कि विरोध प्रदर्शन में आगजनी करके शासन, प्रशासन और सेना को ही निशाना बनाने का काम किया गया है। जो यह संकेत करता है कि यह प्रदर्शन सरकार और सेना के विरोध में है। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के कार्यकर्ता बेकाबू हैं, इन्हें न तो प्रशासन रोक पाने का सामर्थ्य जुटा पा रहा है और न ही पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के कार्यकर्ता रुकने की स्थिति में दिखाई दे रहे हैं। इसलिए ऐसा लग रहा है कि यह अस्तित्व की लड़ाई अभी और लम्बी चलेगी। जो वर्तमान सरकार के लिए एक चुनौती बनेगी ही, साथ ही पाकिस्तान के रास्ते में बड़ा अवरोध भी बन सकती है।

अपने जन्म काल के समय से पाकिस्तान अपने हुक्मरानों की गलत नीतियों का खामियाजा भुगत रहा है। वर्तमान की स्थिति और भी ज्यादा खतरनाक है। पाकिस्तान की जनता महंगाई के दलदल में फंसती जा रही है। पाकिस्तान को जिन देशों से आस थी, वह आस भी अब टूटने लगी है। चीन ने पाकिस्तान को ऐसी जगह छोड़ दिया है, जिसकी एक ओर कुआँ है तो दूसरी तरफ खाई है। यानी पाकिस्तान जिधर भी जाएगा, उस तरफ उसकी दुर्गति ही होनी है। दूसरा एक नया संकट पाकिस्तान में यह भी उभर रहा है कि उसके राज्यों में स्वायत्त देश बनाने की मांग भी उठ रही है। अगर ऐसा होता है तो स्वाभाविक रूप से पाकिस्तान चार हिस्सों में बंट जाएगा। इसमें से सिंध, पंजाब और बलूचिस्तान में भारत के प्रति सकारात्मक आवाजें आ रही हैं। इससे यह भी संकेत मिलता है कि पाकिस्तान ने 75 साल पूर्व जो भूल की थी, आज उस भूल को सुधारने का प्रयत्न करने की ओर अग्रसर हो रहा है। पाकिस्तान के कई नागरिक पहले भी खुले तौर पर कह चुके हैं कि आज पाकिस्तान की दुर्गति को देखकर यही लगता है कि हम हिन्दुस्तान के साथ ही रहते।

गरीबी उन्मूलन के क्षेत्र में विश्व को राह दिखाता भारत

विशेष रूप से प्रधानमंत्री गरीब अन्न कल्याण योजना के अंतर्गत देश के 80 करोड़ नागरिकों को मुफ्त अनाज की जो सुविधा प्रदान की गई है एवं इसे कोरोना महामारी के बाद भी जारी रखा गया है, इसके परिणामस्वरूप देश में गरीब वर्ग को बहुत लाभ हुआ है। हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने भारत में गरीबी के अनुमान पर एक वर्किंग पेपर जारी किया है। इस वर्किंग पेपर में अलग अलग मान्यताओं के आधार पर भारत में गरीबी को लेकर अनुमान व्यक्त किए गए हैं। इस वर्किंग पेपर के अनुसार, हाल ही के समय में भारत में 1.2 करोड़ नागरिक अतिगरीबी रेखा के ऊपर आ गए हैं। वर्ष 2022 में विश्व बैंक द्वारा जारी किए गए एक अन्य प्रतिवेदन के अनुसार, वर्ष 2011 में भारत में 22 .5 प्रतिशत नागरिक गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने को मजबूर थे परंतु वर्ष 2019 में यह प्रतिशत घटकर 10 .2 रह गया है। वर्ष 2016 में भारत में अतिगरीब वर्ग की आबादी 12 .4 करोड़ थी जो वर्ष 2022 में घटकर 1 .5 करोड़ रह गई है।

प्रहलाद सबनानी
लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तम्भकार हैं

भारत में विशेष रूप से कोरोना महामारी के बीच एवं इसके बाद केंद्र सरकार द्वारा गरीब वर्ग के लाभार्थ चलाए गए विभिन्न कार्यक्रमों के परिणाम अब सामने आने लगे हैं। विशेष रूप से प्रधानमंत्री गरीब अन्न कल्याण योजना के अंतर्गत देश के 80 करोड़ नागरिकों को मुफ्त अनाज की जो सुविधा प्रदान की गई है एवं इसे कोरोना महामारी के बाद भी जारी रखा गया है, इसके परिणामस्वरूप देश में गरीब वर्ग को बहुत लाभ हुआ है। हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने भारत में गरीबी के अनुमान पर एक वर्किंग पेपर जारी किया है। इस वर्किंग पेपर में अलग अलग मान्यताओं के आधार पर भारत में गरीबी को लेकर अनुमान व्यक्त किए गए हैं। इस वर्किंग पेपर के अनुसार, हाल ही के समय में भारत में 1.2 करोड़ नागरिक अतिगरीबी रेखा के ऊपर आ गए हैं। वर्ष 2022 में विश्व बैंक द्वारा जारी किए गए एक अन्य प्रतिवेदन के अनुसार, वर्ष 2011 में भारत में 22.5 प्रतिशत नागरिक गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने को मजबूर थे परंतु वर्ष 2019 में यह प्रतिशत घटकर 10.2 रह गया है। वर्ष 2016 में भारत में अतिगरीब वर्ग की आबादी 12.4 करोड़ थी जो वर्ष 2022 में घटकर 1.5 करोड़ रह गई है। पिछले दो दशकों के दौरान भारत में 40 करोड़ से अधिक नागरिक गरीबी रेखा से ऊपर आ गए हैं। दरअसल पिछले लगभग 9 वर्षों के दौरान भारत के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में कई बड़े बदलाव देखने को मिले हैं। जिसके चलते भारत में गरीबी तेजी से कम हुई है और भारत को गरीबी उन्मूलन के मामले में बहुत बड़ी सफलता प्राप्त हुई है।

अतिगरीबी का आकलन 1.9 अमेरिकी डॉलर प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन आय के आधार पर किया जाता है। इस परिभाषा के अनुसार किए गए आकलन के अनुसार अब भारत में केवल 0.9 प्रतिशत नागरिक ही इस गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक भारत में करोड़ों नागरिक अतिगरीबी में जीते थे। वैश्विक स्तर पर एक दूसरी परिभाषा के अनुसार भी गरीबी का आकलन किया जाता है। इसके अनुसार जिस नागरिक की प्रतिदिन आय 3.2 अमेरिकी डॉलर से कम है, वह व्यक्ति गरीबी रेखा के नीचे जीवन करने वाला नागरिक माना जाता है। इसी प्रकार, संयुक्त राष्ट्र (यूएनडीपी) द्वारा जारी किये गए एक अन्य प्रतिवेदन के अनुसार भी पिछले 15 वर्षों के दौरान भारत में गरीबी आधे से ज्यादा घटी है। वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक में भारत ने कई देशों को पीछे छोड़ा है। भारत सरकार ने गरीबवर्ग के नागरिकों को गरीबी रेखा से ऊपर लाने में सफल नेतृत्व प्रदान किया है। स्वास्थ्य, शिक्षा एवं जीवन स्तर जैसे मानकों के आधार पर भारत ने अच्छा काम किया है एवं भारत सरकार द्वारा इस संदर्भ में लागू की गई विभिन्न योजनाओं का अच्छा असर हुआ है। भारत ने गरीबी के खिलाफ जंग में एक मिसाल पेश की है। भारत की इस सफलता पर यूएनडीपी ने भारत सरकार की जबरदस्त सराहना की है।

भारत में अतिगरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले करोड़ों नागरिकों का इतने कम समय में गरीबी रेखा के ऊपर आना विश्व के अन्य देशों के लिए एक सबक है। इतने कम समय में किसी भी देश में इतनी तादाद में लोग अपनी आर्थिक स्थिति सुधार पाए हैं ऐसा कहीं नहीं हुआ है। भारत में गरीबी का जो बदलाव आया है वह धरातल पर दिखाई देता है। इससे पूरे विश्व में भारत की छवि बदल गई है।

वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक 2022 प्रतिवेदन के अनुसार ग्लोबल मल्टी डाईमेंशनल पावर्टी इंडेक्स को जारी करने के पूर्व, पूरे विश्व के 111 देशों के परिवारों में सर्वे किए गए। कुल मिलाकर पूरे विश्व के 610 करोड़ नागरिकों का सर्वेक्षण किया गया एवं यह पाया गया कि पूरे विश्व में 120 करोड़ नागरिक अभी भी अतिगरीबी से जूझ रहे हैं। वहीं संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी प्रतिवेदन में बताया गया है कि विश्व के विभिन्न देशों में 59 करोड़ गरीब नागरिकों को ईंधन की सुविधा उपलब्ध नहीं हैं। यह परिवार भोजन पकाने के लिए ईंधन एवं घरों में रोशनी के लिए बिजली की व्यवस्था नहीं कर पा रहे हैं। जबकि भारत गरीबी के खिलाफ जंग को बहुत मजबूती के साथ लड़ रहा है। भारत में 41.5 करोड़ नागरिक गरीबी रेखा के ऊपर लाए जा चुके हैं। संयुक्त राष्ट्र ने इसे ऐतिहासिक बदलाव बताया है। भारत में कोरोना महामारी खंडकाल के दौरान एवं इसके बाद भी अत्यधिक गरीबी के स्तर में कोई बढ़ोत्तरी दर्ज नहीं की गई है जबकि विश्व के अन्य कई देशों में इस संदर्भ में स्थिति अभी भी दयनीय बनी हुई है। अमेरिका जैसे विकसित देश में भी होमलेस नागरिकों की संख्या 6 लाख से अधिक बताई जा रही है। भारत में 60, 70 एवं 80 के दशकों में हम लगभग समस्त नागरिक हमारे बचपन काल से ही सुनते आए हैं कि भारत एक गरीब देश है एवं भारतीय नागरिक अति गरीब हैं। हालांकि भारत का प्राचीनकाल बहुत उज्जवल रहा है, परंतु आक्रांताओं एवं ब्रिटेन ने अपने शासन काल में भारत को लूटकर एक गरीब देश बना दिया था। अब समय का चक्र पूर्णतः घूमते हुए आज के खंडकाल पर आकर खड़ा हो गया है एवं भारत पूरे विश्व को कई मामलों में अपना नेतृत्व प्रदान करता दिखाई दे रहा है। गरीबी उन्मूलन का क्षेत्र भी अब इसमें शामिल हो गया है। भारत के आर्थिक विकास के संबंच में पिछले कुछ वर्षों से लगातार बहुत अच्छी खबरें सुनाई दे रही हैं। सकल घरेलू उत्पाद में तेज वृद्धि दर, भारत से उत्पादों के निर्यात में तेज होती वृद्धि दर और अभी हाल ही में अंतरराष्ट्री मुद्रा कोष द्वारा जारी एक रिपोर्ट, जिसमें बताया गया है कि भारत में गरीबी में भारी कमी दर्ज की गई है।

भारत में राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात गरीबी हटाओ का नारा तो बहुत लगाया गया परंतु धरातल पर गरीबी हटती हुई दिखाई नहीं दी थी। गरीबी हटाने के लिए भारत में कई योजनाएं बनी, कई कार्यदल बने एवं कई समितियां बनीं परंतु गरीबी में कोई बड़ा बदलाव दिखाई नहीं दिया। इस संदर्भ में गठित की गई कुछ महत्वपूर्ण समितियों को यहां दशार्या जा रहा है। वर्ष 1962 में योजना आयोग कार्य समूह का गठन, वर्ष 1971 वी.एम.दांडेकर और एन.रथ समिति, वर्ष 1979 में अलघ समिति, वर्ष 1993 में लकड़ावाला समिति, वर्ष 2009 में तेंदुलकर समिति एवं वर्ष 2014 में रंगराजन समिति। इसी प्रकार तत्कालीन सरकारों द्वारा उठाए गए कदमों में शामिल हैं, वर्ष 1952 में सामुदायिक विकास परियोजना, वर्ष 1953 में राष्ट्रीय विस्तार सेवा कार्यक्रम लांच किया गया, वर्ष 1970 में सूखा क्षेत्र पीड़ित कार्यक्रम लाया गया, वर्ष 1971 में लघु कृषक विकास एजेंसी की स्थापना की गई। साथ ही, पंचवर्षीय योजनाओं के जरिए गरीबी कम करने की कोशिश की गई, चौथी पंचवर्षीय योजना में गरीबी से मुक्ति प्राप्त करने, सामाजिक समानता लाने एवं सामाजिक न्याय की स्थापना करने का प्रण लिया गया। परंतु भारत में गरीबी कम करने के संदर्भ में कुछ उत्साहजनक परिणाम दिखाई नहीं दिए थे, जबकि वर्ष 2014 से वर्ष 2022 के बीच वर्तमान केंद्र सरकार द्वारा लागू की गई समस्त योजनाएं सफलतापूर्वक लागू की जा सकी हैं। भारत सरकार द्वारा चलाई गई विभिन्न योजनाओं का लाभ कतार में अंतिम पंक्ति में खड़े नागरिक तक पहुंचाने का भरपूर प्रयास किया गया है।

एक अकेला थक जाएगा, साथी हाथ बढ़ाना

सनत जैन

कर्नाटक विधानसभा का चुनाव भारतीय जनता पार्टी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर लड़ा। डबल इंजन की सरकार में एक ही एंजन चेहरा प्रधानमंत्री मोदी का है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता और छवि के कारण 2014 के बाद जितने भी चुनाव हुए हैं। उन सभी में सबसे ज्यादा मतदान मोदी के चेहरे पर हुआ है। पिछले 9 वर्षों में भाजपा का संगठन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर आश्रित भाजपा के नेता और कार्यकर्ता मानते है कि नरेंद्र मोदी के चेहरे पर चुनाव लड़ेंगे, और चुनाव जीत जाएंगे। कर्नाटक विधानसभा के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने पन्ना प्रमुख से लेकर संगठन के हर स्तर के नेताओं और कार्यकताओं को कर्नाटक विधानसभा चुनाव में लगाया था। हर जिले में सरकार की योजनाओं का प्रचार प्रसार करने के लिए केंद्रीय मंत्रियों और सांसदों को जिम्मेदारी सौंपी गई थी। पिछले 6 माह से प्रचार सुनियोजित रूप से किया जा रहा था। भाजपा और सरकार ने अपने सभी संसाधन कर्नाटक विधानसभा चुनाव में झोंक दिए थे। इसके बाद भी 2018 के चुनाव से कम सीटें भाजपा को मिली हैं। यह भाजपा के लिए चिंता का विषय है। भारतीय जनता पार्टी वर्तमान में प्रधानमंत्री मोदी के कारण, सत्ता और संगठन में मजबूत हैं। सभी सूत्र प्रधानमंत्री मोदी जी निकलते हैं, और उन पर जाकर खत्म हो जाते हैं।

इस बार कांग्रेस ने कर्नाटक चुनाव प्रचार में अपनी पूरी ताकत से प्रचार किया। राहुल गांधी, मलिकार्जुन खरगे, प्रियंका गांधी, सिद्ध रमैया, डीके शिवकुमार सहित कांग्रेस के नेताओं ने पूरी क्षमता के साथ एकजुट होकर चुनाव लड़ा। आम जनता की तकलीफों को समझा। आमजन को राहत देने के लिए चुनाव पूर्व घोषणा और प्रचार प्रसार किया। पहली बार कांग्रेस ने, कर्नाटक की सरकार तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को उनकी ही शैली में घेरने का काम किया। कांग्रेस के इस आक्रमक रुख से कर्नाटक की जनता में यह विश्वास बना कि कांग्रेस उनके हितों की रक्षा कर सकेगी। जनता भी खुलकर कांग्रेस के सामने आई समर्थन में जिसके कारण कांग्रेस को कर्नाटक में अप्रत्याशित सफलता प्राप्त हुई है। पहली बार कांग्रेस में गुटबाजी नहीं दिखी। सब ने मिलकर हर संभव प्रयास किया। जिसके सार्थक परिणाम 136 सीटें जीतकर कांग्रेस को उत्थान की ओर ले जाने में सफलता मिली है। कांग्रेस इस जीत से सबक ले। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी को इस जीत से ज्यादा उत्साहित होने की जरूरत नहीं है। यह जीत सभी के प्रयास से हुई है। कांग्रेस संगठन और गांधी परिवार को यह समझना होग। भविष्य में संगठन को मजबूत बनाना, निर्वाचित प्रतिनिधियों का सम्मान, कार्यकर्ता की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। इन्हें आगे लाना होगा। विशेष रूप से युवाओं और महिलाओं की भागीदारी कांग्रेस संगठन में बढ़ानी होगी। केंद्रीय एवं प्रादेशिक राजनेताओं में समन्वय बनाकर रखना होगा। भारत जोड़ो यात्रा ने राहुल गांधी की एक नई छवि बनाई है। उनकी मेहनत रंग ला रही है। लेकिन उन्हें यह समझना होगा, एक अकेला थक जाएगा, साथी हाथ बढ़ाना। यदि सभी का साथ रहा, तो निश्चित रूप से कांग्रेस एक बार फिर, आम जनता का नेतृत्व करने वाली पार्टी बनेगी। कांग्रेस को आंदोलन करने वाली पार्टी बनना होगा। जनता को लगे कि कांग्रेस उसकी लड़ाई लड़ रही है। तब जनता कांग्रेस के साथ खड़ी होगी। पिछले 30 वर्षों में कांग्रेस संगठन निष्किय था। गांधी परिवार के इर्द-गिर्द चापलूस नेताओं का जमघट हो गया था। भारत जोड़ो यात्रा, हिमाचल और कर्नाटक के विधानसभा चुनाव से यह दूरियां कम हुई हैं। गांधी परिवार और कांग्रेस संगठन नेताओं और कार्यकताओं के महत्व को समझ रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी से जुड़े हुए लगभग 84 अनुवांशिक संगठन है। जो लगातार जनता के बीच सक्रिय रहते हैं। कां

संक्षिप्त खबरें

हार्निया के आपरेशन की जगह काट कर हटा दिया हाइड्रोसिल

मुजफ्फरपुर ।जिले में फर्जी नर्सिंगहोम में मरीजों की जान से खेलने का सिलसिला थम नहीं रहा है ।शहर से ग्रामीण इलाके तक ऐसे फर्जी नर्सिंग होम का जाल - सा बिछा हुआ है। यहां के झोलाछाप डाक्टर एवं नर्सिंग होम संचालक बेहतर इलाज के नाम पर गांव के असहाय मरीजों की जान से खेलने से बाज नहीं आते ।कभी यूट्रस के आपरेशन के नाम पर किडनी निकाली ली जाती है तो कभी बंध्याकरण के दौरान पेशाब नली ही काट दी जाती है। ऐसे दो मामले जिले के सकरा इलाके में घटित हो चुके हैं।जिस सकरा इलाके में फर्जी नर्सिंग होम चलाया जा रहा है वहां के झोलाछाप डॉक्टर की करतूत पहले भी सामने आ चुकी है। ताजा मामला भी सकरा का ही बताया जा रहा है। यहां के एक मरीज के हर्निया के ऑपरेशन की जगह उसका हाइड्रोसील काटकर हटा दिया गया। झोलाछाप डॉक्टर की इस करतूत से परिजन काफी सदमें में है। यहां एक निजी अस्पताल, शिव शक्ति नर्सिंग होम में बीते 10 अप्रैल को सकरा वाजिद के रहने वाले कैलाश महतो का हॉर्निया का ऑपरेशन किया गया, लेकिन ऑपरेशन के बाद मरीज की हालत बिगड़ने लगी, उसके पेट और हाइड्रोसील में सूजन होने लगी, जब हालत बिगड़ने लगी तो दो दिन बाद फिर से उसी अस्पताल में ऑपरेशन किया गया, जिसमें मरीज का हाइड्रोसील भी काटकर हटा दिया गया और परिजनों को बताया गया कि बीमारी की असली वजह ही हटा दिया गया है इसके बाद मरीज की हालत और बिगड़ने लगी। परिजन उसे दूसरे अस्पताल ले जाना चाहे, लेकिन नर्सिंग होम वाले उसे जाने नहीं दें रहें थे। तब स्थानीय जनप्रतिनिधि के सहयोग से उसे मुजफ्फरपुर के एक हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। वहां उसका पेट खोल दिया गया।. इधर सकरा वाले निजी अस्पताल के संचालक और कथित डाक्टर फरार बताए जा रहे हैं।

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

रक्सौल। आरोग्य चैरिटेबल ट्रस्ट हॉस्पिटल द्वारा भवानीपुर कट गेनवा राजकीय मध्य विद्यालय में निःशुल्क जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें ब्लड सुगर, हेमोग्लोबिन, ब्लॉड प्रेशर, ईसीजी आदि सभी की निःशुल्क जांच करने के साथ मुफ्त सेनेटरी पैड के साथ महत्वपूर्ण दवाइयों का वितरण किया गया। इस दौरान हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. कुमार मनीष ने कहा कि उनका संकल्प है कि अब हर घर होगा स्वस्थ और हर घर होगा निरोग। बता दें कि आरोग्य चैरिटेबल ट्रस्ट एंड पारा मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल लक्ष्मीपुर रक्सौल और के. डी. मेमोरियल हॉस्पिटल और ट्रामा सेंटर मोतिहारी के द्वारा उक्त निःशुल्क स्वास्थ्य जांच कैंप लगाया गया था। इस कैंप का मुख्य उदेश्य ब्लॉड प्रेशर एवं शुगर के मरीजो को जागरूक करने के साथ हड्डी एवं नस का निःशुल्क जांच कर लोगो को दवा के विषय में जानकारी देना था। उक्त अवसर पर एम्स के पूर्व एवं वर्तमान में के. डी. मेमोरियल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. चंदन कुमार हड्डी एवं नस संबंधी ईलाज किया गया व उचित परामर्श दिया गया। इसी को लेकर आरोग्य चरिटेवल ट्रस्ट हॉस्पिटल के डॉ. कुमार मनीष द्वारा सामान्य बीमारी और के. डी. मेमोरियल के डॉ. चंदन कुमार के द्वारा हड्डी और नस के रोगियों का निःशुल्क जांच किया गया। इस कैंप के तहत घर-घर जा कर मरीजो का स्वास्थ्य जांच किया गया तथा साथ में गरीब मरीजो के परिवार के लिए फ्री हेल्थ कार्ड बनवाया गया, जिसपर पुरे एक साल तक इन मरीजो का शुल्क माफ रहेगा। इस कैंप को सफल बनाने मे डॉ. भूपेंद्र कुमार, गौरव, बिपुल, मनीष, अंजनि, रूबी, मनीष, सुधा, मिक्की, सुबोध, सुधा, मिक्की, विपुल, सौरभ, उत्सव, मुकेश, शिखा, साक्षी, निप्पू, चंदेश्वर सर, किशोरी पटेल, रैफुल भाई, लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, भूषण पटेल, मनोज पटेल हरिंदर पटेल, रामेश्वर कुशवाहा, सुबोध अपना भरपूर सहयोग दिया। इस कैंप में तकरीबन 135 मरीजों का चेकअप किया गया, यथा संभव दावा वितरण किया गया साथ में ब्लड सुगर और हीमोग्लोबिन की जांच फ्री मे की गई।

मां है तो कल है, मां है तो संसार है : डॉ. सुजीत

रक्सौल। मां एक ऐसा शब्द है, जिससे मानव जाति का निर्माण हो जाता है। मां मात्र कहने से ही समस्त जगत का बोध हो जाता है, क्योंकि मां है तो कल है, मां है तो जीवन है और मां से ही सारा संसार है। मां ममता की कीमत चुकाई नही जा सकती, मां के ऋण से कोई भी मुक्त नहीं हो सकता, व्यक्ति चाहे जिस उम्र का हो जाए, कितने ही साल का हो जाए, पर वह अपने मां के लिए वही जन्मजात बच्चा का रूप ही होता है। उक्त सारी बातें रविवार को शहर के लक्ष्मीपुर स्थित ख्याति प्राप्त एसआरपी मेमोरियल हॉस्पिटल के ओपीडी कक्ष में अपनी मां राजकुमारी देवी को मदर्स डे के अवसर पर सम्मानित करते हुए हॉस्पिटल निदेशक डॉ. सुजीत कुमार ने कहा। इसके पूर्व एक सादे समारोह में इस अवसर पर केक काटने के बाद अपनी मां को मेडल पहनाते हुए डॉ. सुजीत कुमार ने कहा कि वे खुद को काफी गौरवान्वित महसूस करते हैं कि उन्हें ऐसी मां मिली और ईश्वर से प्रार्थना है कि हर जन्म में मुझे ऐसी ही मां मिले। उसके बाद मौजूद सभी कर्मियों को केक खिलाकर बधाई दी गई।

करंट लगने से अधेड़ की हुई मौत

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के मनियारी थानान्तर्गत अख्तियारपुर परेया पंचायत के वार्ड तीन रामपुर बलड़ा महादलित टोला में जर्जर बिजली पोल के लोहे के स्टेक में आ रही करंट की चपेट में आने से एक अधेड़ की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई. ।ग्रामीणों की शोर पर पहुंचे लोगों ने कड़ी मशक्कत करके शव को बाहर निकाला और आनन फानन में कुढ़नी स्थित पीएचसी पहुंचे जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया.। मृतक की पहचान स्थानीय निवासी धरोहर राम के 55 वर्षीय पुत्र युगेश्वर राम के रूप में हुई है। मौत की खबर मिलते ही परिजनो में कोहराम मच गया।.पत्न ी प्रमिला देवी पति के शव से लिपट बेसुध हो गई. ।वही दिव्यांग पुत्र मुन्ना के साथ पुत्र अनिल व तीन पुत्रियां दहाड़ मारकर रोने लगी.घटना के बारे में बताया गया की गांव में ही पूजा का आयोजन था पूजा समाप्ति के बाद देर शाम घर लौट रहे थे रास्ते में ही विद्युत प्रवाहित जर्जर पोल में लगे लोहे के टना के चपेट में आने से मौत हो गई.बताया परिवार का भरण पोषण करने वाला एक मात्र सहारा दुनिया से चला गया है। डॉक्टरों की मृत घोषित करने के बाद परिजन शव लेकर घर पहुंचे. ।ग्रामीणों की भारी भीड़ जुट गई। घटना से गुस्साए ग्रामीणों ने दरवाजे पर शव रख बिजली विभाग के खिलाफ हंगामा करने लगे ।जनप्रतिनिधियों ने समझाने का प्रयास किया मगर वो अपनी मांग पर डटे रहे. मुखिया उदय साह,पूर्व पसस अखिलेश तिवारी,मुन्ना सिंह ,सुजीत कुमार,अनीश कुमार आदि ने मृतक के परिजनो को ढाढस बंधाया व हरसंभव सहायता की बात कही। मुखिया समेत जनप्रतिनिधो ने बताया कि बीस वर्षो से महदलित परिवार के लगभग पांच सौ से ज्यादा परिवारों को जर्जर बिजली तार और पोल के सहारे बिजली आपूर्ति की जा रही है। कई बार .इसकी लिखित शिकायत की गई है मगर समस्या जस की तस है। पुलिस ने मामले की छानबीन कर लोगो को शांत कराया और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

जदयू संगठन की मजबूती के लिए नगर कमेटी का किया गया गठन

- 9 सेक्टर में अध्यक्षों की घोषणा, वार्डों में शीघ्र होगा कमेटी का गठन

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। जदयू के प्रदेश नेतृत्व द्वारा पूर्व मेयर संजय कुमार को नगर अध्यक्ष बनाए जाने के बाद उन्होंने संगठन की मजबूती के लिए काम करना शुरू कर दिया है। अपने आवास पर पत्रकारों को संबोधित करते हुए उन्होंने बताया कि नगर कमेटी का गठन कर इसकी सूचना प्रदेश नेतृत्व को भेज दिया गया। उन्होंने बताया कि नगर निगम क्षेत्र में 45 वार्ड है। प्रत्येक 5 वार्ड पर एक सेक्टर अध्यक्ष बनाने का निर्देश प्राप्त हुआ है। जिसके आलोक में अध्यक्षों के मनोनयन का कार्य पूरा कर लिया गया है। सेक्टर अध्यक्षों में बिरजू चंद्रवंशी, अरूण तांती, मो सलाउद्दीन उर्फ गुड्डु, राजेंद्र राजू, मनीष शर्मा, रामानंद राय, चंदन कुमार अकेला, बबलू कुमार, नमूना राय शामिल हैं। कोषाध्यक्ष मुकेश जैन को प्रवक्ता वीरेन्द्र पटेल को बनाया गया है। कमेटी में 11 उपाध्यक्ष, 18 महासचिव, 21 सचिव, 22 कार्यकारणी सदस्य तो 4 विशेष आमंत्रित सदस्य को रखा गया है। उन्होंने कहा है कि उनकी कमेटी नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली महागठबंधन सरकार के कामकाज को घर-घर तक पहुंचाने और आमलोगों की समस्याओं की पहचान कर निदान करने का काम करेगी। प्रेस वार्ता में कोषाध्यक्ष मुकेश जैन व प्रवक्ता वीरेन्द्र पटेल, वार्ड पार्षद सह जदयू नेता गौरव सिंह राणा भी मौजूद थे।

प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा मनाया गया मदर्स डे

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। मातृ दिवस के उपलक्ष्य में प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के नागा रोड, शिवपुरी स्थित रक्सौल शाखा मदर्स डे का कार्यक्रम बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम में रक्सौल उप शाखा की प्रशाशिका ज्ञानू बहन द्वारा माताओं के हमारे जीवन में महत्व और स्थान का एहसास कराया गया। कार्यक्रम में रक्सौल नगर के बहुत सारी माता, बहन और भाईयो ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया एवं कार्यक्रम का आनंद लिया।

कार्यक्रम में ज्ञानू बहन ने बताया कि माताओं की उपस्थिति हमारे जीवन में कितना महत्वपूर्ण है। जीवन को निखारने के लिए और एक वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडिसन के बचपन की एक कहानी का वर्णन किया। जिसमें उन्होंने बताया कि थॉमस जब छोटे थे तो वो पढ़ाई में कमजोर थे और इसीलिए उनके विद्यालय के टीचर ने उनके मां को एक पत्र लिखते हुए कहा कि आपका बच्चा कमजोर है और जिंदगी में वो कुछ भी नहीं कर सकता और उसे कल से विद्यालय नहीं भेजिएगा, तो उनकी मां ने अपने दुख को समा कर थॉमस को कहती है कि टीचर ने लिखा है कि थॉमस इतना बुद्धिमान है

की उसको उनके टीचर नहीं पढ़ा सकते, इसीलिए वो कल से विद्यालय न जाए और बाद की कहानी तो सारा विश्व जानता है कि थॉमस अल्वा एडीसन ने बल्ब और विद्युत का आविष्कार किया, तो इस प्रेरणादाई कहानी से मां के सहनशीलता, नम्रता को स्पष्ट किया गया। फिर मां शब्द कें आध्यात्मिक अर्थ को भी स्पष्ट किया गया कि मां सिर्फ एक शब्द या लिंग तक सीमित नहीं है बल्कि एक भाव है, जिसमें शीतलता है, विनम्रता, सहनशीलता, पालना समाहित है और भाइयों ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई और मदर्स डे की शुभकामनाएं दी।

मदर्स डे पर संत माईकल इंग्लिश स्कूल के नन्हे बच्चों द्वारा दी गई विशेष प्रस्तुति

- गुड़िया गुप्ता को मिला सुपर मॉम का प्रथम अवार्ड

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। घर बच्चो का प्रथम पाठशाला होता है और मां हर बच्चे की पहली शिक्षिका होती है। बच्चा पहली भाषा अपनी मां से ही सिखता है। मां का ऋण कभी भी अबकोई भी नहीं चुका सकता है। उक्त बातें संत माइकल इंग्लिश स्कूल रक्सौल के चेयरमैन अरूण कुमार सिंह ने शनिवार को बाइपास रोड स्थित स्कूल परिसर में मातृ दिवस को लेकर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहीं उन्होंने आगे कहा कि मां की ममता का कोई मोल नहीं है। हर उम्र में मां का प्यार एक ही समान रहता है।

हम सभी को अपने मां-पिता का सम्मान करना चाहिए और यह कोशिश होनी चाहिए की कभी भी हमारे किसी ऐसे कार्य के करना उनके ह्रदय को ठेस नहीं पहुंचे। शनिवार को यहां विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन दयावंती देवी एजुकेशनल ट्रस्ट की संस्थापक दयावंती देवी के द्वारा फीता काट कर इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया था। इसके बाद पहले सत्र में स्कूल के वर्ग नसर्री से लेकर चौथे क्लास तक पढ़ने वाले बच्चों के द्वारा मां के प्यार पर अपनी बात रखी गयी और कई तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये। इस दौरान तु कितनी अच्छी है, तु कितनी प्यारी है मां ओ मां गीत पर बच्चों के द्वारा भावभिनी प्रस्तुती दी गयी। इसी बीच स्कूल के निदेशक अजीत कुमार सिंह ने संबोधित करते हुए कहा कि बच्चा मां और पिता से सबकुछ सीखता और अनुसरण करता है।

हम घर में अपने माता के प्रति श्रद्धा रखेंगे और उनकी सेवा करेंगे तो निश्चित अच्छे संस्कार बच्चो में आयेंगे। उन्होंने कहा कि मां हमेशा अपने बच्चों के लिए प्रेरणा दायक होती है। हम सब का कर्तव्य है कि मां की ममता को कभी न भुलाएं। मां है तो सारा संसार है। वहीं कार्यक्रम के दूसरे सत्र में बच्चों के बेहतर प्रदर्शन के आधार पर 16 माताओं को सुपर मॉम का आवार्ड दिया गया और सभी माताओं से बच्चों के सवार्गीण विकास के लिए ध्यान देने की बात कहीं गयी। विद्यालय के प्राचार्य एम सत्यजीत मुरारी दास ने बच्चों से अपने माता-पिता का सम्मान करने की बात कहीं। कार्यक्रम की संयोजक रीतु दास ने बताया कि सुपर मॉम के पुरस्कार में प्रथम स्थान लाने वाली गुड़िया गुप्ता को सम्मान देते हुए पुरस्कृत किया गया, जबकि प्रिया गुप्ता, दूर्गा लोहिया, मीरा देवी, रींकू सर्राफ, रहिमा खातुन, सौम्या, चंदा देवी, सुंदर माला कुमारी, अल्का देवी, पिंकू पटेल, नेहा कुमारी, शिल्पी पटेल को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में शिक्षिका पल्लवी तिवारी, सलोनी कुमारी, नीतू सर्राफ, माही कुमारी, तरन्नुम खातून, विद्या कुमारी, महक कुमारी, ज्योति कुमारी आदि की भूमिका सराहनीय रहीं। मौके पर राजेश कुमार, रामएकबाल सिंह, कृष्णा सिंह, कामेश्वर पाण्डेय सहित विद्यालय के अन्य शिक्षक मौजूद थे।

भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी की पदयात्रा में हुआ कोष संग्रह

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। जिले में राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम के तहत भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी अंचल परिषद की ओर से पदयात्रा निकाली गई। जिसमें जन कोष संग्रह भी किया गया। इस दौरान सदर प्रखंड के विनोदपुर पंचायत और बरौनी के रतौली और महारथपुर ग्राम में किया गया ' अंबेडकर चौक रतौली स्थित बाबा साहेब डॉक्टर अंबेडकर के मूर्ति पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि देते हुए इसकी शुरूआत की गयी। इस दौरान भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी के कार्यकताओं ने बाबा तेरा मिशन अधूरा, हम सब मिलकर करेंगे पूरा, देश की रक्षा कौन करेगा, हम करेंगे हम करेंगे। संविधान की रक्षा कौन करेगा, हम करेंगे हम करेंगे। जनतंत्र की रक्षा कौन करेगा, हम करेंगे हम करेंगे। जैसे गगनभेदी नारों से पूरा वातावरण गुंजायमान हो उठा ।कॉमरेड इंद्रदेव कुमार की अध्यक्षता में आयोजित नुक्कड़ सभा को संबोधित करते हुए राज्य परिषद सदस्य अनिल कुमार अंजान ने कहा कि देश अघोषित आपातकाल के दौर से गुजर रहा है। देश के तमाम स्वतंत्र रूप से काम करने वाला संवैधानिक संस्था को भी आज मोदी सरकार के मन मुताबिक काम करना पड़ रहा है। धन तंत्र के बाहों में जनतंत्र कराह रहा है ।अंग्रेज की तरह फूट डालो राज करो की नीति पर मोदी सरकार काम कर रही है। बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आज जानलेवा बन चुकी है। कर्नाटक विधानसभा चुनाव परिणाम ने जन विरोधी मोदी सरकार और उनकी पार्टी भाजपा को जिस रूप में जवाब दिया है। उसे और आगे बढ़ाने की जरूरत है। इस पदयात्रा का उद्देश भी भाजपा हटाओ, देश बचाओ, नया भारत बनाओ से है। पदयात्रा में अन्य लोगों के अलावा पार्टी नेता कॉमरेड इंद्रदेव कुमार, रविंद्र पासवान, हरे राम पासवान, जवाहर कुमार शर्मा , गुलशन ठाकुर, सुखदेव सहनी, रामप्रवेश शाह,आदित्य पासवान, संदीप कुमार, अशोक शाह, नरेश शर्मा, संतोष कुमार सहित दर्जनों लोग शामिल थे।

5 दशक बाद पुत्र मिला , मां की आंखों से छलक पड़े खुशी के आंसू

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के कुढनी प्रखंड के .हरपुर बलड़ा पंचायत के चकमाखन गांव निवासी स्व.लालदेव सिंह के दूसरे पुत्र 65 वर्षीय बृज किशोर सिंह 55 साल बाद जब अचानक अपनी मां से मिले तो मां की आंखों से खुशी के आंसू छलक पड़े। 55 साल बाद जब वह शुक्रवार को घर पहुंचे तो वयोवृद्ध माता संपतिया देवी ने अपने दिल के टुकड़े को देख भावुक होकर गले लगा लिया। परिवार में बड़े भाई राज किशोर सिंह,दिलीप सिंह,नंदकिशोर सिंह के साथ भरा पूरा परिवार पचपन वर्षो बाद उनको देख भावुक हो उठा ।सभी उनसे गले मिल ईश्वर से प्रार्थना करने लगे। घरों में खुशहाली दौड़ पड़ी। महिला - पुरुष, ग्रामीणों का तांता लगना शुरू हो गया। बृज किशोर सिंह ने अपनी आप बीती सबों के साथ साझा करते हुए बताया कि वे पांच दशक पहले10साल की उम्र में गांव के एक व्यक्ति के साथ दिल्ली पहुंचे और भटक गए ।इस दौरान पंजाब के जालंधर शहर में एक चाय की दुकान में बिना मजदूरी के रहने लगे ।वहीं कई दशक बीता दिया। बीते तीन माह पहले से मुझे सपने में मां की गोद में सोना,गांव की पगडंडी पर चलकर खेलना,कूदना जैसी बहुत सारी बातें दिमाग में चलने लगी।. मैने कई चिट्ठी में अपना पूरा वाकया लिख घर भेजा,मगर डाक का पता गलत होने से घरवालों के पास चिठ्ठी नही पहुंची ।फिर मैं काफी बीमार हो गया। वहां। लोग मुझे ब्रह्मचारी के नाम बुलाते थे। उन्होने बताया ,आज जहां लोग काम धंधे के दबाव में एक दूसरे के लिए समय नहीं निकाल पाते ,वहीं.एक दिन एक संत ने मुझे किसी तरह ले जाकर मेरठ के एसवीबिपी अस्पताल में भरती कराया।. दो महीने के इलाज के बाद स्वस्थ्य होने पर मेरठ के ही एक सज्जन व्यक्ति ने हापुड़ से दिल्ली ,आनंद विहार के लिए ट्रेन में बैठा दिया. ।रास्ते में पुलिस वालो ने मानवता दिखाई और मैं पटना दानापुर पहुंच गया.। वहा से गांव के लिए चला। लोग मेरी बात नही समझ पा रहे थे. ।ईश्वर की कृपा हुई मुझे एक जगह वैशाली के गोरौल में चंदपुरा स्थित मलंग स्थान ख्याल आया और राहगीरों के सहयोग से बाबा मलंग स्थान पहुंच गया। वहां माथा टेका ।उसके बाद हम वर्षो से बेघर हुए अपने घर पहुंच गए ।. मां का पैर छूते ही मां ने पूछा बेटा बृज किशोर है ?. इस दौरान कई दशकों से भटके पुत्र ,माता और पूरे भावुक परिवार को देख मौजूद भीड़ का भी खुशी के आंसु से आंखे भीग रही थी।

कम्प्यूटर ज्ञान के बिना अधूरा है मनुष्य : मेयर

- कम्प्यूटर शिक्षा प्राप्त कर राष्ट्र का नाम रौशन करें:उप मेयर
- आदर्श परिकल्पना में कम्प्यूटर डिप्लोमा का सर्टिफिकेट व किताब वितरण

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। भारत प्रतिभा का देश है। जहां हर चीज में कम्प्यूटर की भूमिका अहम हो गई है। ऐसे में हमारी नई नस्ल को कम्प्यूटर शिक्षा प्राप्त करने में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना होगा। उक्त बातें मेयर पिंकी देवी ने शहर के पोखरिया वार्ड नंबर -35 छोटी काली मंदिर स्थित भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय अंतर्गत राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद(एनसीपीयूएल) एवं नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (नाइलेट) के सेंटर आदर्श परिकल्पना में आयोजित सर्टिफिकेट व किताब वितरण समारोह को संबोधित करते हुए कही। मेयर पिंकी देवी ने कहा कि कम्प्यूटर ज्ञान के बिना मनुष्य अधूरा है। ऐसे में आदर्श परिकल्पना कम्प्यूटर के साथ साथ उर्दू एवं अंग्रेजी की भी शिक्षा छात्र-छात्राओं को दे रहा है। जो काबिले तारीफ है। वहीं कम समय में आदर्श परिकल्पना ने अपनी छाप छोड़ी है। उन्होंने बताया कि कम्प्यूटर की शिक्षा प्राप्त कर युवा सरकारी व गैर-सरकारी नौकरी प्राप्त कर रहे हैं। यहां बड़ी फौज तैयार हो रही है। उप मेयर अनिता राय ने कहा कि आज के दौर में बच्चों का भविष्य कैसे उज्वल हो, उसपर ध्यान देने की जरूरत है। ऐसे में कम्प्यूटर शिक्षा महत्वपूर्ण हो जाता है। आदर्श परिकल्पना में कम खर्च पर एक वर्ष का सरकारी डिप्लोमा कम्प्यूटर कोर्स कराया जा रहा है। जिसकी मांग हर क्षेत्र में है। उन्होंने छात्र-छात्राओं की उज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि यहां से कम्प्यूटर शिक्षा प्राप्त कर राष्ट्र का नाम रौशन करें। शिक्षा हमारे जीवन में बहुत मायने रखता है। इसलिए शिक्षा के प्रति सभी को जागरूक होने की आवश्यकता है। पूर्व मेयर आलोक कुमार अग्रवाल ने कहा कि आज के समय में बिना कम्प्यूटर शिक्षा के गुजारा नहीं है ।जो लोग कम्प्यूटर कोर्स कर रहे हैं वह हर क्षेत्र में नौकरी कर रहे हैं। छोटी-बड़ी कम्पनियों में रोजगार के अवसर दिए जा रहे हैं। पूर्व मेयर संजय कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि आदर्श परिकल्पना के बच्चों में कुछ कर गुजरने का जज्बा दे रहा है। समय बदल रहा है। हर चीज कम्प्यूटराइज हो रहे हैं। समय की मांग है कि सभी कम्प्यूटर की शिक्षा प्राप्त करें। समय ऐसा आ गया है कि जिसे कम्प्यूटर एवं अंग्रेजी का ज्ञान नहीं है, वह पशु के समान हैं। चूंकि हर जगह टेक्नोलॉजी की मांग है। उन्होंने सर्टिफिकेट प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की। बाइक कम्प्यूटर्स के निदेशक संजय सिंह ने कहा कि सर्टिफिकेट प्राप्त कर लेना बड़ी बात नहीं है। बल्कि कम्प्यूटर का ज्ञान जरूरी है। इसका ज्ञान होगा तो नौकरी आसानी से मिल पाएगा। समय ऐसा है कि हर क्षेत्र में कम्प्यूटर आपरेटर सहित इससे जुड़ी अन्य नौकरियों के लिए भेकेंसियां आती रहती है। हुनर होगा तो मंजिल जरूर मिलेगी। मौके पर वार्ड पार्षद उमेश राय, आदर्श परिकल्पना के सचिव मो आरिफ हुसैन, सेंटर इंचार्ज इनाम, फैकल्टी सौबान अहमद, रक्शिंदा अंजुम, मो इरफान, शगुफ्ता प्रवीण, सुधीर कुमार सहित अन्य उपस्थित थे।

89वें शहादत दिवस पर शहीद बैकुण्ठ शुक्ल को दी गयी श्रद्धांजलि

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। महान स्वतंत्रता सेनानी अमर शहीद बैकुण्ठ शुक्ल के 89वें शहादत दिवस पर बिहार विधान परिषद के सभापति, मंत्री, विधायक सहित अनेक जनप्रतिनिधियों, प्रबुद्धजनों व देशभक्तों ने उन्हें अपनी भावांजलि अर्पित की। अमर शहीद बैकुण्ठ शुक्ल स्मृति समारोह समिति के तत्वावधान में सहारा इंडिया परिवार द्वारा सौंदयीकृत बैरिया गोलंबर पार्क में स्थापित शहीद बैकुण्ठ शुक्ल की प्रतिमा स्थल पर 14 मई को रविवार को आयोजित भव्य श्रद्धांजलि समारोह में लोगों ने शहीद की प्रतिमा पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि अर्पित किया। इस अवसर पर जिला प्रशासन की ओर से पुलिस बल द्वारा शहीद की प्रतिमा को ह्यगार्ड ऑफ ऑनरह्न दिया गया। इस अवसर पर संगठन के अध्यक्ष डॉ रमेश कुमार केजरीवाल की अध्यक्षता तथा सचिव सह वरिष्ठ अधिवक्ता अरुण कुमार शुक्ला के संचालन में आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए बिहार सरकार के सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्री इसराइल मंसूरी ने कहा कि वे गया स्थित केंद्रीय कारागार का नामकरण शहीद बैकुण्ठ शुक्ल के नाम करने की समिति की वर्षों से लंबित मांग को सरकार के समक्ष रखेंगे। पूर्व मंत्री सुरेश शर्मा, मंत्रिमंडल सचिवालय के सेवानिवृत विशेष सचिव उपेंद्र पाण्डेय सहित अन्य ने नामकरण के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए सरकार से त्वरित कार्रवाई की अपील की। समिति के सचिव श्री शुक्ला ने आगत अतिथियों का स्वागत करते हुए गया केंद्रीय कारागार एवं बैरिया बस पड़ाव का नामकरण शहीद बैकुण्ठ शुक्ल के नाम करने की समिति की वर्षों से लंबित मांग को शीघ्र पूरा करने का अनुरोध किया। संगठन के मीडिया प्रभारी आचार्य चंद्र किशोर पाराशर ने कहा कि स्वाधीनता के अमृत वर्ष के अवसर पर राज्य सरकार बैकुण्ठ शुक्ल सहित सभी बिहारी स्वतंत्रता सेनानियों की जीवनी को पाठ्य - पुस्तकों में शामिल करे। इस अवसर पर शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में बिहार विधान परिषद के सभापति देवेश चंद्र ठाकुर, मंत्री इसराइल मंसूरी, विधायक अशोक चौधरी एवं केदार गुप्ता, पूर्व मंत्री सुरेश शर्मा, बिहार सरकार के मंत्रिमंडल सचिवालय पटना के सेवानिवृत्त विशेष सचिव उपेंद्र पांडे, पिछड़ा आयोग भारत सरकार नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष प्रो. भगवान लाल सहनी, पूर्व महापौर सुरेश कुमार, बिहार सरकार के मंत्रिमंडल सचिवालय पटना के सेवानिवृत्त विशेष सचिव उपेंद्र पांडे, सरदार योगेंद्र सिंह गंभीर, सुधीर श्रीवास्तव, श्याम पटेल, चंदेश्वर चौधरी, संजीव साहु, डॉ देवेंद्र प्रसाद सिंह, डॉ. अरुण कुमार सिंह, अजय शर्मा, श्रीमती संगीता, अभिषेक कुमार, संतोष महाराज, संजय सिन्हा , धर्मवीर शुक्ला, केशव चौबे, हरिमोहन चौधरी, जीतेन्द्र साहु, भूपाल भरती, सुदर्शन मिश्र, कृपाशंकर शाही, शिवनन्दन, अविनाश तिरंगा, अखिलेश शुक्ला, दिल्ली उच्च सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता मृतुन्जय चौधरी, मुकेश त्रिपाठी आदि शामिल हैं। इस अवसर सपना राज एवं अल्पना सहाय ने देश भक्ति गीतों की प्रस्तुति की।

आपदा से निपटने को लेकर सरकार लगातार प्रयासरत

- आपदा से निपटने को लेकर जिले के 100 आपदा मित्र 12 दिवसीय गहन प्रशिक्षण के लिए पटना रवाना।

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिले में आपदा मोचन के कार्य में सामुदायिक सहभागिता को बढ़ाने,आपदा के समय आपदा पीड़ितों तक त्वरित सहायता प्रदान करने एवं आपदा के प्रभाव को कम से कम करने के उद्देश्य से जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा के निदेर्शानुसार कुल सौ सामुदायिक वॉलंटियर (आपदा मित्र) को आवासीय प्रशिक्षण हेतु आज पटना रवाना किया गया। बताते चलें कि ये सभी आपदा मित्र पटना में आयोजित बहु आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन विषय पर आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे। आपदा मोचन में स्वेच्छा से भाग लेने की भावना वाले इन आपदा मित्रों का जिले के अलग अलग प्रखंडों से चयन किया गया है। प्रथम चरण में बाढ़ प्रभावित प्रखंडों में मधेपुर, मधवापुर, बिस्फी, जयनगर, खजौली, झंझारपुर, खुटौना, घोघरडीहा, बेनीपट्टी शामिल हैं ।जिले के 500 आपदा मित्रों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है। इस कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए प्रभारी पदाधिकारी जिला आपदा प्रबंधन कोषांग परिमल कुमार ने बताया कि इस बारह दिवसीय कार्यशाला में भाग लेने के उपरांत सभी आपदा मित्रों को आपदा रिस्पॉन्स किट के साथ साथ आई कार्ड और प्रमाण पत्र भी दिए जाएंगे। साथ ही उन सभी का पांच लाख का बीमा भी किया जाएगा। उन्होंने बताया कि आपदा कभी भी आ सकती है मधुबनी जैसे बाढ़ प्रभावित जिले में आपदा प्रबंधन के लिए जिला प्रशासन लगातर प्रयासरत है। जिलाधिकारी द्वारा आपदा पूर्व तैयारियों को लेकर प्रत्येक सप्ताह बुधवार को समीक्षा बैठक की जा रही है। जिसका उद्देश्य आपदा जोखिमों को कम करने के लिए पूर्व से ही तैयारियों की लगातार समीक्षा की जा सके। उन्होंने कहा कि आपदा प्रबंधन के लिए आपदा नहीं हो भारी, यदि पूरी हो तैयारी की अवधारणा को बल देते हुए सामुदायिक चेतना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस प्रकार के कार्यक्रम में भाग लेना फलदाई साबित हो सकता है। इस दौरान सभी आपदा

संक्षिप्त खबरें

16 लीटर महुआ शराब के साथ मोटरसाइकिल जब्त

संग्रामपुर (मुंगेर)। थाना क्षेत्र के अलग-अलग स्थानों से 36 लीटर महुआ शराब एक मोटर साइकिल सहित दो व्यक्ति को संग्रामपुर पुलिस ने गिरफ्तार कर कोरोना जांच के बाद मुंगेर न्यायालय भेजा। बेलहर थाना क्षेत्र के लक्ष्म नियातरी गांव के बिरजू मरांडी को 16 लीटर महुआ शराब एवं एक मोटर साइकिल के साथ संग्रामपुर बाजार से गिरफ्तार किया। वही थाना क्षेत्र के रायकड़ गांव के समीप एक व्यक्ति को 20 लीटर महुआ शराब के साथ गिरफ्तार किया। गिरफ्तार व्यक्त थाना क्षेत्र के झिकुली गांव के पंकज मंडल के रुप में पहचान हुई है, थानाध्यक्ष रंजन कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर की गयी छापेमारी में अलग अलग स्थानों से दो शराब तस्करों को गिरफ्तार किया गया। दोनो तस्कर पर मध निषेध अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर मुंगेर न्यायालय भेजा गया। छापेमारी में संग्रामपुर थाना के पीटीसी विश्वरथ घोष के आलावे पुलिस बल शामिल थे।

गोलीबारी की घटना को लेकर थाना में दिया लिखित आवेदन

असरगंज। असरगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत मासुमगंज बाजार के फर्नीचर व्यवसायी रंजीत शर्मा ने असरगंज थाना में लिखीत आवेदन दिया है। इस संबंध में असरगंज थाना अध्यक्ष कौशलेंद्र कुमार ने बताया कि आवेदन प्राप्त हुए हैं जिनमें कमरांय के लक्ष्मी सिंह के पुत्र रंजीत सिंह के द्वारा बच्चे के खिलौना बनाने को लेकर विवाद हो गया इस विवाद के दौरान रंजीत सिंह ने गोली चला दिया। इस घटना में फर्नीचर व्यवसायी बाल-बाल बचा। प्राप्त आवेदन के आधार पर पुलिस मामले की जांच कर रही है। आवेदन पर कोई कार्यवाही नहीं किया और ना ही प्राथमिकी दर्ज की है।

दो पक्षों के बीच चली गोली, जांच में जुटी पुलिस

असरगंज। असरगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत मकवा गांव के महेश्वरी स्थान के पास पुरानी जमीन को लेकर दो पक्षों में मारपीट व गोली बारी की घटना को अंजाम दिया गया। इस संबंध में असरगंज थाना अध्यक्ष कौशलेंद्र कुमार ने बताया कि घटना की जांच की जा रही है। जांचोपरांत दोषियों पर कार्रवाई की जायेगी।

युवती का अपहरण का मामला खड़गपुर थाना में दर्ज

हवेली खड़गपुर। खड़गपुर थाना क्षेत्र में बेगूसराय थाना क्षेत्र के पडौडा गांव के एक युवती का अपहरण का मामला हवेली खड़गपुर थाना में दर्ज की गई है। इस संबंध में थाना अध्यक्ष नीरज कुमार ने बताया कि इस मामले में युवती के पिता के बयान पर पहाड़पुर गांव निवासी विशाल कुमार और प्रसन्डो गांव निवासी फंदूश सिंह की पत्नी वंदना देवी द्वारा बहला-फुसलाकर शादी की नियत से युवती का अपहरण किया गया है।

बिना नंबर प्लेट के ई रिक्शा का हो रहा है सड़क पर परिचालन

मुंगेर। जिला परिवहन पदाधिकारी मुंगेर के फरमान के बावजूद जिले के हवेली खड़गपुर तारापुर, संग्रामपुर, असरगंज, वरियारपुर, जमालपुर और धाराह की सड़कों पर बिना नंबर प्लेट के धड़ल्ले से ई रिक्शा का परिचालन हो रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार सड़कों पर बिना नंबर प्लेट ई-रिक्शा का परिचालन कानून तौर पर अवैध है कोई भी डीलर बिना एच एस आर वी नंबर के ई-रिक्शा की बिक्री नहीं कर सकते हैं अथवा सड़क पर नंबर के बिना ई रिक्शा का परिचालन करना कानूनन अपराध है, अगर बिना नंबर के ई-रिक्शा का परिचय सड़क पर होता है तो चालक के साथ-साथ डीलरों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की जा सकती है। इसके बावजूद भी जिला परिवहन विभाग ने आज तक इस संबंध ई रिक्शा चालक और डीलरों के खिलाफ कोई कार्यवाही के लिए कदम नहीं उठाया है। यह अलग बात है कि ई रिक्शा संघ के अध्यक्ष और स्थानीय जिले के थानेदारों की बैठक कर जिला परिवहन पदाधिकारी जियाउल्लाह ने चेतावनी जारी कर दी है लेकिन इसका पालन समाचार लिखे जाने तक ना तो किसी थानेदारों ने कार्रवाई की है और ना ही जिला परिवहन पदाधिकारी ने ही कोई कानूनी कारवाही की है जिससे सरकार को राजस्व की क्षति हो रही है।

मटन चावल खाने पहुंचे लोगों को मिली पुलिस की मार

मुंगेर। जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह स्थानीय सांसद राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह की ओर से रविवार को पोलो मैदान में महागठबंधन कार्यकताओं के सम्मान में मटन चावल भोज का आयोजन किया गया। कार्यकर्ता सम्मान महाभोज में जिले के लगभग 25 हजार कार्यकताओं के शामिल होने की संभावना व्यक्त किया गया था लेकिन कार्यकताओं की संख्या अत्यधिक हो जाने के कारण कार्यकताओं को मटन चावल की आपूर्ति नहीं हो पा रहा था इस कारण महागठबंधन के कार्यकर्तात नाराज हो गया और हंगामा करने लगे। इसको लेकर मटन चावल खाने पहुंचे महागठबंधन के कार्यकताओं को पुलिस के द्वारा पीटा जाने लगा जिसके कारण स्थल पर अफरातफरी का माहौल बन गया।

जल संकट से लोग हुए त्राहिमाम

अधिकारी बने अनजान, जल संकट से है लोग परेशान

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जल, जीवन, हरियाली के स्लोगन को लेकर सरकार लगातार योजनाओं को पूरा करने को लेकर सजक्ता के साथ पूरा करने की दिशा में अधिकारियों को निर्देशित करती रही हैं। वही भागलपुर स्मार्ट सिटी के गलियारों में मौसम में तेज रफ्तार से तपीश बढ़ोतरी होने के साथ जल संकट गहराने से लगा है, लोगों के बीच जल संकट को लेकर त्राहिमाम की स्थिति उत्पन्न हो गई है। नगर निगम प्रशासन स्मार्ट सिटी के नाम पर स्मार्ट पैसे तो वसूल रही हैं, लेकिन शहरवासियों को जल संकट से निजात दिलाने में विफल साबित हो रही है। इन दिनों नगर निगम क्षेत्र के वार्ड नंबर 7 के रहने वाले लोगों को पेजल को लेकर काफी मशक्कत करनी पड़ रही हैं, पानी की घोर समस्या को लेकर विगत एक माह से लोग जद्दोजहद में लगे हुए हैं। मामले को लेकर बताया जा रहा है कि वार्ड नंबर 7 में पेजल को लेकर लगाये गए बोरिंग पिछले लगभग एक माह से खराब पड़ा हुआ है, जिसे सामाजिक स्तर से ठीक कराने का प्रयास भी किया गया था, लेकिन ठीक नहीं हो पाया था। उक्त समस्या से जुड़ी सूचना नगर आयुक्त और नगर निगम के जल संसाधन विभाग के अधिकारी को दी गई थी, लेकिन मिली जानकारी को लेकर भी संबंधित अधिकारियों द्वारा उक्त दिशा में कोई भी पहल व ठोस कारवाई अब तक नहीं की गई। जिससे वार्ड नंबर 7 में रह रहे लोगों के बीच जल संकट को लेकर त्राहिमाम है।

वही मामले को लेकर वार्ड नंबर 7 स्थित बोरिंग के ऑपरेटर ने बताया कि बोरिंग की मरम्मत के लिए कई बार विभाग को सूचना दी गई थी। जिससे विभाग के द्वारा जल्द से जल्द इसे ठीक करा कर मशीन को चालू करा दिया जाएगा, जिसे पानी की किल्लत को लेकर आयी समस्या समाप्त हो जाएगी। लेकिन विभाग द्वारा को ध्यान नहीं दिया गया है, वही मामले को लेकर समाज सेवी नेजाहत अंसारी और ग्रामीणों ने कहा कि वार्ड नंबर 7 में लगभग 10 हजार की आबादी है, जो जल संकट से जूझ रही है। वही लोग अगल- बगल के वार्ड में जाकर पेजल हेतू पानी निर्यात कर अपना काम चलाते हैं, गनीमत यह है कि इतनी बड़ी आबादी वाले जगहों पर एक पियाऊ का निर्माण किया गया है, जिससे लोग थोड़ी-थोड़ी पानी लेकर काम चलाते हैं। ज्ञात हो कि जल संकट को लेकर जिलाधिकारी के द्वारा जलनल मरम्मत कार्य हेतू ग्रीष्म ऋतु परिवर्तन के पूर्व क्षेत्र में झंडी दिखाकर रवाना किया गया था लेकिन उक्त कर्मचारियों द्वारा क्षेत्र में समय व्यतीत कर अवैध रूप से सरकारी खर्च का दरुपयोग किया गया है, इससे साफ तौर पर देखा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र ही नहीं ग्रामीण इलाकों में भी जल संकट को लेकर लोग जद्दोजहद कर रहे हैं।

बीएन कॉलेज में पुराने खंडहर पड़े भवन का होगा जीर्णोद्धार : कुलपति

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। बीएन कॉलेज के पुराने खंडहर पड़े भवन का टीएमबीयू के कुलपति प्रो./डॉ. जवाहरलाल ने निरीक्षण किया। इसी क्रम में कुलपति ने बताया कि उक्त पुराने खंडहर भवन परिसर में डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन का नया भवन निर्माण कार्य किया जायेगा। जिसके लिए एकेडमिक काउंसिल और सिंडिकेट की बैठक में यह पारित हो गया है। वही कार्य निर्माण को लेकर सीनेट में पास कराकर इसे राजभवन मंजूरी के लिए भेज दिया जाएगा। वही उक्त कार्य शुरूआत को लेकर कुलपति के द्वारा खंडहर पड़े बीएन कॉलेज परिसर में पहुंच कर निरीक्षण किया है। इस दौरान कुलपति के द्वारा यहां अतिक्रमण की गई जगहों का भी जायजा लिया, साथ ही भवन के आसपास के हालात पर जायजा लेने के साथ कुलपति काफी नाखुश दिखे। इस क्रम में कुलपति ने बताया कि वीरान पड़े खंडहर भवन परिसर में असामाजिक तत्व भी इकट्ठा होते हैं, और यहां पर शराब गांजा स्मैक आदि का सेवन का बाजार भी चलता है। जिसके रोकथाम को लेकर कुलपति ने रजिस्ट्रार और इंजीनियर को भवन स्थलों के चारों तरफ दीवार देकर घेराबंदी करने का निर्देश दिया है। वही अतिक्रमण कर रह रहे लोगों को एक सप्ताह के अंदर जगह खाली करने का आदेश जारी कर दिया है।

पांच अभियुक्त को किया गिरफ्तार

नाथनगर (भागलपुर)। वरीय अधिकारियों के निर्देश पर लंबित प्रकरणों के निष्पादन मामले में नाथनगर थाना पुलिस ने पूर्व से लंबित व वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी की दिशा में क्षेत्र के कई इलाकों में लगातार दबिश दे रही हैं। इसी कड़ी में आलमपुर व शंकरपुर इलाके से 5 नामजद अभियुक्त को गिरफ्तार कर कानूनी प्रक्रिया के साथ न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। वही मामले को लेकर नाथनगर थाना के प्रभारी थानाध्यक्ष मो. महताब खान ने बताया कि एससी, एसटी मामलों में फागो मंडल, फुडो मंडल, बिदेश्वरी यादव और अनुपलाल मंडल को अलालपुर शंकरपुर गांव से गिरफ्तार किया गया।

अग्नि सुरक्षा को लेकर जागरूकता रथ को हरि झंडी दे किया रवाना

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। गर्मी के तेज रफ्तार से तपीश में हुई बढ़ोतरी से लगातार क्षेत्र में अगलगी की घटना बढ़ रही हैं। उक्त मामले को लेकर जीवन जागृति सोसायटी एवं जदयू चिकित्सा प्रकोष्ठ भागलपुर के संयुक्त तत्वावधान में अग्नि सुरक्षा को लेकर जिले के सैंडिस कंपाउंड मैदान परिसर से जागरूकता रथ निकाली गई है, इस रथ को सामूहिक रूप से जिला अग्निशमन पदाधिकारी हरेंद्र कुमार सिंह, जीवन जागृति सोसायटी के अध्यक्ष अजय कुमार सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया है, जो जिले के आसपास इलाके में अवस्थित दो सौ गांव में पहुंच कर लोगों को अगलगी की घटना से बचने के जानकारियां सांझा करेगी साथ ही लोगों को अग्नि बचाव कार्य को लेकर विधिवत तौर पर जानकारी व प्रयोग की विधि बताएगी। यह जागरूकता रथ लोगों को 14 मई से 20 मई तक जागरूक करने का काम करेगी, साथ ही 2 सौ गांव के झोपड़ी के मकान एवं कच्चे मकान में रह रहे लोगों को अगलगी से बचने की विधि को बताने के लिए जीवन जागृति सोसाइटी के साथ-साथ जदयू चिकित्सा प्रकोष्ठ ने विशेष पहल की है। यह जागरूकता रथ जिले के हर प्रखंड के हर गांव गांव तक पहुंच कर लोगों को जागरूक करने का काम करेगी। इसी क्रम में आम लोगों को जागरूक करने की दिशा में जिला अग्निशमन पदाधिकारी हरेंद्र कुमार सिंह ने आम लोगों से अपील करते हुए कहा कि हम लोगों को सावधानियां बरतनी चाहिए, जिससे अग्निकांड का विकराल रूप कभी सामने देखना नहीं पड़े, उन्होंने कहा कि महिलाएं खाना बनाने के बाद चूल्हे को पूर्णरूपेण बुझा दे, वही खाने को सुबह या शाम में बनाए, दोपहर में नहीं और बगल में पानी की व्यवस्था अवश्य करके रखें। वही जीवन जागृति सोसायटी के अध्यक्ष अजय सिंह ने बताया कि पुरुष जो भी नशे में बीड़ी सिगरेट का सेवन करते हैं, यत्र तत्र ना फेंके इससे भी आग लगने की संभावना बनी रहती है। कार्यक्रम के दौरान संस्थान के दर्जनों सदस्य व शहर के कई गणमान्य लोग मौजूद थे।

पशुपालन विभाग के कर्मचारी न्याय की गुहार ले पहुंचे, डीआईजी कार्यालय

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। मुखिया जी तो मुखिया जी मुखिया जी के पति भी किसी से कम नहीं है, उनकी दबंगई अगर देखनी हो तो सीधे आ जाइए बांका जिला अंतर्गत ककवारा के पिपरा गांव, वह किस कदर लोगों को परेशान करते हैं, इसका जीता जागता सबूत आपको यही के लोगो से देखने को मिलेगा। बांका जिला अंतर्गत ककवारा के पिपरा गांव के मुखिया पति की दबंगई से पीड़ित होकर कटोरिया में कार्यरत पशुपालन विभाग से चतुर्थवर्गीय कर्मी परमेश्वर यादव अपनी न्याय की फरियाद ले डीआईजी विवेकानंद के कार्यालय पहुंचे है। जहां उन्होंने बताया कि मुखिया के दबंगई से तंग आकर न्याय की गुहार ले डीआईजी के समक्ष प्रस्तुत है। मामले से आहत हुए पीड़ित परमेश्वर यादव ने बताया कि पंचायत के मुखिया पूजा रंजन के पति रंजन यादव जबरन हम लोगों के फसल को काट लेते हैं, उनके व समर्थकों ने 5 बीघा खेत में लगे मकई की फसल, 50 क्विंटल छड़, 50 बोरी सीमेंट व 20 हजार ईट को उठा ले गया है, वही खेतों में मूंग की फसल तैयार हो रही है उस पर भी ट्रैक्टर चलवा दिया गया है, उनकी दबंगई से हम लोग काफी परेशान व आहत हो कर न्याय के लिए भागलपुर डीआईजी कार्यालय मिलने पहुंचे हैं।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय को आधार दिलाने हेतू शिक्षा मंत्रालय हुए सक्रिय

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिले के कहलगांव अनुमंडल अवस्थित विक्रमशिला विश्वविद्यालय की बदहाली को लेकर लगातार खबर का प्रकाशन किये जाने के साथ ही उनके जीणोद्धार के लिए कई बार राजनीतिक दल व सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा सरकार से गुहार लगाते रही हैं, लेकिन प्राचीन काल की धरोहर विक्रमशीला विश्वविद्यालय के बदहाली पर केंद्रीय विश्विद्यालय के स्तर पर निर्माण कार्य में लम्बे समय तक देरी किये जाने को लेकर बीते दिनों खबर प्रकाशन के बाद भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय इस मामले में फिर सक्रीय होने की बात सामने आई है। मंत्रालय ने बिहार के शिक्षा विभाग के सचिव को एक पत्र जारी कर कहा है कि मलकपुर और अंतीचक मौजा की 215 एकड़ जमीन की अधिग्रहण की दिशा में अविलंब कार्रवाई शुरू करे। उक्त जारी पत्र के आलोक में स्थानीय लोगों के बीच केंद्रिय विश्विद्यालय के निर्माण की एक आश पुनः जग गयी है। विक्रमशीला विश्विद्यालय के भग्नावशेष के बगल में केन्द्रीय विश्विद्यालय की निर्माण के लिये केंद्र अड़ा है, लेकिन राज्य का कहना है कि उस जमीन पर एससी, एसटी के दर्जनों घर हैं, साथ ही उक्त क्षेत्रों के आसपास लगभग 35 सौ पेड़ लगे हैं। वहीं मामले को लेकर शिक्षा विभाग ने डीएम को रिपोर्ट देने को निर्देशित किया है। उक्त मामले के जबाब में डीएम सुब्रत सेन ने कहा कि जमीन का प्रस्ताव हमने भेजा था। इसमे भारत सरकार की टीम पहले आकर स्वीकृति प्रदान की थी, फिर दूसरी टीम आयी, उन्होंने कुछ आपत्ति जाहिर करते हुए कार्य पर रोक लगा दी थी। जिस तरह का निर्देश विभाग का प्राप्त होगा, उक्त दिशा में काम किया जाएगा। जमीन अधिग्रहण का आदेश आता है, तो उस पर कार्य किया जाएगा। ज्ञात हो कि नरेंद्र मोदी ने 2014 में चुनावी मंच से हवाई अड्डा में लोगों से वादा किया था, कि प्राचिन विक्रमशीला विश्विद्यालय का गौरव लौटाया जाएगा, केंद्रीय विश्विद्यालय का निर्माण किया जाएगा। इसके बाद केंद्र से 5 सौ करोड़ रुपया मिला है, लेकिन जमीन अधिग्रहण कार्य प्रक्रिया अधड़ में चल रहा है।

मिनी गन फैक्ट्री का किया उद्भेदन, दो अपराधी हुआ गिरफ्तार

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। एक तरफ शहर में लगातार अपराध का ग्राफ बढ़ता जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ जिला पुलिस महकमे के काबिल पदाधिकारी व उनकी पुलिस टीम इस पर लगाम लगाने में विफल साबित हो रही हैं, पुलिस आपराधिक मामले को लेकर कई हथकंडे अपना रही है, बावजूद इसके अपराधी अपने मंसूबों को पूरा करने से बाज नहीं आ रहे हैं। इसी कड़ी में पुलिस ने एक बड़े मिनी गन फैक्ट्री का भी उद्भेदन किया गया। मामले को लेकर बताया जा रहा है कि वरीय पुलिस अधीक्षक आनंद कुमार को गुप्त सूचना मिली थी कि लोदीपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत उस्तु गांव के समीप कुछ लोगों द्वारा अवैध रूप से मिनी गन फैक्ट्री का संचालन किया जा रहा है। उक्त मिली जानकारी के आलोक में नगर पुलिस अधीक्षक अमित रंजन और पुलिस उपाधीक्षक विधि व्यवस्था डॉ. गौरव कुमार के नेतृत्व में एक टीम गठित की गई। गठित टीम को उक्त मिली जानकारी के तहत छापेमारी दल के द्वारा प्राप्त सूचना के आलोक में लोदीपुर थाना अंतर्गत उस्तु गांव में पहुंच कर क्षेत्र के अलग-अलग स्थानों पर छापेमारी की। इस दौरान छापेमारी टीम को गांव में अवैध रूप से हथियारों का कारोबार हेतू संचालित मिनी गन फैक्ट्री का उद्भेदन किया गया, साथ ही छापेमारी के दौरान पुलिस टीम ने मौके से दो अपराधियों को गिरफ्तार भी किया गया है। गिरफ्तार अपराधियों में मो. यूनुस और जिब्राइल शामिल हैं। वहीं मामले की जानकारी एसएसपी आनन्द कुमार ने अपने कार्यालय बेस में एक प्रेसवार्ता के दौरान दी। उन्होंने बताया कि यह छापेमारी रात्रि के तकरीबन 1:00 बजे से प्रारंभ होकर 5:00 पूरी कर ली गई थी। उक्त स्थल से पांच देसी पिस्टल, 11अर्ध निर्मित कटिंग वायरल, 8 खोखा, नो पिस्टल का जिंदा गोली एवं मिनी गन फैक्ट्री में प्रयुक्त होने वाले कई उपकरण बरामदगी हुई है। वहीं लॉ एण्ड ऑर्डर डीएसपी ने कहा कि गिरफ्तार दोनों अपराधियों का अपराधिक इतिहास खंगाला जा रहा है, ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि बाहर किसी बड़े मिनी गन फैक्ट्री सरगना से भी इनका तालुकात है। उक्त मामले को लेकर जांच अभी जारी है। ज्ञात हो कि विगत माह पूर्व एक मिनी गन फैक्ट्री का सफल उद्भेदन पटना के अपराध शाखा द्वारा नाथनगर थाना इलाके के चम्पानगर स्थित एक किराये के घर में दबिश देकर किया गया था। उक्त मामले में फरार अभियुक्तों की गिरफ्तारी अबतक पुलिस नही कर पाई है।

कर्नाटक चुनाव में भारी बहुमत से हुई जीत पर कांग्रेसियों ने एक दूसरे को खिलाई मिठाई

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। कर्नाटक चुनाव में कांग्रेस की भारी बहुमत के साथ हुई जीत से किंग बनकर उभरी है। इस जीत को लेकर खलीफाबाग चौक पर कांग्रेस दल के कई प्रकोष्ठ के सहयोगी कार्यकताओं ने खुशी जाहिर की। इस दौरान अपनी खुशी जाहिर करने के साथ कांग्रेसियों ने एक-दूसरे को मिठाई लेकर रंग गुलाल लगाने के साथ आतिशबाजी कर खुशियों का इजहार किया। इसी क्रम में कांग्रेसियों ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी का पतन यहीं से शुरू हो गया है, वह सिर्फ एक दूसरे को लड़ा कर लोगों में द्वेष पैदा करने की राजनीतिक कर रहे हैं। वहीं कांग्रेस के राहुल गांधी भारत जोड़ो यात्रा निकालकर लोगों को जोड़ने का काम कर रहे हैं, इस खुशी के मौके पर कांग्रेस के कई प्रकोष्ठ के दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद थे।

गोलीबारी घटना के मुख्य आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

नाथनगर (भागलपुर)। विगत दिनों ललमटिया थाना क्षेत्र के सुभाष चौक स्थित दिन दहाड़े सरे आम गोली फायरिंग मामले में फरार अभियुक्त को पुलिस ने गुप्त रूप के तहत मिली जानकारी पर मधुसुदनपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत हरिजनटोला इलाके से पुलिस ने छापेमारी कर फरार अभियुक्त मिथुन मंडल को उसके सुसराल से गिरफ्तार किया है, साथ ही पुलिस ने गिरफ्तार मिथुन मंडल के पास से एक देशी कट्टा, तीन जिंदा कारतूस को बरामदगी की है। गिरफ्तार मिथुन घटना के बाद से सुसराल में छुप कर रह रहा करता था। ज्ञात हो कि ललमटिया थाना अंतर्गत सुभाषपार्क के समीप विगत शुक्रवार की देर शाम नाथनगर ऊपरटोला के मो. खालिद पर जानलेवा हमला कर दिया था, इस दौरान आरोपी मिथुन और उसके सहयोगी दोस्त ने ताबड़तोड़ गोली चलानी शुरू कर दी थी। जिसमे पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए उसके दोस्त नूरपुर के आतिश कुमार को मौके से गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है।

वही घटना को लेकर बताया जा रहा था कि सजौर थाना क्षेत्र के दरियापुर सरोख के मिथुन मंडल व मो. खालिद के बीच पैसे के लेन देन को लेकर काफी दिनों से विवाद चल रहा था। गिरफ्तार मिथुन वाहन चालक के रूप में मो.खालिद के पास काम कर रहा था। इसी क्रम में मिथुन के द्वारा गरबरी किये जाने के मामला सामने आने के बाद उसे काम से हटा दिया गया था। वही घटना के बाद से पुलिस मुख्य आरोपित की गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी कर रही है।

अगलगी की घटना में दो घर जलकर राख, आग में झुलसने से एक वृद्ध की हुई मौत

गोराडीह (भागलपुर)। जिले भर में लगातार आगजनी की घटनाएं सामने आ रही है, वही उक्त अगलगी की घटना में गोराडीह प्रखंड के नदियामा गांव में एक 85 वर्षीय वृद्ध की आग में झुलसने से मौत हो जाने का मामला प्रकाश में आया है। घटना को लेकर बताया जा रहा है कि गोराडीह प्रखंड के नदियामा पंचायत के वार्ड संख्या 9 में शनिवार की देर शाम चूल्हा की लूत्ती उड़ने से दो घरों में अचानक घर में आग लग गई, आग लगते ही आसपास के लोगों में खलबली मच गई। वहीं स्थानीय लोगों की मदद से आग पर काबू पाने की कोशिश की लेकिन लगी आग पर काबू नहीं पा सके। आग इतनी तेज व भयावह स्थिति में थी की आग की लपटों में आए गांव के एक 85 वर्षीय वृद्ध प्रसादी मंडल भी झुलस गया, उन्हें बचाने गए एक और युवक आग की चपेट में झुलस गया था। वही ग्रामीणों के सहयोग से आग पर किसी तरह काबू पाया जा सका था। वही झुलसे हुए 85 वर्षीय प्रसादी मंडल की मायागंज अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। आग की चपेट में आने से दोनों घरों में रखा हुआ लाखों का सामान जलकर राख की ढेड़ में तब्दील हो गया। वही अगलगी की सूचना मिलते ही गोराडीह आलाधिकारी व स्थानीय थाना पुलिस टीम मौके पर पहुंच कर अगलगी की घटना में ग्रामीणों के हुए नुकसान का आंकलन कर उन्हें मुआवजा राहत दिये जाने की कवायद शुरू कर दी है। वही दूसरी तरफ मायागंज अस्पताल में झुलस कर हुई मौत को लेकर ग्रामीण इलाके में गमगीन माहौल छाया हुआ है।

विदाई सह सम्मान समारोह का आयोजन

संग्रामपुर (मुंगेर) थाना में कार्यरत पीटीसी कॉन्स्टेबल विश्वरथ घोष एवं लखन प्रसाद का विदाई सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया विदाई सह सम्मान समारोह के दौरान थानाध्यक्ष रंजन कुमार, एस आई नवल किशोर यादव, ब्यूटी कुमारी, एएसआई केदार प्रसाद यादव, मुन्सी मनीष कुमार दफेदार बलराम कुमार निराला एवं अन्य पुलिस बल के द्वारा माला पहना कर एवं अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। थानाध्यक्ष रंजन कुमार ने बताया दोनो पुलिस कांस्टेबल विश्वरथ घोष और लखन प्रसाद ने अपने डियूटी के दौरान इमानदारी एवं निर्भीक होकर की।

छह विकेट से भागलपुर टीम को हराकर खिताब पर कब्जा जमाया

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। प्रखंड क्षेत्र के मौजमपुर में स्थित संजीव सिंह क्रीड़ा मैदान पर आयोजित प्रेसिडेंट कलाम मेमोरियल क्रिकेट टूनार्मेंट के फाइनल मुकाबले में र्शि 11 कहर गांव की टीम ने सानू अली वन भागलपुर की टीम को एकतरफा मुकाबले में 6 विकेट से शिकस्त देकर खिताब पर कब्जा कर लिया। निर्धारित 15 ओवर के मैच में सानू एकादश भागलपुर की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया।

कहलगांव की टीम के गेंदबाजों ने शुरूआत से ही भागलपुर के बल्लेबाजों पर अपना सिकंजा कसना शुरू कर दिया। नियमित अंतराल पर भागलपुर टीम विकेट के गिरने का सिलसिला जारी रहा और टीम के बल्लेबाज कभी खुल कर बल्लेबाजी नहीं कर पाया। टीम की तरफ से कृष्णा ने सबसे अधिक 30 रन बनाये। कहलगांव ने रविश राणा ने बेहतरीन गेंदबाजी करते हुए अपने 3 ओवर के स्पेल में मात्र 6 रन देकर 3 बल्लेबाजों को पवेलियन वापस भेजा। भागलपुर टीम 14.2 ओवर में अपने सभी विकेट खोकर 125 रन ही बना पायी। लक्ष्य का पीछा करने उतरी कहलगांव ने ताबड़ तोड़ शुरूआत की। खासकर सलामी बल्लेबाज रविश राणा ने ताबड़तोड़ 9 गेंद पर 33 रन तथा सचिन के 21 बॉल पर 53 रन की पारी के बदौलत 9.2 ओवर में 4 विकेट खोकर आसानी से लक्ष्य हासिल कर लिया। मैच के बाद पुरस्कार वितरण समारोह में टूनार्मेंट के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज का पुरस्कार सानू मिर्जा को, टूनार्मेंट के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज का पुरस्कार छोटू को तथा टूनार्मेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी एवं मैच के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार कहलगांव टीम के हरफनमौला खिलाड़ीरविश राणा को प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि के द्वारा दोनों टीमों को विजेता एवं उप विजेता की ट्रॉफी प्रदान की गई।

मटन पुलाव भोज जनता को गुमराह करने के लिए है: शैलेंद्र चौधरी

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर सांसद के द्वारा मुंगेर लोकसभा में दिये जा रहे कार्यकर्ता सम्मान महाभोज मटन पुलाव का भोज का कारवां आज मुंगेर जिला के पोलो मैदान में पहुंचा। जहां पर मटन चावल खाने पहुंचे लोगों पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा नेता सह जमालपुर विधानसभा प्रभारी शैलेन्द्र चौधरी ने कहा मुंगेर के निष्क्रिय सांसद ललन सिंह के द्वारा दिया जा रहा भोज जनता को गुमराह करने के लिए है। उन्होंने कहा कि सांसद महोदय ने अपने कार्यकाल में क्षेत्र के विकास के लिए कोई कार्य नहीं किया और ना ही क्षेत्र के लोगों के बीच में कभी गए। श्री चौधरी ने कहा कि मुंगेर लोकसभा क्षेत्र की जनता इस बार मन बना चुकी है, ऐसे निष्क्रिय सांसद को हराकर घर भेजेगी। पुराने समय में वोट के लिए लोग नोट और दारू का इंतजाम करते थे, आज के सांसद वोट के लिए लोगों को निरीह प्राणी का हत्या कर मटन पुलाव का भोज दे रहे हैं, और जनता को डराना चाह रहे हैं कि अगर जनता ने उन्हें वोट नहीं दिया तो उनका भी इसी तरह से खात्मा किया जाएगा। क्योंकि यह तो जंगलराज है यहां आए दिन किसी ना किसी की हत्या कहीं पर लूट बलात्कार होता रहता है और जिस शराबबंदी को लेकर अपना पीठ थपथपाते हैं वही शराब को घर-घर पहुंचा कर पार्टी फंड जमा कर इस तरह के भोज में खर्चा किया जा रहा है। श्री चौधरी ने कहा कि बिहार को नशा मुक्त करना है तो नीतीश कुमार से कहना चाहता हूं शराबबंदी को पूर्ण रूप से बंद कीजिए ऐसा नहीं कि शराबबंदी के नाम पर कमीशन खाकर आपकी पार्टी अपना फंड इकट्ठा करें क्योंकि अगर ऐसा हो नहीं रहा तो शराब पीकर मौतें कैसे हो रही हैं।

संक्षिप्त खबरें

पूर्व मंत्री ने फिल्म द केरला स्टोरी को टैक्स मुक्त करने का किया मांग

गया। पूर्व कृषि मंत्री सह नगर विधायक डॉ प्रेम कुमार ने फिल्म द केरल स्टोरी को देखने के बाद अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि समाज को सजग, सशक्त एवं सावधान करने वाली फिल्म द केरल स्टोरी में देश हित के प्रति वास्तविक कहानियां दशार्यी गई है। उन्होंने उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश सहित कई अन्य राज्यों में फिल्म को टैक्स फ्री करने के बाद बिहार में भी इस फिल्म को टैक्स फ्री करने की मांग की है ताकि बिहार की सर्वाधिक जनता फिल्म को देखकर एक बेहतर संदेश प्राप्त कर सके। आज जिस तरह से हमारी देश की अस्मिता पर चोट पहुंचाया जा रहा है। भारत की जनसंख्या संतुलन को बिगाड़ने का प्रयास चल रहा है।उसे रोकने ले लिए ऐसे आतंकी संगठन के प्रयास से सावधान रहने की हमें जरूरत है। द केरल स्टोरी आतंकवाद की सच्चाई को उजागर करने वाली फिल्म है। विधायक ने समस्त बिहार वासियों से फिल्म देखने का आह्वान किया है।

पिकअप ने बाइक सवार तीन दोस्तों को मारी टक्कर

आरा। भोजपुर जिले के बिहिया थाना क्षेत्र के बिहिया साइकिल फैक्ट्री के समीप पिकअप ने बाइक सवार तीन दोस्तों को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में तीनों गंभीर रूप से जख्मी हो गए। जिसके बाद स्थानीय लोगों की मदद से तीनों को इलाज के लिए बिहिया पीएचसी ले जाया गया। जानकारी के अनुसार जख्मियों में पश्चिम बंगाल के पुरलिया जिला के रघुनाथपुर थाना क्षेत्र के खजुरा गांव निवासी मानिक जायसवाल का 40 वर्षीय पुत्र भगत जायसवाल,मनाच कोइवक्तो का 20 वर्षीय पुत्र जीतन कोइवक्तो एवं भक्ति चंद्र का 20 वर्षीय पुत्र अमित चंद्र शामिल है। वह तीनों बिहिया थाना क्षेत्र के ओसाई गांव स्थित पायल टेंट हाउस में काम करते हैं। इधर जख्मियों के टेंट हाउस के मालिक रवि शंकर ने बताया कि वह तीनों उनके पायल टेंट हाउस में काम करते हैं। लग्न का काम खत्म होने के कारण वह तीनों शनिवार की रात वापस विभूति एक्सप्रेस ट्रेन से अपने गांव लौटने वाले थे।

भीषण गर्मी से जंगली जानवर परेशान

चारपोखरी। चरपोखरी प्रखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में 2 दिनों से पड़ रही लगातार भीषण गर्मी से ग्रामीण से लेकर जंगली जानवर तक परेशान हो गए। दोपहर होते ही लोग अपने घरों में दुबक जा रहे हैं। प्रखंड के जलाशयों के पानी सुखने से जगली जानवर हिरण नीलगाय सियार पशु पक्षी सभी परेशान होने लगे हैं। पानी के अभाव में यह जंगली जानवर गांव के नजदीक पहुंचकर अपने प्यास को बुझा रहे हैं। सिंचाई विभाग द्वारा नहरों में पानी नहीं छोड़े जाने के कारण पशु पक्षी से लेकर सभी जानवर परेशान है। इंग्लिश निवासी अरविंद सिंह डेगोडीहरी निवासी वीर बहादुर सिंह शत्रुघन पंडित ने भीषण गर्मी को देखते हुए नहरों में पानी उपलब्ध कराने की मांग सिंचाई मंत्री बिहार सरकार से की है जिससे जानवरों को पानी मिल सके।

दहेज हत्यारोपी के घर बीकोठी पुलिस द्वारा चिपकाया गया इश्तेहार

पूर्णिया/बड़हरा कोठी । प्रखंड अंतर्गत हल्दी बाड़ी गांव में दहेज को लेकर हत्या मामले में हत्यारोपी के घर बड़हरा थाना पुलिस द्वारा इस्तिहार चिपकाया गया। जानकारी देते हुए बड़हरा कोठी थानाध्यक्ष विकास कुमार आजाद ने बताया कि लगातार छापेमारी के बाद भी कांड संख्या 171/20 के आरोपी लंबे समय से फरार एवं पुलिस के पकड़ से बाहर है। इस कांड के आरोपी के घर इस्तिहार चिपकाकर आत्मसमर्पण का अल्टीमेटम दिया गया है। आत्म समर्पण नही करने पर न्यायालय के आदेशानुसार आरोपियों के गगर कुर्की जप्ती का करवाई किया जाएगा। बताते चले के 22 जुलाई 20 को मुंहमांगी दहेज नही देने पर थानाक्षेत्र के आलू बथान टोला निवासी कुलदीप ऋषिदेव की पुत्री की हत्या उसके ससुराल हल्दीबाड़ी में ससुराल वालों द्वारा कर दिया गया था।

10वीं परीक्षा में 97.4 प्रतिशत अंक लाने वाली अंशिका को किया सम्मानित

कसबा (पूर्णिया) । केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में वैश्य समाज की बेटियों द्वारा जोरदार प्रदर्शन किया गया। अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन जिला अध्यक्ष बमबम साह ने 97.4 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाली संजय चौधरी की पुत्री अंशिका जायसवाल, को उसके घर पहुंचकर बुके देकर सम्मानित किया। वहीं बमबम साह ने बताया कि वैश्य समाज की एक और बेटी मानसी, पिता गोपाल प्रसाद साह ने भी 95 प्रतिशत अंक प्राप्त किया है। साथ ही कसबा के ही कैलाश प्रसाद साह के पुत्र अनिकेत कुमार भी 97.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर हमारे समाज को गौरवान्वित किया है। वैश्य महासम्मेलन की टीम द्वारा सभी प्रतिभावान छात्र छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना की गयी। जिला अध्यक्ष बमबम साह ने कहा कि ये सफलता इन बच्चों के कठिन परिश्रम का परिणाम है।

छात्र जदयू ने विभागाध्यक्ष का पुतला फूंका

प्रात : किरण संवाददाता

गया। गया कॉलेज में छात्र जदयू के द्वारा रसायन विभाग के विभागाध्यक्ष वीरेंद्र कुमार का पुतला फूंका गया, कार्यक्रम का अध्यक्षता कर रहे छात्र जदयू के गया कॉलेज के अध्यक्ष कुंदन कुमार ने कहा कि 9 तारीख छात्रों को समस्या को लेकर मगध विश्वविद्यालय अध्यक्ष एवं जदयू की टीम जब विभागाध्यक्ष से बात करने पहुंची तो उन्हें धक्का-मुक्की करके जान से मारने की धमकी दी।

इसी घटना को लेकर आज हम सभी छात्र जदयू साथियों के साथ रसायन विभाग के विभागाध्यक्ष वीरेंद्र कुमार का पुतला दहन किए हैं, साथ ही कहा कि वीरेंद्र कुमार जी को अभी तक हटाया नहीं नहीं गया है इससे छात्रों में भय का माहौल बना है कि आपको पता हो कि वीरेंद्र कुमार पर कई मामले पहले से दर्ज है परंतु अभी तक यह गया कॉलेज प्रशासन के द्वारा इन पर उचित कार्रवाई नहीं की गई है इस मौके पर गया कॉलेज प्रभारी अनिल यादव एवं मगध विश्वविद्यालय उपाध्यक्ष अमरजीत कुमार ने कहा कि वीरेंद्र कुमार 2, 2 विभाग के विभागाध्यक्ष पर बने हुए हैं उन पर कई मामले दर्ज हैं विजिलेंस टीम के द्वारा उन पर केस चल रहा है रुपए 5000000 का गमन का आरोप भी उन पर दर्ज है और मगध विश्वविद्यालय से निर्देश भी दिया गया है कि उन्हें संवैधानिक पद पर नहीं बैठाया जाए परंतु वह गया कॉलेज में दबंगई के रूप में 2 ,2 विभाग का विभागाध्यक्ष बने हुए हैं रसायन विभाग एवं आईटी विभाग का विभागाध्यक्ष बनकर छात्रों के बीच गुंडागर्दी एवं दबंगई करते रहते हैं पहले भी कई छात्रों ने इनके खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई है।

साथ ही बताया कि जब मगध विश्वविद्यालय से निर्देश दिया गया है कि ऑनलाइन एडमिट कार्ड के माध्यम से भी लोग एग्जाम दे सकते हैं परंतु यह विश्वविद्यालय की बातों को भी नहीं मानते हैं और अपनी मनमर्जी चलाते हैं और छात्रों को गाली गलौज धमकी देने का काम करते हैं इस मामला को लेकर हम लोगों ने कुलपति महोदय से भी शिकायत की है गया कॉलेज के प्रधानाचार्य से भी शिकायत किए की गई है परंतु अभी तक इस पर उचित कार्रवाई नहीं हुई है इसी को देखते हुए आज इनका पुतला दहन किया गया है अगर कल तक इन पर उचित करवाई नहीं होती है तो 15 तारीख को पूरे छात्रों के साथ आमरण अनशन पर बैठेंगे साथ ही कहा कि मगध विश्वविद्यालय अध्यक्ष उत्तम कुशवाहा जो लगातार छात्रों के लिए हक की लड़ाई के लिए आवाज उठाते हैं उनको इन्होंने जान से मारने की धमकी दी निंदनीय है अगर उत्तम कुशवाहा जी को कुछ होता है तो इनका पूर्णता जवाब गया कॉलेज के रसायन भाव के विभागाध्यक्ष वीरेंद्र कुमार होंगे, इस मौके पर छात्रा प्रमुख, प्रीति यादव, उपाध्यक्ष हिमांशु कुमार, रवि कुमार ,रोशन कुमार, संजय कुमार ,चंद्रगुप्त ,सौरभ, सत्यम मनजीत ,राहुल , दीपक, आदर्श, आमन, अमित, प्रिंस समेत सैकड़ों छात्र रहे उपस्थित।

पानी की समस्या को लेकर नगर निगम का घेराव

प्रात : किरण संवाददाता

गया। गया नगर निगम के वार्ड नंबर 34 में भीषण गर्मी के बीच पानी की समस्या, वार्ड की साफ-सफाई, स्ट्रीट लाईट सहित अन्य समस्याओं को लेकर वार्ड के जन प्रतिनिधि ओम यादव के नेतृत्व में गया नगर निगम, गया का घेराव किया गया।

जिसमें महिलाओं ने बढ़- चढ़ कर हिस्सा लिया है। इस कड़कती धूप में जन प्रतिनिधि ओम यादव के साथ बड़ी संख्या में वार्ड की जनता पैदल चल कर नगर निगम पहुंची और नगर आयुक्त का घेराव किया गया है। ओम यादव ने कहा कि पानी, वार्ड की साफ-सफाई और स्ट्रीट लाईट की समस्या को लेकर पिछले 5 महीनों से कई बार नगर आयुक्त और संबंधित नोडल पदाधिकारी को आवेदन दिया गया लेकिन उनके कानों पर जूं तक नहीं रेंगी। नगर निगम में चुनाव होने के 5 महीने बीत जाने के बावजूद वार्ड में अभी तक कोई विकास कार्य नहीं हुआ है। इस भीषण गर्मी में वार्ड नंबर 34 की जनता पानी के अभाव में त्रस्त है और नगर निगम के पदाधिकारी मस्त है। इसी बीच कार्यपालक अभियंता प्रदीप कुमार झा से बात हुई और उन्होंने वार्ड नंबर 34 में पानी की समस्या को जल्द से जल्द दूर करने का आश्वासन दिया है।

कोइलवर अस्पताल में फिर से शुरू हुआ एक्स-रे

एक्स-रे शुरू होने से मरीजों में दिखी खुशी

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। कोइलवर स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में पिछले एक वर्ष से एक्स-रे की सुविधा बंद थी. पीएचसी में कभी एक्स-रे फिल्म का अभाव तो कभी एक्स-रे टेक्नीशियन के स्थानांतरण जैसी समस्या के कारण एक्स-रे बंद होने से मरीजों को काफी परेशानी हो रही थी.वही पीएचसी को उत्क्रमित कर सीएचसी के नए भवन निर्माण के लिए अस्पताल को दूसरे जगह शिफ्ट किये जाने के कारण एक्स-रे की सुविधा लगभग 1 वर्ष से बंद थी. एक्स-रे बंद होने का एक कारण राशि आवंटन नहीं होना भी बताया जा रहा है. अस्पताल में डार्क रूम भी नहीं होने के कारण भी मशीन को इंस्टॉल करने में परेशानी हो रही थी.हालांकि अब स्थानीय मरीजों को इसका फायदा मिलना शुरू हो गया है मई महीने से एक्स-रे को फिर से शुरू कर दिया गया है.एक्स-रे टेक्नीशियन ने बताया कि 5 मई से एक्स-रे की शुरूआत हो गई है.अब रोजाना करीब 8 से 10 मरीजों का एक्स-रे किया जा रहा है.मालूम हो कि एक्स-रे बंद होने के कारण रोजाना करीब 10 से 12 मरीजों को निजी क्लिनिक की तरफ रुख करना पड़ रहा था लेकिन अब एक्स-रे की शुरूआत होने से गरीब मरीजों को इसका काफी फायदा मिलेगा. स्थानीय मो.आसिफ ने बताया कि 1 साल से एक्स-रे की सुविधा बंद थी जिससे हम जैसे सैकड़ो मरीजों को काफी परेशानी उठानी पड़ती थी कई बार प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी से इसकी शिकायत की गई थी उनके द्वारा आश्वासन दिया गया था कि इसकी शुरूआत जल्द की जाएगी. हालांकि काफी समय बाद लेकिन आखिरकार एक्स-रे की शुरूआत की गई. एक्स-रे की शुरूआत होने से हम जैसे सैकड़ो मरीजों में खुशी है।

करंट की चपेट में आने से किसान की मौत

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिले के शाहपुर थाना क्षेत्र के करनामेपुर ओपी ओपी अंतर्गत देवमलपुर बहुदरी गांव स्थित मिल के समीप शनिवार की शाम करंट की चपेट में आने से खेत पटाने गए किसान की मौत हो गई। घटना को लेकर लोगों के बीच काफी देर तक अफरा-तफरी मची रही। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय थाना घटनास्थल पर पहुंची और शव को अपने कब्जे में लेकर उसका पोस्टमार्टम सदर अस्पताल में करवाया। जानकारी के अनुसार मृतक शाहपुर थाना क्षेत्र के करनामेपुर ओपी अंतर्गत देवमलपुर बहादुरी गांव निवासी स्व.शिवधारी शर्मा के 60 वर्षीय पुत्र राम किशुन शर्मा है एवं वह पेशे से किसान थे।

इधर मृतक के बेटे अजय शर्मा ने बताया कि गांव में ही एक ज्ञानचंद का मिल है और ज्ञानचंद अपने खेत में मवेशी को रोकने के लिए चारों ओर बिजली का तार लगाया है। शनिवार की सुबह जब वह खेत में क्यारी बनाने गया था। तब उसे भी झटका लगा था। उसी समय उसने कहा था कि ज्ञानचंद भाई मैं खेत पटाऊंगा अपना लाइन हटा लो। तब उसने कहा कि यह लाइन नहीं है झटका है। उसने बताया कि उसके पिता उन्हीं के खेत के बगल में मालगुजारी पर खेत लिया है। शनिवार की शाम जब वह खेत पटाने गए थे। तभी उनके द्वारा हमें लाइन दे दिया गया। तभी खेत पटाने के दौरान वह करंट की चपेट में आ गए। जिससे उनकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई।इसके बाद वहां मौजूद लोगों ने इसकी सूचना उनके परिजनों को दी। सूचना पाकर मृतक के परिजन घटनास्थल पर पहुंचे। जिसके पश्चात उन्होंने इसकी सूचना स्थानीय थाना को दी। बताया जाता है कि मृतक अपने तीन भाई व दो बहन में छोटे थे। मृतक के परिवार में पत्नी रुक्मणी देवी,तीन पुत्री अनीता,दुर्गेश,संध्या व दो पुत्र अजय एवं अभिषेक है। घटना के बाद मृतक के घर में कोहराम मच गया है। घटी इस घटना के बाद मृतक की पत्नी रुक्मणी देवी एवं परिवार के सभी सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल है।

ग्लोबल कायस्थ कान्फ्रेंस का समाज के पिछले परिवारों को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करना उद्देश्य

प्रात : किरण संवाददाता

गया। ग्लोबल कायस्थ कॉन्फ्रेंस की आवश्यक बैठक रविवार को जिलाध्यक्ष चित्रांश संजय कुमार सिन्हा के अध्यक्षता में चाँदचौरा स्थित शिव माया पैलेस में आयोजित की गई है।इस बैठक में कायस्थ समाज के पिछले परिवारों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई है।

इस बैठक को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष सिन्हा ने कहा कि कायस्थ समाज के पिछले परिवारों को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करना ग्लोबल कायस्थ कॉन्फ्रेंस का मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि इसके लिए जीकेसी के द्वारा कुटीर उद्योग के माध्यम से समाज के पिछड़े परिवारों को आर्थिक रूप से सबल बनाने की मुहिम शुरू की गई है। इस बैठक के दौरान एक भव्य कार्यक्रम आयोजित कर समाज के पिछले वर्ग के लोगों को कुटीर उद्योग से संबंधित मशीनों का वितरण करने का निर्णय लिया गया है।इस कार्यक्रम में संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष के अलावा गया जिला के सांसद, विधायक व वरीय प्रशासनिक अधिकारियों को भी आमंत्रित करने का निर्णय लिया गया है। मौके पर चित्रांश प्रभात शंकर, चित्रांश सुजीत कुमार अम्बष्ठा, प्रिंस कुमार सिन्हा, रिंकू सिन्हा, सतीश कुमार सिन्हा, नवीन कुमार सिन्हा, श्वेता बाला, मनोज कुमार सिन्हा, जितेंद्र कुमार सिन्हा, अमित रंजन, अर्जुन प्रसाद सिन्हा, अरविंद कुमार सिन्हा गुलाब, शशि सिन्हा, राजीव रंजन, सुनील कुमार सिन्हा, चंदन कुमार, जितेंद्र कुमार सिन्हा अधिवक्ता, कुमार अमित, अभिषेक सिन्हा सहित काफी संख्या में संस्था से जुड़े चित्रांश परिवार के सदस्य उपस्थित थे।

रिटायर्ड दरोगा पुत्र सह प्राइवेट शिक्षक की पीट-पीटकर हत्या

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। शहर के नवादा थाना क्षेत्र के संकटमोचन नगर में रविवार की अहले सुबह प्राइवेट शिक्षक की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। इलाज के लिए पटना ले जाने के दौरान उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। घटना को लेकर आसपास के इलाके में सनसनी मच गई है। जानकारी के अनुसार मृतक मूल रूप से शाहपुर थाना क्षेत्र के ईश्वरपुरा गांव निवासी सोपाल जी सिंह के 32 वर्षीय पुत्र मनीष कुमार हैं। वह पेशे से एक प्राइवेट शिक्षक हैं एवं शाहपुर स्थित निजी स्कूल में शिक्षक के पद पर कार्यरत थे। वह वर्तमान में नवादा थाना क्षेत्र के संकटमोचन नगर मोहल्ले में करीब 20 वर्षो से अपना मकान में रहता था। इधर मृतक के पिता सोपाल जी सिंह ने बताया कि करीब आठ वर्षो से जमीन को लेकर उनके सगे भाई व उनके परिवार वालों से विवाद चला रहा है। जमीनी विवाद को लेकर ही 2016 में भी उनके द्वारा मृतक के साथ मारपीट की गई थी। उस नाली में डुबोकर उस समय भी मारा गया था। जिसके बाद उनके द्वारा प्राथमिकी भी दर्ज कराई गई थी। उसके बाद बात खत्म हो गई थी। रविवार की अहले सुबह उनके सगे भाई एवं उनके परिवार वाले आए और उनके बेटे को अपने साथ अपने छत पर ले गएम जहां उन्होंने उसकी लाठी-डंडों एवं लोहे के डर से जमकर पिटाई की। जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया।इसके बाद उन्होंने शोर मचाना शुरू किया। जिसके बाद वह लोग वहां से भाग गए। इसके बाद परिजन द्वारा उसे इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया। जहां से प्राथमिक उपचार करने के बाद उसकी हालत को चिंताजनक देखते हुए पटना रेफर कर दिया गया था।

चर्च में धूम धाम से मनाया गया मदर्स डे

प्रात : किरण संवाददाता

आरा । चर्च में मनाया गया मदर्स डे सामूहिक भजन ,जैसे माता संभालती है वैसे यीशु संभालेगा ,संभाल प्रभुजी जीवन के हर पल में अभी तक तुमने संभाला आगे भी अगुवाई कर, एक आग हर दिल में हमको जलाना है भटके हुए जीवन प्रभु से मिलाना है गीतों को गाकर प्रभु यीशु मसीह की आराधना किया गया ।बाइबल का पाठ भजन संहिता 120 :1 -5 सुषमा कुमारी के द्वारा पढ़ा गया विशेष मदर टेरेसा की प्रेरणा पाकर लल्लू साह ज्वेलर्स के मालिक दीपक कुमार अकेला (समाजसेवी)चर्च में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, पादरी अनिल जीऊत और दीपक अकेला के द्वारा रमना चर्च मे विधवाओं को माला पहना कर आदर सम्मान किया गया और उन्हें राशन देकर प्रार्थना किया गया कि वह बहुतों के लिए आशीष का कारण बने। पादरी अनिल जीऊत ने अपने प्रवचन में बताया कि आज मदर्स डे है हमें अपने माता-पिता का आदर करना चाहिए। मां जन्म देने वाली, पालन पोषण करने वाली, उचित शिक्षा देने वाली, प्यार करने वाली ,हिम्मत देने वाली होती है, हम अपने माता पिता के प्रति क्या स्वभाव रखते हैं ,हमें अपने माता के प्रति क्या सोचते हैं हमे दूसरे के माता-पिता के प्रति क्या सोच रखना चाहिए। हमें सब का आदर करना है अपने समाज की माताओं का ध्यान रखना है। जवान माताओं को सही शिक्षा में बढ़ाना है ,और हमारा संबंध हमारे माता-पिता के साथ अच्छा होना चाहिए ।हमें अपनी मां को क्षमा करना है और उनकी कही बातों को गले लगाना है ।विशेष मां लोगों से निवेदन है कि वह अपने बच्चों की कही बातों को ध्यान से सुने और उनका सही से मार्गदर्शन करें। इस अवसर पर चर्च में प्रभु भोज की विधि किया गया। और आरा नगर की सभी माताओं के लिए विशेष प्रार्थना किया गया कि वे अपने बच्चों से प्यार करें और उनके बच्चे उनकी कही बातो को माने और माताएं अपने बच्चों को सही शिक्षा स्वास्थ्य और विकास की जिम्मेदारियाँ निभा सके ।

अपराधियों ने व्यवासाई की गोली मारकर की हत्या

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिले के कृष्णागढ़ थाना क्षेत्र के सरैया बाजार पर रविवार की सुबह हथियारबंद अपराधियों ने पश्चिमी गुंडी पंचायत के वर्तमान मुख्य मुखिया पति सह व्यवासाई की गोली मारकर हत्या कर दी। दिनदहाड़े इस वारदात के बाद गांव एवं आसपास के इलाके में सनसनी फैल गई है। घटना के बाद स्थानीय ग्रामीणों का आक्रोश भड़क उठा। जिसके बाद आरा-सिन्हा मुख्य मार्ग पर सरैया बाजार को मृतक के परिजन एवं आक्रोशित ग्रामीणों ने शव को सड़क के बीचो-बीच रख सड़क जाम कर दिया।

सड़क जाम के दौरान मृतक परिजन एवं स्थानीय ग्रामीण अपराधियों की गिरफ्तारी एवं भोजपुर एसपी को घटनास्थल पर बुलाने की मांग कर रहे हैं। घटना की सूचना मिलते ही मुफ्फसिल थानाध्यक्ष संजय कुमार सिंह, डीआईयू इंस्पेक्टर शंभू कुमार भगत,बड़हरा थाना इंचार्ज जयंत प्रकाश,कृष्णागढ़ थाना इंचार्ज विवेक कुमार सहित काफी पुलिस बल घटनास्थल पर पहुंच लोगों को समझाने बुझाने में जुट गए हैं। जानकारी के अनुसार मृतक कृष्णागढ़ थाना क्षेत्र के बभंगावां गांव निवासी स्व.रामप्रवेश यादव के 42 वर्षीय पुत्र सह पश्चिमी गुंडी पंचायत के वर्तमान मुख्य उमरावती देवी के पति महेंद्र यादव उर्फ मुन्ना यादव हैं। वह पेशे से व्यवसाई थे एवं सरैया बाजार में सरिया एवं गिट्टी का दुकान चलाते थे। इधर मृतक के पुत्र अंकुश कुमार ने बताया कि गांव में ही केस हुआ था।

जिसका पंचायती करने के लिए रविवार की सुबह आपने बुलेट पर सवार होकर कृष्णागढ़ थाना गए थे। जब वह पंचायती कर वापस बुलेट से घर लौट रहे थे। उसी दौरान सरैया बाजार पर ही हथियारबंद अपराधियों द्वारा ताबडतोड उन पर गोलियां बरसा दी गई। जिससे उनकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। इसके बाद स्थानीय लोगों के द्वारा उसे सूचना मिली कि उसके पिता की गोली मारकर हत्या कर दी गई है। सूचना पाकर वह घटनास्थल पर पहुंचा। वहीं दूसरी ओर मृतक के पुत्र अंकुश कुमार ने पश्चिमी गुंडी पंचायत के पूर्व मुखिया पति अंशु उपाध्याय,धनजी यादव,सभापति जादव सहित अन्य लोगों पर पूर्व में झूठा केस करने और पिछले साल होली में उसकी मां को गोली मारने एवं रविवार की सुबह अपने पिता की गोली मारकर हत्या करने का आरोप लगाया है। वही प्राप्त जानकारी के अनुसार जब मुखिया पति अपने बुलेट से थाना से निकल कर वापस घर लौट रहे थे। तभी पैदल चलकर आए हथियारबंद अपराधियों ने पहले ताबडतोड उन्हें गोली मारी। गोली लगते ही वह बुलेट से गिर पड़े। इसके बाद अपराधी कुछ दूर जाने के बाद दुबारा वापस लौटे और उनके सिर में गोली मार दी। जिससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। बता दें कि वर्ष 2022 में 19 मार्च को होली के दिन आरोपियों पक्ष द्वारा मृतक की पत्नी सह वर्तमान मुखिया उमरावती देवी को भी गोली मारी गई थी। उस समय उन्हें चार गोली मारी गई थी। जिसके बाद उन्हें इलाज के लिए आरा शहर के बाजार स्थित निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था।। उस समय होली के दौरान रंग खेलने के विवाद को लेकर झगड़ा हुआ था। जिसके बाद अपराधियों द्वारा उनके घर पर चढ़कर उनको गोली मारी गई थी। हालांकि उस समय उनकी जान बच गई। घटना के बाद मृतक के घर में कोहराम मच गया है। घटी घटना के बाद मृतक की पत्नी उमरावती देवी एवं परिवार के सभी सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल है।

गया के आजमीन-ए-हज को दिया गया विशेष प्रशिक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

गया।आगामी 21 मई से 6 जून के बीच लगभग 3500 आजमीन-ए-हज का काफिला हज यात्रा के लिए गया एयरपोर्ट से उड़ान भरेगा। इसको लेकर बिहार राज्य हज कमिटी, जिला प्रशासन, गया और गया रजाकार की ओर से नगमतिया रोड स्थित एआर पैलेस में आजमीन-ए-हज को विशेष प्रशिक्षण दिया गया है। इस कैम्प में सभी हज यात्रियों को पोलियो ड्रॉप और मेनिनजाइटिस का टीका भी दिया गया है। इसके साथ ही सभी को स्वास्थ्य प्रमाण पत्र उपलब्ध कराया गया है।इस विशेष प्रशिक्षण केंद्र का जायजा लेने जिला पदाधिकारी, गया डॉ. त्यागराजन एसएम एआर पैलेस पहुंचे हैं। सर्वप्रथम जिलाधिकारी को जनाब मोती करीमी एवं अन्य गणमान्य द्वारा पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया गया है। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि सभी आजमीन-ए-हज को जिला प्रशासन की ओर से हर तरह की सुविधाएं मुहैया कराई जा रही हैं। गया एयरपोर्ट पर होने वाली तैयारियां समेत अन्य सभी तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। गया एयरपोर्ट पर विशाल आधुनिक पंडाल, आराम करने के लिए पर्याप्त बेड, कूलर, रोशनी, वजूखाना, शौचालय, नमाजगाह, शुद्ध शीतल पेयजल की व्यवस्था, सीसीटीवी कैमरा जैसी सुविधाएं होंगी। इसके साथ ही जिला प्रशासन की ओर से नियंत्रण कक्ष, मे आई हेल्प यू, पुलिस शिविर, निःशुल्क मेडिकल शिविर की भी व्यवस्था होगी।

जिलाधिकारी ने हज यात्रियों से अनुरोध किया को अपने जिला, राज्य और देश की अमन चैन, भाई चारा, सुख शांति के लिए दुआ करें। इसके साथ ही उन्होंने सभी हज यात्रियों की सफल यात्रा को कामना भी की है। बिहार राज्य हज कमिटी के पूर्व समन्वयक जनाब मोती करीमी ने बताया की तरबियती कैंप में गया जिले के आजमीन-ए-हज ने शिरकत कर विशेष प्रशिक्षण का लाभ उठाया है। इसके तहत उन्हें एहराम बांधने का तरीका, हज और उमरा के दौरान अदा किए जाने वाले सारे अरकान, फ्लाइट में ले जाने वाले आवश्यक सामानों के बारे में बताया गया है। इस प्रशिक्षण में उपस्थित सिविल सर्जन, गया डॉ. राजेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि सभी हज यात्रियों को पोलियो ड्रॉप और मेनिनजाइटिस का टीका दिया गया है। 60 साल से अधिक उम्र के हज यात्रियों को पोलियो ड्रॉप और मेनिनजाइटिस के साथ-साथ इन्फ्लूएंजा का भी टीका दिया गया है। इस टीकाकरण शिविर में कुल 325 आजमीन-ए-हज को टीका दी गई है। वैसे आजमीन-ए-हज जो इस टीकाकरण में छूट गए हैं, उन्हें जेपीएन हॉस्पिटल में टीका दिया जाएगा। वैसे लोग डीआईओ डॉ. राजीव अम्बष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।

आजमीन-ए-हज को प्रशिक्षण देने वालों में मौलाना उमर नूरानी, डॉ. तनवीर उस्मानी, अब्दुल मोहसी करीमी, कारी गजनफर अली, हाजी यूसुफ रिजवी, मौलाना तबारक हुसैन आदि शामिल थे। इस अवसर पर जिला अल्पसंख्यक कल्याण पदाधिकारी जितेंद्र कुमार, जिला जन संपर्क पदाधिकारी दीपक चंद्र देव, मो० आसिफ,शाहिद खान सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति समेत बड़ी तादाद में रजाकार मौजूद थे।

बहुजन संसद के माध्यम से बहुजनों को न्याय की उम्मीद

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। जिला मुख्यालय स्थित एक होटल में बहुजन संसद का आयोजन किया गया। बहुजन संसद कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में लोग वक्ताओं को सुनने पहुंचे इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर लक्ष्मण यादव ने कहा कि बहुजनों को जगाने के लिए बिहार में श्रृंखला वार तरीके से बहुजन संसद का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने केंद्र सरकार की नई शिक्षा नीति बहुजनों की भागीदारी और जाति जनगणना को लेकर लोगों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आज देश में आवाज निजीकरण के जरिए पूंजीपतियों के हाथों संपत्ति का केंद्रीकरण किया जा रहा है बढ़ती आर्थिक असमानता व गरीबी के बीच बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी श्रम कानूनों में बदलाव यह बहुजनों के साथ भेदभाव किया जा रहा है। अमीरी और गरीबी के बीच खाई पैदा हो गई है। आज के समय में बहुजनों के आंदोलन की ताकत उन्हें भी समझ आने लगी है। सरकारी शिक्षा को बर्बाद करने और स्कूल कॉलेजों को बंद करने की साजिश चल रही है नई शिक्षा नीति के जरिए शिक्षा को बर्बाद किया जा रहा है एससी एसटी ओबीसी के लिए शिक्षा के दरवाजे बंद किए जा रहे हैं वही बहुजन विचारक सिद्धार्थ रामू ने कहा कि तमाम धर्मों के दबे कुचले लोगों का हित एक है। हिंदू पिछड़े दलित और मुसलमान पिछड़े दलितों के हक हिस्से की लड़ाई साझा है। धर्मों के आर पार बहुत जनों की एकजुटता जरूरी है। इस कार्यक्रम में ऑल इंडिया पसमांदा मुस्लिम महज के राष्ट्रीय अध्यक्ष अली अनवर अंसारी, विलक्षण रविदास, सुबोध यादव रिंकू यादव गौतम कुमार प्रीतम छात्र नेता गौतम आनंद पूर्व विधायक ए के नंदा और केडी यादव हाजी निसार अहमद रविंद्र कनौजिया रोहित पासवान इंजीनियर नागेंद्र कुमार मुख्तार अंसारी सुशील सम्राट सबा करीम रामेश्वर चौधरी सहित कई लोगों ने संबोधित किया।

बिजली मंत्री ने उद्योगों को ग्रीन ओपन एक्सेस नियम के अंतर्गत लक्ष्य निर्धारित करने को कहा

नई दिल्ली , एजेंसी। केंद्रीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री आरके सिंह ने शनिवार को उद्योगों को ग्रीन ओपन एक्सेस नियम, 2022 के अंतर्गत लक्ष्य निर्धारित करने का निर्देश दिया। सरकार ने देश के अक्षय ऊर्जा कार्यक्रमों को गति देने के लिए ग्रीन ओपन एक्सेस नियम 2022 अधिसूचित किए थे।

डीएलएफ चालू वित्तवर्ष में करीब 20,000 करोड़ रुपये की परियोजनाएं शुरू करेगी

नयी दिल्ली, एजेंसी। प्रमुख रियल्टी कंपनी डीएलएफ लिमिटेड अगले साल मार्च तक 19,710 करोड़ रुपये की परियोजनाएं शुरू करेगी। कंपनी ने मजबूत आवास मांग के कारण चालू वित्तवर्ष में लगभग 12,000 करोड़ रुपये की बिक्री बुकिंग हासिल करने का लक्ष्य तय किया है।

वैश्विक रुख, थोक मुद्रास्फीति के आंकड़ों से तय होगी शेयर बाजार की दिशा

नई दिल्ली , एजेंसी। शेयर बाजारों की दिशा इस सप्ताह मुद्रास्फीति के आंकड़ों, वैश्विक रुख और कंपनियों के चौथी तिमाही के परिणामों से तय होगी। विश्लेषकों ने यह बात कही है। सबसे पहले बाजार शुक्रवार को जारी हुए औद्योगिक उत्पादन (आईआईपी) और उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित मुद्रास्फीति के आंकड़ों पर प्रतिक्रिया देगा।

रेलिगेयर ब्रोकिंग लि. के उपाध्यक्ष-तकनीकी शोध अजित मिश्रा ने कहा, ''बाजार भागीदार सबसे पहले शुक्रवार को कारोबारी घंटों के बाद जारी हुए आईआईपी और सीपीआई के आंकड़ों पर प्रतिक्रिया देंगे। थोक मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति का आंकड़ा 15 मई को आएगा। वृहद आर्थिक आंकड़ों के अलावा वैश्विक रुख विशेषरूप से अमेरिका के बाजार का रुझान और विदेशी कोषों का प्रवाह बाजार की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहेगा। अप्रैल में खुदरा मुद्रास्फीति घटकर 18 महीने के निचले स्तर 4.7 प्रतिशत पर आ गई है। इसका मुख्य कारण सब्जियों, तेल और वसा की गिरती कीमतें थीं। अब यह भारतीय रिजर्व बैंक के चार प्रतिशत के लक्ष्य के करीब है। जारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, मुख्य रूप से बिजली और विनिर्माण क्षेत्रों के खराब प्रदर्शन के कारण भारत की औद्योगिक उत्पादन वृद्धि फरवरी, 2023 के 5.8 प्रतिशत से मार्च में पांच महीने के निचले स्तर 1.1 प्रतिशत पर आ गई। मिश्रा ने कहा कि सप्ताह भारती एयरटेल, भारतीय स्टेट बैंक, आईटीसी, इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (आईओसी), जेएसडब्ल्यू स्टील और गेल जैसी बड़ी कंपनियां अपने तिमाही नतीजों की घोषणा करेंगी। कांग्रेस 10 साल बाद कर्नाटक में अपने दम पर सत्ता में लौटी है। शनिवार को आए चुनावी नतीजों के अनुसार, कांग्रेस ने भाजपा को दक्षिणी के एकमात्र राज्य की सत्ता से भी बाहर कर दिया है।

स्वस्तिका इन्वेस्टमार्ट लि. के शोध प्रमुख संतोष मीणा ने कहा, ''कर्नाटक के नतीजों से बाजार पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। लेकिन यहां यह भी महत्वपूर्ण है कि निवेशक पहले ही इस परिणाम को स्वीकार कर चुके हैं। ऐसे में इससे बाजार पर खास असर पड़ने की संभावना नहीं है। बीते सप्ताह बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 973.61 अंक या 1.59 प्रतिशत चढ़ गया। मास्टर कैपिटल सर्विसेज लि. के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अरविंदर सिंह नंदा ने कहा, ''बाजार की कुल धारणा सकारात्मक है। हालांकि, इस समय शेयरों के दाम एक ऐसे स्तर पर हैं जहां भविष्य में इनमें 'करेक्शन या मुनाफावसूली देखने को मिल सकती है।

काबिल बनो, कामयाबी झक मार कर आएगी... स्टार्टअप से छापने हैं करोड़ों तो एक्सपर्ट्स से जान लीजिए टिप्स

नई दिल्ली , एजेंसी। राजीव रंजन 35 साल के हैं। तीन साल पहले फूड प्रोसेसिंग को लेकर एक स्टार्टअप शुरू किया था। न कोई रिसर्च की, न चुनौतियों को समझा और न मार्केट की स्टडी की। अपनी जमीन थी। कंपनी और लोगो रजिस्टर्ड कराया। 3 कमरों का टीन शेड वाला घर बनाया। कुछ महंगी मशीनें खरीदीं और चल दिए ब्रैंड बनाने। करीब डेढ़ साल तक कंपनी चला ली, लेकिन ये 18 महीने कैसे गुज़रे यह राजीव ही जानते थे। शुरुआत में कंपनी में 25 लाख रुपये लगे थे। फिर नुकसान होता चला गया। यह फंड बढ़कर 40 लाख रुपये का हो गया। उन्हें यह काम बंद करना पड़ा। इसके बाद उन्होंने स्टार्टअप से जुड़ा कोर्स करने की ठानी। इसी दौरान स्टार्टअप पर कुछ किताबें भी पढ़ीं। सक्सेस और फेल्यर, दोनों तरह के स्टार्टअप की कहानियां पढ़ीं, कारण समझे और यह भी समझा कि केंद्र और राज्य सरकार से किस तरह मदद ली जा सकती है। यह काम करने में 6 महीने निकल गए। इसके बाद उन्होंने फिर से उसी स्टार्टअप को शुरू करने का फैसला किया जो पिछले 6 महीने से बंद था। उस वक्त घरवालों और दोस्तों ने समझाया कि यह क्या करने जा रहे हो। एक बार तो पैसा डुबा चुके, फिर से डुबाओगे, पर राजीव नहीं माने। उन्हें खुद पर और अपनी रिसर्च पर भरोसा था। आज उसी स्टार्टअप

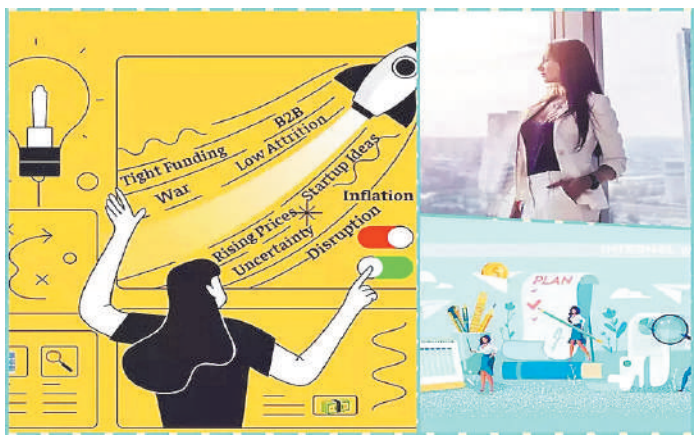

को दोबारा शुरू हुए 1 बरस हो चुका है। कंपनी 3 महीने पहले ही प्रोफिट में आ चुकी थी। उम्मीद है अगले 1 से डेढ़ साल में उनके पिछले नुकसान की भी भरपाई हो जाएगी। यहां पर थ्री इडियट्स फिल्म का वह डायलॉग याद आता है कि पहले काबिल बनो, कामयाबी झक मार कर आएगी ।

पिछले कुछ समय में स्टार्टअप को लेकर केंद्र और राज्य सरकारों ने काम आसान बनाने की कोशिश की है। सिंगल विंडो क्लियरेंस ने बहुत सारी मुश्किलें खत्म कर दी हैं। इनके अलावा स्टार्टअप को सफल बनाने में कौन-कौन से कोर्स और किताबें उपयोगी हो सकती हैं? एक्सपर्ट्स से बात करके जानकारी दे रहे हैं लोकेश के. भारती।

सिंगल विंडो में मिलती हैं मंजूरियां

कॉमर्स मिनिस्ट्री से जुड़ा डीपीआइआइटी विभाग देश में स्टार्टअप को मान्यता देता है। वहीं नैशनल सिंगल विंडो सिस्टम जिसे शॉर्ट में न्यूज भी कहते हैं। यह एक ऐसा वन स्टॉप प्लैटफॉर्म है, जहां कोई बिज़नेस शुरू करने के लिए सेंट्रल और स्टेट की जरूरी मंजूरियां मिल जाती है। इस पोर्टल पर बहुत-से केंद्रीय विभाग और कई राज्य सरकारों की मंजूरी मिल जाती है।

रजिस्ट्रेशन कराना आसान

अपने बिज़नेस को रजिस्टर्ड कराना पहले की तुलना में काफी आसान हो गया है। हालांकि अब भी कई स्टेप फॉलो करने पड़ते हैं। फिर भी एक ही जगह पर सभी जरूरी मंजूरी मिल जाना एक बड़ी राहत है। अपने बिज़नेस को स्स्स्स्स की ऑफिशल वेबसाइट पर रजिस्टर्ड करवाना होता है। इससे कई तरह के फायदे मिल जाते हैं। मसलन, लोन में आसानी, बिज़नेस को फैलाने में मदद आदि। इस वेबसाइट को काफी यूजर फ्रेंडली बनाया गया है। इस वेबसाइट पर रजिस्ट्रेशन कैसे करना है, हमारे फेसबुक पेज संडेएनबीटी पर जाकर पूरे प्रोसेस की जानकारी ले सकते हैं।

ट्रांसपेरंसी बढ़ी

जिन लोगों ने रजिस्ट्रेशन के लिए आवेदन किया है, उनके द्वारा ऑनलाइन सबमिट किए गए पेपर आदि सही होने पर जल्द से जल्द रजिस्ट्रेशन हो जाए, इसका ध्यान रखा जाता है यानी पहले की तुलना में संस्थाओं की ज़िम्मेदारी भी बढ़ी है।

लोन मिलना आसान

बिना कलैटरल यानी जमीन या प्रॉपर्टी को गिरवी रखे सरकारी बैंक के माध्यम से मुद्रा लोन या स्टैंडअप इंडिया स्कीम के तहत लोन मिल जाता है। लोन की गारंटी सरकार देती है। इस लोन को बैंक मैनेजर मंजूर कर सकता है।

283.5 करोड़ रुपये का प्रावधान स्टार्टअप इंडिया सीड फंड स्कीम के लिए किया गया है 2023-24 के केंद्र सरकार के बजट में। यह पिछले साल के 100 करोड़ रुपये के फंड से काफी ज्यादा है। स्टार्टअप वह यूनिट है, जिसे देश में रजिस्टर्ड हुए 5 साल से ज्यादा न हुआ हो। नया बिज़नेस हो।

-सालाना कारोबार किसी भी वित्तीय वर्ष में 25 करोड़ रुपये से ज्यादा न हुआ हो।

-उसमें अमूमन टेक्नॉलजी या अपनी नॉलेज की मदद से इनोवेशन, डिवेलपमेंट आधारित काम होते हैं।

सिंगल विंडो क्लियरेंस से चीजें हुई हैं आसान

अदाणी ट्रांसमिशन को बोर्ड ने दी बाजार से एक अरब डॉलर जुटाने की मंजूरी, इक्विटी शेयर बेचने की योजना

नई दिल्ली, एजेंसी। अदाणी समूह की ट्रांसमिशन कंपनी को इसके बोर्ड ने बाजार से एक अरब डॉलर (85 अरब रुपये) जुटाने की मंजूरी दी है। इस संबंध में कंपनी ने शनिवार को कहा, अदाणी ट्रांसमिशन योग्य संस्थागत क्रेताओं (क्यूआईबी) व दूसरे मान्य तरीकों से इक्विटी शेयर बेचकर धन जुटाने की योजना बना रहा है।

इसके साथ ही कंपनी के प्रवक्ता ने बताया कि समूह की प्रमुख कंपनी अदाणी एंटरप्राइजेज लि. और इसकी नवीकरणीय-ऊर्जा शाखा अदाणी ग्रीन एनर्जी लि. को भी धन जुटाने के प्रस्तावों पर विचार करने के लिए शनिवार को बोर्ड की बैठक आयोजित करनी थी, लेकिन ये बैठकें

फिलहाल 24 मई तक स्थगित कर दी गई हैं। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के मुताबिक तीनों कंपनियों के जरिये अदाणी समूह कुल 5 अरब डॉलर जुटाना चाहता है। जनवरी में अदाणी समूह के खिलाफ अमेरिकी शॉर्ट सेलिंग कंपनी हिंडनबर्ग ने कई तरह के आरोप लगाए थे, जिसके बाद समूह की तमाम कंपनियों के शेयरों के मूल्यों में भारी गिरावट आई थी। अदाणी समूह ने हिंडनबर्ग के सभी आरोपों को खारिज कर मुकदमा दायर करने की चेतावनी दी थी। फिलहाल, इस मामले में जहां बाजार नियामक सेबी जांच कर रहा है, वहीं सुप्रीम कोर्ट ने भी एक विशेषज्ञ समूह को जांच का आदेश दिया है।

मॉरिशस से मिली राहत

इस सबके बीच अदाणी समूह के लिए मॉरिशस से अच्छी खबर यह आई कि वहां के वित्त मंत्री महेन कुमार सीरुत्तन ने अदाणी समूह पर हिंडनबर्ग की तरफ से लगाए आरोपों को खारिज कर दिया। जनवरी में हिंडनबर्ग ने आरोप लगाया था कि अदाणी समूह की मॉरिशस में 38 शेल कंपनियां है, जिनका नियंत्रण गौतम अदाणी के भाई विनोद अदाणी के हाथों में है।

हिमाचल प्रदेश में 1,800 हेक्टेयर में संतरा उत्पादन किया जायेगा

शिमला, एजेंसी। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि प्रदेश सरकार ने हिमाचल प्रदेश उपोष्णकटिबंधीय बागवानी, सिंचाई और मूल्यवर्धन (शिवा) परियोजना के तहत संतरे के उत्पादन के लिए राज्य में 1,800 हेक्टेयर भूमि में खेती करने का प्रस्ताव किया है। यहां शनिवार को जारी बयान में बताया गया कि राज्य के बागवानी मंत्री जगत सिंह नेगी के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल ने संतरे की खेती में माइक्रो-ग्राफ्टिंग तकनीक का अवलोकन करने के साथ साइट्रस पैथोलॉजी कार्यक्रम और राष्ट्रीय साइट्रस रिपॉजिटरी कार्यक्रम पर चर्चा की। प्रतिनिधिमंडल इस समय परियोजना के हिस्से के रूप में ऑस्ट्रेलिया के छह दिवसीय दौरे पर है। हिमाचल प्रदेश शिवा परियोजना को एशियाई विकास बैंक द्वारा वित्तपोषित किया गया है। खट्टे फल राज्य के मैदानी इलाकों में उगाए जाते हैं जहां अधिकतम तापमान 30 से 40 डिग्री सेल्सियस के

बीच रहता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार की यह एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसमें ऑस्ट्रेलिया से तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने और इस क्षेत्र में सुधार के मकसद से स्थानीय बागवानों का मार्गदर्शन करने के लिए इसका उपयोग किया जाएगा। इससे राज्य में उच्च गुणवत्ता वाले संतरे के पौधे तैयार करने में मदद मिलेगी। सुक्खू ने कहा कि हिमाचल प्रदेश कृषि-जलवायु परिस्थितियों की एक विस्तृत श्रृंखला से संपन्न है, जो बड़ी संख्या में सेब, खट्टे फल, आम, खुबानी जैसे फलों की फसलों के लिए वरदान साबित हुआ है। किसानों की आय के साथ ही पौधों की उत्तरजीविता दर बढ़ाने के लिए नई तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया जा रहा है।

प्रतिनिधिमंडल ने अपनी यात्रा के दौरान ऑस्ट्रेलिया में पादप स्वास्थ्य प्रबंधन के क्षेत्र में अपनाई जा रही स्क्रीनिंग, परीक्षण, सफाई और रखरखाव की आधुनिक तकनीकों का अवलोकन किया और उनका अध्ययन किया। बयान के अनुसार, उन्होंने सिडनी में स्ट्रॉबेरी उद्योग प्रमाणन प्राधिकरण और एलिजाबेथ कृषि संस्थान की प्रयोगशालाओं का भी दौरा किया और नर्सरी पंजीकरण कार्यक्रमों के लिए आधुनिक तकनीकों पर चर्चा की।

कृष्का स्ट्रैपिंग सॉल्यूशंस का आईपीओ 16 मई, 2023 को खुलेगा

एंकर इन्वेस्टर की बीडिंग 15 मई 2023 को खुलेगी

मुंबई, एजेंसी। हाई टेंसिल स्टील स्ट्रैप्स, स्ट्रैपिंग सील्स औरस्ट्रैपिंग टूल्स की एक प्रमुख निर्माता और होलसेलर, कृष्का स्ट्रैपिंग सॉल्यूशंस लिमिटेड ने 16 मई, 2023 को इनिशियल पब्लिक आफरिंग (आईपीओ) के साथ पब्लिक में जाने की अपनी योजना की घोषणा की है। कंपनी का उद्देश्य इस आईपीओ के मार्फत 17.93 करोड़ जुटाना है और शेयर्स सेट एनएसई इमर्ज प्लेटफार्म पर लिस्ट होंगे। फ्रेश इश्यू साइज 10 प्रत्येक के33,20,000 इक्विटी शेयर्स हैं। आईपीओ से प्राप्त शुद्ध रकम का उपयोग नई स्ट्रैपिंग लाइन (12.04 करोड़) स्थापित करने के पूंजी खर्च का वित्तपोषण करने और कुछ सुरक्षित कर्ज (3.75 करोड़) का पुनरभुगतान करने के लिए किया

जाएगा7यहइश्यू 19 मई, 2023 को बंद होगा। इश्यू की लीड मैनेजर शेयर इंडिया कैपिटल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड है और इश्यू की रजिस्ट्रार पूर्वा शेयरजिस्ट्री इंडिया प्राइवेट लिमिटेड है। कृष्का स्ट्रैपिंग सॉल्यूशंस लिमिटेड के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर,श्री लेनिन कृष्णमूर्ति बालामणिकंदन ने कहा,हमारा मिशन सभी प्रमुख ग्राहकों की जरूरत पूरी करने वाला उद्योग का एक प्रमुख खिलाड़ी बनना है। आईपीओ फंडिंग हमें हमारी क्षमता का विस्तार करने और कर्ज के पुनरभुगतान द्वारा हमारी बैलेंसशीट को मजबूत बनाने में समर्थ बनाएगी । हमारा इरादा बढ़ी क्षमता और पैकिंगकाट्रैक्ट में प्रवेश द्वारा घरेलू बाजार में प्रमुख बाजार हिस्सा प्राप्त करना और निर्यात बाजार में हमारी उपस्थिति बढ़ाना है। इश्यू की लीड मैनेजर, शेयर इंडिया कैपिटल सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर, श्री आनंद श्रीवास्तवने कहा, हमें विश्वास है कि यह ऑफरिंग कंपनी को विकास पूंजी की जरूरत पूरी करने और अपना बाजार हिस्सा बढ़ाने के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करेंगी।

वार्डविजार्ड इन्नोवेशंस एंड मोबिलिटी ने वित्त वर्ष 23 में 2,393 मिलियन रुपए की आय प्राप्त की

- 29.28 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर्ज की
- वित्त वर्ष 23 में 36,500 यूनिट की सर्वोच्च बिक्री दर्ज की

वडोदरा, एजेंसी। 'जॉय ई बाइक' के तहत इलेक्ट्रिक टू व्हीलर्स का निर्माण करने वाली भारत की एक प्रमुख निर्माता, वार्डविजार्ड इन्नोवेशंस एंड मोबिलिटी लिमिटेड ने वित्त वर्ष 23 (अप्रैल 2022 मार्च 2023) और वित्त वर्ष 23 की चौथी तिमाही (जनवरी-मार्च 2023)के अपने वित्तीय परिणामों की घोषणा की है। देश में इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर की मांग में वृद्धि का अवलोकन करते हुए कंपनी ने वित्त वर्ष 23 में 29.28 प्रतिशत की 2 अंक में वृद्धि दर्ज करते हुए गत वर्ष के 1,851 मिलियन रुपए की तुलना में 2,393 मिलियन रुपए की आय प्राप्त की। कंपनी ने36,500 यूनिट इलेक्ट्रिक टू व्हीलर की सर्वोच्च बिक्री के साथ वित्त वर्ष (वित्त वर्ष 23) को समाप्त किया 7 कंपनी ने गत वर्ष की समान अवधि की बिक्री 30,761 यूनिट की तुलना में 19 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की।इसके अलावा कर बादलाभ (पीएटी) गत वर्ष के 85 मिलियन रुपए की तुलना में 94 मिलियन रुपए हुआ।

वित्त वर्ष 23 की चौथी तिमाही के प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए कंपनी के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर, यतिन गुप्तेने कहा, हम वित्त वर्ष 23 की सफल समाप्ति की घोषणा करते हुए गौरवान्वित है, जो बहुत सी बाजार चुनौतियों के बावजूद कंपनी के लिए खास वर्ष रहा है । कंपनी ने पिछले वित्त वर्ष में नए माइल स्टोन हासिल किए हैं और 29.28 प्रतिशत की प्रभावशाली वार्षिक आय वृद्धि दर्ज की है, हमारे ब्रांड में हमारे ग्राहकों का बढ़ता विश्वास इसका प्रमाण है। इसके अलावा हमने इस वर्ष बिक्री में 19 प्रतिशत की प्रभावशाली वार्षिक वृद्धि दर्ज की है। हमने अधिक विस्तृत ग्राहक आधार की आकांक्षाएं पूरी करने के लिए इलेक्ट्रिक थ्री व्हीलर के क्षेत्र में प्रवेश कर लगातारहमारे मजबूत प्रोडक्ट पोर्टफोलियो और अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी को इन्नोवेट किया है । इसके अतिरिक्त हमने हमारी स्वयं की बैटरी असेंबली लाइन शुरू की है ।इसकी वार्षिक क्षमता 1 जीडब्ल्यूएच की है । इससे हमारे प्रोडक्ट को स्पर्धात्मक बढ़त प्राप्त होगी क्योंकि भारतीय ईवी उद्योग क्लीनर एवं हेल्दीयर मोबिलिटी सॉल्यूशंस का गवाह बन रहा है। हम यथासंभव हर चरण में इको फ्रेंडली मोबिलिट बनाने के लिए प्रतिबद्ध बने हुए हैं ।रिसर्च एवं डेवलपमेंट और हमारे प्रोडक्ट लाइन के विविधीकरण में हमारे लगातार निवेश के मार्फत हमारा उद्देश्य वित्त वर्ष 23 और उससे आगेहमारी बाजार उपस्थिति और आगे बढ़ाना है ।हम टिकाऊ भविष्य का निर्माण करने और राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के ग्रोथ में योगदान देने के लिए हमारे मिशन में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

अमेरिकी ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर 1 लाख से अधिक कीमत पर बिक रही चारपाई, धड़ल्ले से खत्म हो रहा स्टॉक

नई दिल्ली, एजेंसी। ऑनलाइन मार्केटप्लेस ने लगभग कुछ भी खरीदना और बेचना संभव बना दिया है। रोजमर्रा की जिंदगी में इस्तेमाल होने वाली ज्यादातर चीजों को अब हम ऑनलाइन ही खरीद सकते हैं, और हमें बाजार जाकर धक्के खाने की भी जरूरत नहीं पड़ती है। कई बार ई-कॉमर्स वेबसाइट पर नार्मल चीजों को काफी ऊंची कीमतों पर लिस्ट किया जाता है। अगर आपको लगता है कि इतनी चौंका देने वाली कीमतें केवल विदेशी वस्तुओं तक ही सीमित हैं, तो आप गलत हो सकते हैं! अमेरिका में एक ई-कॉमर्स साइट भारतीय चारपाई यानी खाट को बहुत ही ज्यादा कीमत पर बेच रही है। चारपाई लकड़ी और बुने हुए जूट की रस्सियों से निर्मित एक बुनियादी बिस्तर है और आमतौर पर भारत में लगभग 2,000-10,000 रुपये में बिकती है। हालांकि, इस्टी पर, इसे एक भारतीय विक्रेता द्वारा लगभग 1.12 लाख में बेचा जा रहा है। कंपनी ने डिस्क्रिप्शन में लिखा है कि यह अच्छी क्वालिटी वाली सामग्री से बना है और हाथ से तैयार किया गया है। चारपाई की चौड़ाई 36 इंच, ऊंचाई 72

इंच है। यह पारंपरिक भारतीय बिस्तर भारत और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न नामों से जाना जाता है। उत्तर भारत में इसे मांजा, खाट, खटिया या मांजी कहा जाता है। इतनी ज्यादा कीमत में खाट बेचने वाली बात कोई नई बात नहीं है। इससे पहले लग्जरी फैशन ब्रांड ने अपने सबसे महंगे ट्रैश बैग को लॉन्च कर लोगों को चौंका दिया था। कंपनी एक मामूली से कचरा फेंकने वाले बैग को एक लाख 42 हजार रुपये में बेच रही थी।

ज्यादातर खाद्यतेल तिलहन के भाव टूटे

नई दिल्ली , एजेंसी। दिल्ली तेल-तिलहन बाजार में शनिचार को ज्यादातर तेल-तिलहन कीमतों में गिरावट का रुख रहा। सरसों तिलहन, मूंगफली तेल तिलहन, सोयाबीन तिलहन तथा सोयाबीन दिल्ली एवं सोयाबीन इंदौर तेल और बिनौला तेल के भाव गिरावट के साथ बंद हुए।

दूसरी ओर सस्ते आयातित तेलों की वजह से कमजोर मांग के बीच सरसों तेल, सोयाबीन डीगम तेल, कच्चा पामतेल (सीपीओ) और पामोलीन तेल की कीमतें पूर्वस्तर पर बनी रहीं। बाजार के जानकार सूत्रों ने बताया कि नवंबर 2021 से अप्रैल 2022 तक के छह महीनों में देश में खाद्यतेलों का आयात 67.07 लाख

टन था। यह आंकड़ा नवंबर 2022 से अप्रैल 2023 तक रिकॉर्ड बढ़त के साथ लगभग 81.1 लाख टन हो गया। इसकी मुख्य वजह, सूरजमुखी तेल के दाम में भारी गिरावट आना है। दूसरी ओर सूरजमुखी तेल से महंगा होने की वजह से मांग कमजोर रहने के कारण कच्चा पामतेल (सीपीओ) और पामोलीन तेल का आयात अप्रैल में अपने पिछले महीने के मुकाबले लगभग 31 प्रतिशत घटा है। आगे इस तेल में और गिरावट संभव है।

सबसे सस्ता खाद्यतेल होने के कारण मार्च 2023 के मुकाबले अप्रैल में सूरजमुखी तेल (सॉफ्ट आयल) का आयात लगभग 68 प्रतिशत बढ़ा है। यह आयात ऐसे समय बढ़ा जब देश में सरसों की फसल तैयार हो गयी थी। सूत्रों ने कृषि मंत्रालय के आंकड़ों के हवाले से कहा कि सरकारी खरीद के प्रयासों के बावजूद जिस तरह इस बार सरसों की फसल नहीं खपी है और किसानों के साथ साथ देश का तेल उद्योग हैरान परेशान है। संभवतः इसी कारण, इस बार गर्मी में बोई जाने वाली तिलहन फसल की खेती का रकबा पिछले साल के गर्मी में बोई गई तिलहन के 10.85 लाख हेक्टेयर के रकबे के मुकाबले इस बार घटकर 9.96 लाख हेक्टेयर रह गया। मस्टर्ड आयल प्रोसिसिंग एसोसिएशन (मोपा) के संयुक्त सचिव अनिल छतर ने कहा कि उन्होंने बार बार सरकार से सरसों किसानों की बेहाली की बात उठायी है कि उन्हें न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से नीचे भाव पर सरसों बेचना पड़ रहा है। उन्होंने यह कहा कि लगभग 40 प्रतिशत सरसों तेल पेराई मिलें बंद हो चुकी है। सस्ते आयातित तेलों की वजह से देशी तिलहनों के नहीं खपने की सरकार से शिकायत दर्ज कराते हुए छतर ने आयातित खाद्यतेलों पर आयात शुल्क बढ़ाने की भी मांग कई बार की है।

जो रूट के सूटकेस पर बैठकर एयरपोर्ट से बाहर निकले चहल, साथी खिलाड़ियों से टकराए

जयपुर, एजेंसी

युजवेंद्र चहल क्रिकेट के मैदान पर एक दिलचस्प चरित्र हैं। ऑन-फील्ड जहां उनकी गेंदों को खेलना मुश्किल होता है, वहीं कभी-कभी उनका सेंस ऑफ ह्यूमर भी लीग से हटकर होता है। लीग शुरू होने से पहले, राजस्थान रॉयल्स ने एक वीडियो शेयर किया था जिसमें वह जो रूट के साथ एक पंजाबी गाने पर डांस करते दिखे थे। रविवार को रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के खिलाफ मैच से पहले भी चहल का रूट के साथ एक वीडियो वायरल हुआ है जो काफी फनी है।

कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ ईडन गार्डन्स में मैच खेलने के बाद जब राजस्थान की टीम जयपुर पहुंची तो एयरपोर्ट पर चहल रूट के साथ मस्ती करते दिखे। राजस्थान ने एक वीडियो शेयर किया जिसमें चहल को रूट के सूटकेस पर बैठे देखा जा सकता है। रूट इस दौरान अपनी ट्रोली को पकड़कर आगे बढ़ रहे थे। इस दौरान स्लोप पर ट्रॉली तेजी से आगे बढ़ती है और चहल आगे चल रहे खिलाड़ियों से टकरा जाते हैं। इसके बाद सभी खिलाड़ी हंसने लगते हैं।

चहल ने ईडन गार्डन्स में कोलकाता (केकेआर) के खिलाफ पिछले मैच में इतिहास रचा था। उन्होंने मैच में चार विकेट लिए थे और आईपीएल इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गए थे। उन्होंने इस मामले में वेस्टइंडीज के ड्वेन ब्रावो को पीछे छोड़ा था। चहल के नाम 187 विकेट हैं, जबकि ब्रावो ने 183 विकेट लिए थे। कोलकाता के खिलाफ नीतीश राणा का विकेट लेते ही चहल ने रिकॉर्ड अपने नाम किया था। चहल और ब्रावो के बाद पीयूष चावला (174), अमित मिश्रा (172) और रविचंद्रन अश्विन (171) का नाम आता है।

चहल ने इस सीजन अब तक शानदार गेंदबाजी की है। उन्होंने 12 मैचों में 21 विकेट झटके हैं। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 12.81 का रहा है। यानी वह हर करीब 13 गेंदों के बाद इस सीजन विकेट ले रहे हैं। पर्पल कैप की रेस में वह फिलहाल दूसरे स्थान पर हैं। उनसे ज्यादा विकेट गुजरात टाइटंस के राशिद खान ने लिए हैं। राशिद के नाम फिलहाल 12 मैचों में 23 विकेट हैं और पर्पल कैप फिलहाल उन्हीं के पास है। तीसरे नंबर पर पीयूष चावला हैं। उनके नाम 19 विकेट हैं। मौजूदा सीजन में सबसे ज्यादा विकेट लेने वालों में पहले तीन स्थान पर लेग स्पिनर ही हैं।

ट्विटर पर ट्रेंड हुए गंभीर, हैदराबाद में दर्शकों ने उनके सामने लगाए थे कोहली..कोहली के नारे

हैदराबाद, एजेंसी

आईपीएल 2023 का रोमांच फैंस के सिर चढ़कर बोल रहा है। एक के बाद एक कई रोमांचक मैच खेले जा रहे हैं। हालांकि, इन मैचों में कई विवादित पल भी देखने को मिल रहे हैं। शनिवार को हैदराबाद के राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में सनराइजर्स और लखनऊ सुपर जाएंट्स के बीच मुकाबला खेला गया। इसमें किसी फैन ने लखनऊ के डग आउट में नट-बोल्ट फेंक दिया था। हालांकि, इससे लखनऊ के किसी खिलाड़ी या स्टाफ को चोट तो नहीं आई, लेकिन मैच काफी देर रुका रहा। इस मैच में फैंस सिर्फ यहीं तक नहीं रुके, बल्कि उन्होंने लखनऊ के मेंटर गौतम गंभीर और नवीन उल हक को भी ट्रोल किया था।मैच के दौरान जब स्ट्रैटजी टाइम आउट या फिर कभी भी गंभीर और नवीन मैदान पर नजर आते तो हैदराबाद के फैंस कोहली-कोहली के नारे लगाने लगते। इसका वीडियो भी सामने आया है। दरअसल, लखनऊ बनाम बैंगलोर मैच में कोहली और गंभीर आमने-सामने आ गए थे। वहीं, शनिवार को हैदराबाद बनाम लखनऊ मैच में अंपायर ने एक नो बॉल नहीं दिया था, जिस पर लखनऊ ने ट्विटर पर हैदराबाद को ट्रोल कर दिया था। फैंस इससे भी चिढ़े हुए थे। इन सारी घटनाओं की वजह से शनिवार को गौतम गंभीर ट्विटर पर ट्रेंड भी हुए। सोशल मीडिया पर फैंस ने गंभीर को चर्चा का विषय बनाया। फैंस कोहली बनाम गंभीर मामले को आसानी से नहीं जाने देना चाहते हैं।

क्या है नट-बोल्ट वाला मामला?

दरअसल, मैच के 19वें ओवर की तीसरी गेंद के बाद सारा विवाद शुरू हुआ। आवेश की फुलटॉस गेंद पर अब्दुल समद ने एक रन लिया। यह बल्लेबाज के लिए एक खतरनाक गेंद थी। अंपायर ने नो-बॉल करार दिया। लखनऊ के कप्तान क्रुणाल पांड्या ने इस नो-बॉल के खिलाफ रिव्यू लिया। फिर थर्ड अंपायर ने मैदानी अंपायर के फैसले को बदल लिया। उन्होंने नो-बॉल नहीं दिया। अब्दुल समद इससे खुश नहीं थे। उन्होंने लेग अंपायर से इसकी शिकायत की।

लखनऊ ने ट्वीट कर हैदराबाद को किया ट्रोल

नो-बॉल को लेकर लखनऊ सुपर जाएंट्स ने सोशल मीडिया पर सनराइजर्स हैदराबाद के मजे ले लिए। उसने लिखा, हर बार नो-बॉल नहीं मिलता। दरअसल, राजस्थान के खिलाफ मैच में हैदराबाद को संदीप शर्मा की अंतिम गेंद पर नो-बॉल मिल गया था। तब अब्दुल समद ने मौके का फायदा उठाकर छक्का लगा दिया और टीम को जीत दिला दी।

शेफाली ने क्रिकेट के साथ अब पढ़ाई की पिच पर दिखाया अपना जलवा

नई दिल्ली। भारतीय महिला अंडर-19 टीम को विश्व कप जीताने वाले कप्तान शेफाली वर्मा मे क्रिकेट की पिच के साथ ही अब पढ़ाई की पिच पर अपना जलवा दिखा दिया है। हाल ही में शेफाली वर्मा ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक तस्वीर शेयर की है, जिसमें उन्होंने अपने हाथ में 12वीं की मार्कशीट पकड़ते हुए नजर आ रही है।

सीबीएसई ने 12वीं क्लास के रिजल्ट घोषित किए थे, जिसमें शेफाली वर्मा ने 80 प्रतिशत हासिल किए। 12वीं क्लास में शानदार प्रदर्शन कर शेफाली काफी खुश नजर आ रही है और सोशल मीडिया पर उन्होंने अपने इस मार्कशीट की फोटो शेयर की है।दरअसल, भारतीय महिला क्रिकेट टीम की सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक पोस्ट को शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, 2023 में एक और बहुत स्पेशल 80+ स्मैश किया, लेकिन इस बार 12 वीं बोर्ड में ! शेफाली ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट पर तीन तस्वीरें साझा की। पहली तस्वीर में वो हाथ में अपनी 12वीं क्लास की मार्कशीट शेयर की है, जिसे वह हाथ में लिए हुए नजर आ रही हैं। आखिरी तस्वीर जो उन्होंने शेयर की है, वह उनकी यादगार पारी खेलने के दौरान की तस्वीर है। शेफाली के इस शानदार प्रदर्शन के लिए उन्हें देशभर से फैंस बधाईयां दे रहे हैं। हरियाणा के रोहतक की रहने वाली शेफाली भारतीय टीम की सलामी बल्लेबाज हैं और स्पिन गेंदबाजी भी करती हैं। शेफाली ने 15 साल की उम्र में टीम इंडिया के लिए डेब्यू किया था। उन्होंने अब तक भारतीय टीम की तरफ से 2 टेस्ट, 21 वनडे और 56 इंटरनेशनल टी20 मैच खेले हैं। शेफाली ने साल 2022 में अंडर 19 टीम को टी20 विश्व कप का खिताब भी दिलाया था।

हेनरिच क्लासेन ने की दर्शकों की आलोचना तो लगा जुर्माना, अमित मिश्रा को पड़ी फटकार

हैदराबाद, एजेंसी

सनराइजर्स हैदराबाद को अपने होमग्राउंड राजीव गांधी इंटरनेशनल स्टेडियम में शनिवार (13 मई) को लखनऊ सुपरजाइंट्स के खिलाफ सात विकेट से हार का सामना करना पड़ा। इस हार के बाद टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज हेनरिच क्लासेन पर बड़ा जुर्माना लगा। क्लासेन पर आईपीएल की आचार संहिता का उल्लंघन करने के लिए मैच फीस का 10 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया।

दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाज क्लासेन ने 29 गेंदों में 47 रन बनाए। उनकी मदद से हैदराबाद ने 20 ओवर में छह विकेट पर 182 रन बनाए। जवाब में लखनऊ सुपर जाएंट्स ने 19.2 ओवर में तीन विकेट पर 185 रन बनाकर मैच को अपने नाम कर लिया। उन्होंने मैच के दौरान लेग अंपायर से बहस की। वहीं, पारी समाप्त होने के बाद ब्रॉडकास्टर से बातचीत के दौरान दर्शकों की आलोचना की।

आईपीएल ने एक बयान में कहा, क्लासेन ने आर्टिकल 2.7 के तहत लेवल 1 के अपराध को स्वीकार किया है, जो आईपीएल की आचार संहिता में सार्वजनिक आलोचना/अनुचित टिप्पणी के इस्तेमाल को बताता है।

यह है क्लासेन का पूरा मामला

दरअसल, मैच के 19वें ओवर की तीसरी गेंद के बाद सारा विवाद शुरू हुआ। आवेश की फुलटॉस गेंद पर अब्दुल समद ने एक रन लिया। यह बल्लेबाज के लिए एक खतरनाक गेंद थी। अंपायर ने नो-बॉल करार दिया। लखनऊ के कप्तान क्रुणाल पांड्या ने इस नो-बॉल के खिलाफ रिव्यू लिया। फिर थर्ड अंपायर ने मैदानी अंपायर के फैसले को बदल लिया। उन्होंने नो-बॉल नहीं दिया। अब्दुल समद इससे खुश नहीं थे। उन्होंने लेग अंपायर से इसकी शिकायत की।

क्लासेन भी अंपायर से बहस करते नजर आए।

आवेश खान ने चौथी गेंद पर हेनरिच क्लासेन को एक भी रन नहीं बनाने दिया। इसी बीच, यह देखा गया कि मैदानी अंपायर लखनऊ के डगआउट के करीब पहुंच गए हैं और वह सपोर्ट स्टाफ से बात कर रहे थे। उन्होंने सनराइजर्स हैदराबाद के स्पिन कोच मुथैया मुरलीधरन से बात की। इसके बाद सोशल मीडिया कई वीडियो और फोटो वायरल हुए। एक फोटो में अंपायर मुरलीधरन को नट बोल्ट दिखा रहे हैं। क्लासेन ने दर्शकों के इस रवैये की आलोचना की, जिस कारण उनके ऊपर जुर्माना लगाया गया।

अमित मिश्रा ने की यह गलती

लखनऊ सुपर जाएंट्स के अनुभवी भारतीय स्पिनर अमित मिश्रा को भी आईपीएल की आचार संहिता के उल्लंघन के लिए फटकार लगाई गई थी। आईपीएल ने अपने बयान में कहा, लेग स्पिनर ने आईपीएल की आचार संहिता के अनुच्छेद 2.2 के तहत लेवल 1 के अपराध को स्वीकार किया, जो मैच के दौरान उपकरणों के दुरुपयोग को बताता है। अमित मिश्रा ने सजा स्वीकार कर ली है। आचार संहिता के स्तर 1 के उल्लंघन के लिए मैच रेफरी का निर्णय अंतिम और बाध्यकारी होता है।

दरअसल, अमित मिश्रा ने अपनी ही गेंद पर अनमोलप्रीत सिंह का कैच पकड़ लिया। इसके बाद उन्हें जोश में गेंद को सामने की ओर पटक दिया। इस कारण उन्हें फटकार लगी है।

यशस्वी जल्द दिख सकते हैं टीम इंडिया में : शास्त्री

नई दिल्ली। आईपीएल 2023 अब अपने शबाब पर है। प्लेऑफ में क्वालिफाई करने के लिए हर टीम अपनी आखिरी कोशिश में जुटी है। दरअसल, यह प्रतिभाशील खिलाड़ियों को एक अवसर देती है कि वो अपने शानदार परफॉर्मेंस से अपने क्रिकेट करियर को संवार सकें।

इस लीग की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि यहां नाम नहीं क्रिकेटर का काम बोलता है। चाहे क्रिकेटर की उम्र 20 साल हो या 40 साल, इस लीग में परफॉर्मेंस ही मायने रखती है। इस सीजन भी कई प्रतिभाशील खिलाड़ियों ने अपने परफॉर्मेंस दिखाकर अपने नाम का डंका पूरे देश में बजाया है।

इस सीजन छा गए यशस्वी

इस सीजन राजस्थान रॉयल्स के सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने धूम मचाई है। उन्होंने इस सीजन में खेले 12 मैचों में 52.27 की औसत और 167.15 के स्ट्राइक रेट से 575 रन बनाए हैं। बता दें कि मुंबई इंडियंस के खिलाफ यशस्वी ने 124 रनों की धमाकेदार पारी खेली थी।

वहीं, केकेआर के खिलाफ यशस्वी ने नाबाद 98 रनों की पारी खेली। इस शानदार परफॉर्मेंस के बाद हर तरफ यह चर्चा हो रही है कि आखिर कब इस होनहार युवा खिलाड़ी को टीम इंडिया की ओर से खेलना का मौका मिलेगा।

इस बात पर भारत के पूर्व कोच रवि शास्त्री ने दिलचस्प बात बताई है। स्टार स्पोर्ट्स से बातचीत करते हुए रवि शास्त्री ने कहा,टीम इंडिया के चयनकर्ता बड़े ध्यान से यशस्वी जायस्वाल के परफॉर्मेंस के देख रहे होंगे। उन्हें जल्द ही टीम इंडिया की ओर से खेलने का मौका मिल सकता है।शास्त्री ने आगे कहा,÷उनकी बल्लेबाजी की सबसे शानदार बात है कि उनके खेल में दम और वो गेंद को सही तरह से टाइम करते हैं। उनका भविष्य उज्जवल है।

लखनऊ सुपर जाएंट्स, सहवाग की नजरों में यह टीम है सबसे संतुलित

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत के पूर्व विस्फोटक ओपनर वीरेंद्र सहवाग आईपीएल 2023 से बतौर क्रिकेट एक्सपर्ट के तौर पर जुड़े हुए हैं। उन्होंने इस दौरान एक आश्चर्यजनक बयान देते हुए 10 टीमों में से एक ऐसे टीम को सबसे संतुलित बताया है, जो अंक तालिका में शीर्ष पर भी नहीं है। सहवाग का मानना है कि मौजूदा टूर्नामेंट में एलएसजी सबसे संतुलित टीमों में से एक रही है।सहवाग ने एक बयान में कहा- लखनऊ सुपर जाएंट्स इस टूर्नामेंट में सबसे अच्छी और सबसे संतुलित टीमों में से एक है। उन्होंने घर से बाहर अच्छा प्रदर्शन किया है, लेकिन लखनऊ में घरेलू मैदान पर उनका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है। वहीं, भारत के पूर्व क्रिकेटर सुनील गावस्कर पंजाब किंग्स के विकेटकीपर-बल्लेबाज जितेश शर्मा के प्रदर्शन से प्रभावित हैं और उन्होंने दावा किया कि जितेश टीम की कामयाबी में एक प्रमुख सदस्य रहा है।

गावस्कर ने कहा- जितेश शर्मा पंजाब के लिए अच्छा योगदान दे रहे हैं। वह पारी के अंत में अच्छी गति से गेंद को हिट कर रहे हैं। वह पंजाब को आखिरी में अच्छा पुश कर रहे हैं और आखिर के चार-पांच ओवरों में जरूरी रन रेट से रन बना रहे हैं। इस तरह का प्रदर्शन उन्होंने पिछले कुछ वर्षों में नहीं किया है। इसलिए बल्ले से उनके योगदान को कम करके नहीं आंका जा सकता।जितेश पीबीकेएस के लिए फिनिशर/पावर-हिटर के रूप में व्यापक प्रभाव डाल रहे हैं। अब तक 12 मैचों में उन्होंने 26 की औसत और 165 के स्ट्राइक रेट से 244 रन बनाए हैं। इस सीजन में उनका बेस्ट स्कोर 49* रन है। उन्होंने इस सीजन में अपनी टीम के लिए छोटे, लेकिन प्रभावशाली स्कोर बनाए हैं।

दिल्ली प्लेऑफ की दौड़ से बाहर होने वाली पहली टीम, पंजाब ने अंक तालिका में लगाई छलांग

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली कैपिटल्स को पंजाब किंग्स के खिलाफ ो करारी हार का सामना करना पड़ा। पंजाब ने उसे ल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में 31 रन से हराकर लेऑफ की अपनी उम्मीदों को जिंदा रखा है। वहीं, ल्ली की टीम प्लेऑफ की दौड़ से बाहर होने वाली हली टीम बन गई। उसके 12 मैचों में आठ अंक हैं। ह अगर अपने बाकी बचे दोनों मैचों को जीत भी ता है तो उसके 12 अंक ही होंगे। ऐसे में वह अगले र में नहीं पहुंच पाएगा। दूसरी ओर, पंजाब ने इस ीत के साथ ही अंक तालिका में छलांग लगाई है। सके 12 अंक हो गए और वह छठे स्थान पर पहुंच या है।

भसिमरन का आईपीएल में हला शतक

पंजाब के लिए प्रभसिमरन सिंह ने सर्वाधिक 03 रन बनाए। उनका आईपीएल में यह पहला तक है। प्रभसिमरन आईपीएल के मौजूदा सीजन में तक लगाने वाले पांचवें बल्लेबाज हैं। सनराइजर्स दराबाद के लिए हैरी ब्रूक, कोलकाता नाइटराइडर्स लिए वेंकटेश अय्यर, राजस्थान रॉयल्स के लिए शस्वी जायसवाल और मुंबई इंडियंस के लिए

सूर्यकुमार यादव ने शतक लगाया है।

नहीं चला धवन-जितेश और लिविंगस्टोन का बल्ला

प्रभसिमरन के अलावा सैम करन और सिकंदर रजा ही दहाई का आंकड़ा पार कर सके। सैम करन ने 24 गेंद पर 20 और सिकंदर रजा ने सात गेंद पर नाबाद 11 रन बनाए। शिखर धवन सात, जितेश शर्मा चार, लियाम लिविंगस्टोन चार रन बनाकर पवेलियन लौटे। हरप्रीत बराड़ और शाहरुख खान ने दो-दो रन बनाए। दिल्ली कैपिटल्स के लिए इशांत शर्मा ने सबसे ज्यादा दो विकेट लिए। अक्षर पटेल, प्रवीण दुबे, कुलदीप यादव और मुकेश कुमार को एक-एक सफलता मिली।

जीत नहीं दिला सके डेविड वॉर्नर

दिल्ली के बल्लेबाजों ने इस मैच में शर्मनाक प्रदर्शन किया। खराब बल्लेबाजी के कारण ही टीम को हार का सामना करना पड़ा। दिल्ली के लिए सिर्फ डेविड वॉर्नर ही टिक सके। उन्होंने 27 गेंद पर 200 की स्ट्राइक रेट से 54 रन बनाए। वॉर्नर ने 10 चौके लगाए। उनके बल्ले से एक छक्का भी निकला, लेकिन वह टीम को जीत नहीं दिला पाए।

दिल्ली के पांच बल्लेबाज ही दहाई का आंकड़ा छू सके

दिल्ली की टीम ने पावरप्ले में बिना किसी नुकसान के 65 रन बना लिए थे। उसके बाद 50 रन और जोड़ने में टीम के छह बल्लेबाज आउट हो गए। यहां से टीम हार की ओर बढ़ गई। पंजाब के स्पिन गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन करते दिल्ली के बल्लेबाजों को पिच पर ढेर कर दिया। दिल्ली के लिए फिलिप साल्ट 21, अमन हकीम खान और प्रवीण दुबे ने 16-16 रन बनाए। कुलदीप यादव ने नाबाद 10 रन बनाए। इन पांच बल्लेबाजों के अलावा कोई भी दहाई का आंकड़ा नहीं छू सका। रिले रूसो पांच, मिचेल मार्श तीन और अक्षर पटेल एक रन बनाकर आउट हुए। मनीष पांडे खाता नहीं खोल सके।

पंजाब के गेंदबाजों ने किया कमाल

शुरुआती छह ओवरों में तो पंजाब के गेंदबाज नहीं चले, लेकिन एक बार जब पावरप्ले समाप्त हुआ और स्पिनर्स आए तो वह छा गए। हरप्रीत बराड़ और राहुल चाहर ने कहर बरपा दिया। हरप्रीत बराड़ ने चार और राहुल चाहर ने दो विकेट लिए। आखिरी ओवरों में तेज गेंदबाज नाथन एलिस ने दो विकेट झटके।

संक्षिप्त समाचार

गुरुग्राम में तोड़फोड़ में बाधा डालने वाले 12 लोगों पर एफआईआर, अवैध कॉलोनी काटने वाले भूमाफिया पर भी एक्शन

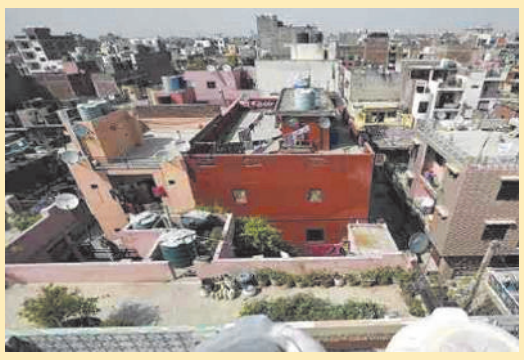

गुरुग्राम, एजेंसी। गुरुग्राम के सेक्टर-45 के कन्हई गांव में हुई तोड़फोड़ में बाधा पैदा करने वाले पर तीन महिला समेत 12 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। इसके अलावा 70 से 80 अज्ञात लोगों पर सरकारी काम में बाधा डालने पर मामला दर्ज हुआ है। एचएसवीपी के संपदा दफ्तर-2 के एसडीई सर्वे ज्ञान चंद सैनी ने सेक्टर-40 थाने में शुक्रवार देर शाम को मामला दर्ज कराया है। एसडीई सर्वे ने पुलिस को दी शिकायत में कहा है कि 12 मई को जेई परविन्द्र, जेई विकास, जेई अमन, जेई योगेश, जेई आनन्द, जेई योगेश कुमार व पटवारी विनोद के साथ एचएसवीपी की अधिकृत जमीन गांव कन्हई में खसरा नंबर 34/13/2 में अवैध निर्माण हटाने के लिए गया था। करीब 4.00 बजे जब जेसीबी चालको के साथ गांव में अवैध निर्माण को हटाना शुरू किया, तभी गांव के करीब 70/80 व्यक्ति/ महिला अपने हाथ में लाठी डंडे लेकर मौके पर आ गए। सरकारी कार्य को रोकने और सरकार के कार्य में बाधा उत्पन्न करने लगे। वे लोग और महिलाएं ज्यादा आक्रोशित हो गई। सरकारी कर्मचारियों पर हमला करने के लिए तैयार हो गए। जो ड्यूटी मजिस्ट्रेट व एसडीई संदीप लोट ने सेक्टर-40 थाना को उचित पुलिस बल प्रयोग करने के लिए आदेश दिया। अगर वे पुलिस बल प्रयोग करने के आदेश नहीं देते तो यह लोग टीम के कर्मियों को भारी चोट पहुंचा सकते थे। जो उन्होंने हालात तो देखते हुए उचित बल का प्रयोग करने का आदेश दिए। उन लोगो ने पुलिस प्रशासन और एचएसवीपी के कर्मचारियों के साथ हाथापाई व मारपिटाई की है। इनमें से कुछ व्यक्तियों के नाम विकास, राहुल, विशाल, महाबीर, सुशील कुमार, सज्जन सिंह, हैप्पी, छत्तरपाल, सरला, कमलेश, सुषमा निवासी गांव कन्हई है। इनके अलावा महिलाओं के नाम नहीं जानता है। फर्रुखनगर में अवैध कॉलोनी काटने पर एक भू माफिया पर पुलिस ने मामला दर्ज किया है। डीटीपी प्रवर्तन मनीष यादव पुलिस को दी शिकायत में कहा कि प्रॉपर्टी डीलर हरपाल ने फर्रुखनगर के खसरा नंबर एक में अवैध कॉलोनी काटी है। यहां पर आवासीय, व्यावसायिक उद्देश्य के लिए भूखंड और अवैध सड़क नेटवर्क, डीपीसी, और वेयर हाउस का अवैध निर्माण किया है। हरियाणा विकास और शहरी क्षेत्रों के विनियमन अधिनियम, 1975 की धारा 7 (1) और (दो) के उल्लंघन है। इस तहत कॉलोनी काटने के लिए विभाग से एनओसी लेनी जरूरी होती है, लेकिन ऐसा नहीं किया गया। इसको लेकर हरपाल को नोटिस भेजे गए, संतोष जवाब नहीं दिया गया है। ऐसे व्यक्ति के खिलाफ एफआईआर की जाए।

गरजा प्रशासन का बुलडोजर, ध्वस्त की गई 30 फ्लैट की बिल्डिंग; अवैध निर्माण पर कार्रवाई हुई तेज

गुरुग्राम एजेंसी। आयुध डिपो के प्रतिबंधित दायरे में स्थित सुखराली एंक्लेव में शनिवार को नगर निगम द्वारा अवैध रूप से बने एक तीन मंजिला अवैध भवन को जमींदोज कर दिया गया। यहां पर अवैध रूप से 30 फ्लैटों का निर्माण किया जा रहा था। कार्रवाई के दौरान नगर निगम के संयुक्त आयुक्त सहित सहायक अभियंता स्तर के अधिकारी और पुलिस बल मौजूद रहा। निगम की टीम ने पूरी अवैध तीन मंजिला इस इमारत को धराशायी कर दिया है। बता दें कि 11 मई को नगर निगम की टीम द्वारा सुखराली इंकलेव सहित आसपास के प्रतिबंधित क्षेत्र में अवैध निर्माणों के खिलाफ कार्रवाई की गई थी। कार्रवाई के दौरान यहां पर एक बड़े भवन में लगभग 30 फ्लैटों का निर्माण किया जा रहा था। निगमायुक्त पीसी मीणा द्वारा इस प्रकार के निर्माणों के खिलाफ समय पर कार्रवाई नहीं करने के कारण एक कनिष्ठ अभियंता को निलंबित व चार्जशीट कर दिया गया और संबंधित संयुक्त आयुक्त को निर्देश दिए गए थे कि वह अपनी निगरानी में इस तीन मंजिला भवन को पूरी तरह से तुड़वाएं। निगमायुक्त के निर्देशों की पालना में शनिवार को संयुक्त आयुक्त-2 विजय यादव के नेतृत्व में सहायक अभियंता, कनिष्ठ अभियंता स्तर के अधिकारियों की टीम जेसीबी सहित तोड़फोड़ के काम में आने वाली अन्य मशीनरी व पुलिस बल लेकर सुखराली इंकलेव पहुंची और अवैध निर्माणाधीन भवन को धराशायी करने की कार्रवाई की। किसी भी प्रकार के विरोध की स्थिति से निपटने के लिए मौके पर भारी पुलिस बल तैनात रहा।

दिल्ली एम्स में हुई मेटल-फ्री स्पाइन फिक्सेशन सर्जरी; एशिया का पहला मामला

नईदिल्ली, एजेंसी। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के डॉक्टरों ने छह माह के शिशु की उसकी मां के अस्थि निरोपण का इस्तेमाल कर सफलतापूर्वक मेटल-फ्री स्पाइन फिक्सेशन सर्जरी की, जिससे वह ऐसी सर्जरी कराने वाला एशिया का सबसे कम उम्र का बच्चा बन गया है। एम्स ने एक बयान में कहा कि शिशु को गत वर्ष 10 जून को 15 घंटे तक चली सर्जरी के बाद 11 महीनों तक वेंटीलेटर पर रखा गया और 10 मई को उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी। एम्स में न्यूरोसर्जरी के प्रोफेसर डॉ. दीपक गुप्ता ने बताया कि शिशु को एक अन्य अस्पताल में सामान्य प्रसव के दौरान रीढ़ की हड्डी तथा ब्रेकियल प्लेक्सस में चोट लगी थी। जन्म के समय उसका वजन 4.5 किलोग्राम था। जन्म के बाद बच्चे को ऑक्सीजन सपोर्ट पर रखा गया और उसे एस्पिरेशन निमोनिया से पीड़ित बताया गया था। डॉ. गुप्ता ने कहा, मई 2022 में जब पांच महीने की उम्र में उसे हमारे पास लाया गया था तो उसकी श्वसन प्रणाली खराब हो गयी थी तथा तीनों अंगों (बाएं ऊपरी और निचले अंग, दाएं निचले अंग) में गतिविधि कम हो गयी थी। जांच में पता चला कि उसकी रीढ़ की हड्डी में चोट है तथा ग्रीवा रीढ़ अपने स्थान से हट गयी है।

गडकरी के मंत्रालय की सख्ती ने दिखाया असर, ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे पर काम शुरू

नई दिल्ली, एजेंसी।
ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे को लेकर सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय और नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया की नाराजगी का असर दिखने लगा है। जुर्माने से बचने के लिए कंपनी ने एक्सप्रेसवे पर सड़क सुरक्षा से लेकर साफ-सफाई का तेजी से काम शुरू कर दिया है।

स्ट्रीट लाइट चालू करने के लिए मई के अंत तक का समय मांगा है। उधर, कुछ स्थानों पर मरम्मत का भी काम शुरू कर दिया है। उधर, परियोजना क्रियान्वयन इकाई (पीआईयू) ने भी प्रति दिन के हिसाब से काम की समीक्षा शुरू कर दी है। कंपनी से कहा गया है कि वो एक सप्ताह के अंदर काम की गति को बढ़ाएं। उसके बाद एक्सप्रेसवे पर पूरी क्षमता के साथ काम हो, जिससे व्यापक बदलाव दिखाई दे सके। एक्सप्रेसवे की हालत को लेकर हिंदुस्तान ने प्रमुखता से खबर प्रकाशित की थी, जिसके बाद कंपनी ने अब काम शुरू किया है।

बीते दिनों ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे की हालत को देख सड़क परिवहन मंत्रालय के अधिकारियों ने नाराजगी जाहिर की थी। इसके बाद एनएचएआई के वरिष्ठ अधिकारियों ने एक्सप्रेसवे का काम देख रही कंपनी के लोगों के साथ बैठक की, जिसमें स्पष्ट किया गया कि एक्सप्रेसवे का काम करीब एक वर्ष होने को है, लेकिन कोई सुधार नहीं दिख रहा है। सड़क सुरक्षा के लिए न सही दूरी पर साइन बोर्ड लगे हैं और ना ही एक्सप्रेसवे पर साफ-सफाई ठीक रखी जा रही है। डिवाइडर और लूप के बीच हरित क्षेत्र में पेड़ सूखे हुए हैं। 135 किलोमीटर लंबे एक्सप्रेसवे के अधिकांश हिस्से में रोशनी नहीं है।

इससे लोगों को आवागमन में काफी परेशानी होती है। रात में हादसे की हमेशा आशंका बनी रहती है। लाइटें खराब पड़ी हैं, जबकि पांच वर्ष पूर्व जब एक्सप्रेसवे को यातायात के लिए खोला गया था, उस वक्त एक्सप्रेसवे पर बेहतर रोशनी की व्यवस्था थी। सौर ऊर्जा के माध्यम से खंभे पर लगीं स्ट्रीट लाइटें जलती थी।

बैठक में एनएचएआई ने स्पष्ट कर दिया था कि अगर 15 दिन के अंदर जमीनी स्तर पर काम शुरू नहीं हुआ तो फिर प्रतिदिन 14 लाख रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा।

20 वर्ष के लिए टीओटी पर है एक्सप्रेसवे: बीते वर्ष मैपल हाईवे कंपनी ने ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे को टोल ऑपरेट ट्रांसफर (टीओटी) मोड पर दिया था, जिसमें एक्सप्रेसवे पर टोल टैक्स वसूली करने, उसका रखरखाव और मरम्मत तक का पूरा काम कंपनी के हाथों में चलया गया। अब कंपनी का कहना है कि बीते वर्ष एक्सप्रेसवे को टीओटी पर दिया गया। उसके पहले से एक्सप्रेसवे पर काफी जगहों से सड़क टूटी पड़ी है। इसलिए उसकी मरम्मत का काम एनएचएआई करे। इस पर एनएचएआई सहमत भी है। उसने करीब 110 करोड़ रुपये एक्सप्रेसवे का निर्माण करने वाली कंपनियों की बैंक गारंटी में से काट लिया है, जिसके आधार पर सड़क की मरम्मत की जाएगी, लेकिन एक्सप्रेसवे पर बाकी काम कंपनी को ही करना है।

नौकर ने बेडरूम में स्पाई कैमरा छुपा बना लिया मालकिन का एमएमएस

गुरुग्राम, एजेंसी।
गुरुग्राम के एक पॉश इलाके में रहने वाली महिला ने अपने नौकर पर उसके बेडरूम में स्पाई कैमरा लगाकर आपत्तिजनक वीडियो रिकॉर्ड कर ब्लैकमेल करने का आरोप लगाया है। महिला का आरोप है कि नौकर ने वीडियो इंटरनेट पर वायरल करने की धमकी देकर दो लाख रुपये की मांग की है। पुलिस ने शिकायत पर शुक्रवार को साइबर अपराध थाना पूर्व में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। हालांकि अभी तक आरोपी की गिरफ्तारी पहीं हुई है।

सेक्टर-40 थाने के पॉश इलाके की रहने वाली करीब 30 वर्षीय महिला ने शिकायत में बताया कि उसने कुछ दिन पहले एक प्लेसमेंट एजेंसी के माध्यम से एक नौकर रखा था। नौकर की पहचान उत्तर प्रदेश के कौशांबी निवासी शुभम कुमार के रूप में हुई है। महिला का आरोप है कि नौकर उनके घर पर रहता था। आरोप है कि यहां काम करने के दौरान नौकर ने उसके बेडरूम में स्पाई कैमरा लगा दिया और चुपके से उसका आपत्तिजनक वीडियो बना लिया। उन्हें स्पाई कैमरे के बारे में पिछले हफ्ते अपने बेडरूम की सफाई के दौरान पता चला। उसने नौकर को तुरंत काम से निकाल दिया था, लेकिन बदनामी के डर से पहले कोई कार्रवाई नहीं की, लेकिन अब नौकर आपत्तिजनक वीडियो वायरल करने की धमकी देकर दो लाख रुपये की मांग कर रहा है। पुलिस ने शिकायत के बाद शुक्रवार को साइबर थाना क्राइम ईस्ट पुलिस स्टेशन में आईटी अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत एफआईआर दर्ज की गई। जांच अधिकारी ने बताया कि एक प्राथमिकी दर्ज की गई थी,जांच चल रही है। आरोपी को जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

नौकर रखने पर एहतियात बरतने की सलाह: पुलिस प्रवक्ता सुभाष बोकन ने बताया कि घर में काम करने के लिए नौकर को रखने से पहले उसका सत्यापन करवाया जाएं,ताकि उसके बारे में सभी जानकारी पुलिस के पास हो। वहीं घर में काम करवाने के दौरान नौकर पर नजर जरूर रखें, ताकि वह कोई गलत कदम नहीं उठाएं। इसके अलावा घर में निजी समस्याओं और कारोबार के बारे में भी नौकर के सामने किसी प्रकार की चर्चा नहीं करें। इसके अलावा घर में कभी भी नौकर को अकेला नहीं छोड़े।

दिल्ली के जेम्स बॉन्ड हैं हेड कॉन्स्टेबल अजीत सिंह, 9 माह में 80 बदमाशों को पहुंचा चुके सलाखों के पीछे

नई दिल्ली एजेंसी।
दिल्ली पुलिस के हेड कॉन्स्टेबल अजीत सिंह अपने काम को लेकर पूरे विभाग में चर्चा का विषय बन गए हैं। इन्हें अगर दिल्ली का जेम्स बॉन्ड कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। वजीराबाद थाने में तैनात अजीत सिंह ने पिछले नौ महीनों में 80 घोषित अपराधियों को गिरफ्तार कर नई मिशाल पेश की है।

डीसीपी (नॉर्थ) सागर सिंह कलसी ने शनिवार को इस बारे में जानकारी देते हुए कहा, वजीराबाद थाने में तैनात हेड कॉन्स्टेबल अजीत सिंह ने 19 अगस्त 2022 से 12 मई 2023 की अवधि के दौरान 80 घोषित अपराधियों को गिरफ्तार किया है, जिनमें 47 बदमाश हत्या, बलात्कार, डकैती, डकैती, स्नैचिंग, दिन-रात चोरी और ऑटो-लिफ्टिंग आदि जैसे जघन्य मामलों में शामिल हैं। डीसीपी ने आगे बताया कि कि हेड कॉन्स्टेबल अजीत सिंह को वजीराबाद थाने में तब तैनात किया गया था जब उनके साथ तैनात वरिष्ठ अफसरों ने महसूस किया कि वह आपराधिक व्यवहार और क्राइम ट्रेंड से अच्छी तरह वाकिफ हैं।

सागर कलसी ने कहा, वह आपराधिक व्यवहार और क्राइम ट्रेंड से बखूबी वाकिफ हैं। उनके काबिलियत का आकलन करने पर, वरिष्ठ अफसरों ने उन्हें वजीराबाद थाने के पीओ स्टाफ में तैनात किया। घोषित अपराधियों की सूची बनाने के लिए पहला कदम कई थानों, न्यायालयों और अन्य स्रोतों से डेटा इकट्ठा करना था। कई अपराधी नाम, पता और शक्ल बदलकर गिरफ्तारी से बच रहे थे।

उन्होंने कहा कि यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि कुछ मामलों में घोषित अपराधियों (पीओ) ने अपनी प्रारंभिक गिरफ्तारी के दौरान फर्जी नाम, धर्म और पते दिए थे, लेकिन हेड कॉन्स्टेबल अजीत सिंह की ईमानदारी और कड़ी मेहनत के कारण वे कानून के हाथों से बच नहीं सके। उन्होंने घोषित अपराधियों को गिरफ्तार करके कई जघन्य मामलों को सुलझाने में मदद की है। इन गिरफ्तारियों के परिणामस्वरूप सैकड़ों मामलों का समाधान हुआ और कई अपराधों को रोका गया। उन्होंने घोषित अपराधियों को गिरफ्तार करने में जिम्मेदारी की भावना, कर्तव्य के प्रति समर्पण और उच्च क्षमता का प्रदर्शन किया है।

हेड कॉन्स्टेबल अजीत सिंह को 11 जनवरी 2010 को दिल्ली पुलिस में कॉन्स्टेबल के रूप में भर्ती किया गया था। एक आधिकारिक बयान में कहा गया है कि उन्हें प्रोत्साहित करने और उनके द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों की सराहना करने के लिए एएसआई के पद पर आउट ऑफ टर्न प्रमोशन के लिए उनका प्रस्ताव पुलिस मुख्यालय भेजा जा रहा है।

अंजिना राजगोपाल ने 400 अनाथ बच्चों को दिया मां जैसा प्यार; छोड़ दी प्रोफेसर की नौकरी

नई दिल्ली, एजेंसी।
मां यानी हमारी जिंदगी का आधर, हमारी सबसे बड़ी ताकत होती है। वह खुद तपिश सहती है, पर आंचल की छांव में बच्चों को रखती है। वैसे अपने बच्चे के लिए हर मां आदर्श होती है, लेकिन समाज में ऐसी कई माताएं हैं, जिनके लिए हर जरूरतमंद बच्चे उनके अपने बच्चे जैसे हैं। वहीं, नोएडा में एक ऐसी भी मां और एक टीचर हैं जिन्होंने दो-चार नहीं बल्कि 400 से अधिक बच्चों को मां जैसा प्यार देकर उनके जीवन को संवारा है। सेक्टर-12 में रहने वाली 62 वर्षीय अंजिना राजगोपाल 'साई बाल कुटीर' अनाथालय की अध्यक्ष हैं। वह अब तक 400 से अधिक बच्चों की जिंदगी बदल चुकी हैं। इतना ही नहीं, इन्हीं बच्चों के जीवन को सुनहरा बनाने के लिए अंजना ने शादी भी नहीं की।

अंजिना रोजगोपाल ने बताया कि आश्रम में ऐसे में बच्चों को भी शिक्षा दी जाती है, जिनके मां-बाप गुजर गए तो रिश्तेदारों ने जिम्मेदारी लेने से मना कर दिया। उन्होंने बताया

कि वर्तमान में वह करीब 80 बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ खाने एवं सभी सुविधाएं दी जा रही है। उनके पास रहने वाले सभी बच्चे उन्हें मां कहकर पुकारते हैं। स्कूल में बच्चों ने मातृ दिवस मनाया शहर के विभिन्न स्कूलों में शनिवार को मातृ दिवस मनाया गया। छात्र-छात्राओं ने विभिन्न तरह की रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। ग्रेटर नोएडा में स्वर्ण नगरी स्थिति जीडी गोयनका पब्लिक स्कूल में मातृ दिवस पर विशेष सभा हुई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. अमित कौर पुरी और प्रधानाचार्य डॉ. रेणु सहगल रही। कक्षा नर्सरी के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। ग्रेटर नोएडा वेस्ट के रेयान इंटरनेशनल स्कूल में मातृ दिवस उल्लास के साथ मनाया गया। माताओं के लिए विशेष प्रार्थना की गई। अध्यक्ष डॉ.एएफ पिंटो और प्रधानाचार्य ने सभी बच्चों की माताओं को सम्मानित किया गया। उधर, ग्रेटर नोएडा के रेयान इंटरनेशनल स्कूल में भी मातृ दिवस मनाया, जिसमें बच्चों ने अपनी माताओं के लिए प्रस्तुति किया।

जापान में मांडविया ने वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए परस्पर सहयोग पर दिया जोर

टोक्यो एजेंसी।
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए परस्पर सहयोग पर बल दिया है। डॉ. मांडविया ने आज जापान के नागासाकी में जी-7 देशों के स्वास्थ्य मंत्रियों की बैठक को संबोधित करते हुए सदस्य देशों को मौजूदा चुनौतियों के प्रति आगाह किया। डॉ. मांडविया ने कहा कि वैश्विक स्तर पर अनेक प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन इन सभी कदमों को एकजुट किए जाने की जरूरत है। उन्होंने महामारी के कारण उत्पन्न अनेक चुनौतियों के बीच डिजिटल समाधानों की भूमिका तथा प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल पर भी जोर दिया जिससे स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र में निरंतरता बनी रहे।

मांडविया ने कहा कि कोविड-19 महामारी ने मौजूदा वैश्विक स्वास्थ्य संरचना की खामियों को उजागर किया है, यह विश्व स्वास्थ्य

संगठन की केंद्रीयता को बनाए रखते हुए अधिक मजबूत, समावेशी और उत्तरदायी वैश्विक स्वास्थ्य संरचना की आवश्यकता पर बल देती है। उन्होंने विश्व के समक्ष आने वाली चुनौतियों को दूर करने के लिए अपूर्ण और संकुचित प्रयासों की अपेक्षा वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सहयोगी प्रयासों की आवश्यकता को रेखांकित किया।

स्वास्थ्य सेवा वितरण का समर्थन करने के लिए डिजिटल सार्वजनिक वस्तुओं के प्रचार के माध्यम से डिजिटल अंतर को दूर करते हुए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि प्रौद्योगिकी के लाभ सभी के लिए उपलब्ध हों और इनसे स्वास्थ्य प्रतिक्रिया क्षमताओं में सहायता और वृद्धि की जा सके। इस बैठक का आयोजन वैश्विक स्वास्थ्य चुनौतियों और भविष्य की स्वास्थ्य आपात स्थितियों के लिए तैयारी, रोकथाम और प्रतिक्रिया को सुनिश्चित करने के साधनों पर चर्चा करने के लिए किया गया था। बैठक में जी7 देशों के स्वास्थ्य मंत्री और आउटरीच 4 देशों- भारत, इंडोनेशिया, वियतनाम और थाईलैंड को आमंत्रित किया गया था।

इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए, डॉ. मांडविया ने कहा कि जब किसी स्वास्थ्य आपात स्थिति के प्रबंधन की बात आती है, तो किसी भी देश की राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणाली वैश्विक स्वास्थ्य प्रणाली पर बहुत अधिक निर्भर होती है। उन्होंने उल्लेख किया कि कोविड-19 महामारी ने विश्व स्वास्थ्य संगठन की केंद्रीयता को बनाए रखने की आवश्यकता के साथ-साथ अधिक मजबूत, समावेशी और उत्तरदायी वैश्विक स्वास्थ्य संरचना की आवश्यकता पर बल देते हुए मौजूदा वैश्विक स्वास्थ्य संरचना की कमियों को उजागर किया है। उन्होंने कहा कि जहां कई वैश्विक प्रयास जारी हैं, वहीं इन वर्तमान में जारी पहलों के अभिसरण को सुनिश्चित करने की भी आवश्यकता है।

एस जयशंकर ने स्वीडन में आठ देशों के विदेश मंत्रियों से की मुलाकात

स्टॉकहॉम, एजेंसी। विदेश मंत्री एस जयशंकर दूसरे ईयू इंडो-पैसिफिक मिनिस्ट्रियल फोरम (ईआईपीएमएफ) में भाग लेने के लिए स्वीडन पहुंचे हैं। उन्होंने फ्रांस, ऑस्ट्रिया, बेल्जियम, बुल्गारिया, साइप्रस, लातविया, लिथुआनिया और रोमानिया के विदेश मंत्री से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने इंडो-पैसिफिक औ रूस-यूक्रेन युद्ध समेत कई मुद्दों पर चर्चा की। इंडो-पैसिफिक मिनिस्ट्रियल फोरम (ईआईपीएमएफ) में भाग लेने के लिए स्वीडन की तीन दिवसीय यात्रा पर हैं। उन्होंने शनिवार को ईआईपीएमएफ में कई देशों के विदेश मंत्रियों से मुलाकात की। विदेश मंत्री ने ट्वीट कर कहा कि फ्रांस की विदेश मंत्री कैथरीन कॉलोना से मिलकर खुशी हुई। वहीं, उन्होंने यह भी बताया कि प्रधानमंत्री 14 जुलाई को बैस्टिल डे परेड में शामिल होंगे। प्रधानमंत्री मोदी 14 जुलाई को मुख्य अतिथि के रूप में इस वर्ष के बैस्टिल डे परेड में शामिल होंगे। पेरिस में परेड में भाग लेने के लिए मोदी को फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन ने आमंत्रित किया था। विदेश मंत्रालय के अनुसार, भारतीय सशस्त्र बलों की एक टुकड़ी भी अपने फ्रांसीसी सशस्त्र बलों के साथ परेड में भाग लेगी।

ऑस्ट्रेलियाई पुलिस ने जारी कीं 2 तस्वीरें, मंदिर पर हमले के दोषियों को पकड़ने के लिए मदद मांगी

मेलबोर्न , एजेंसी।
ऑस्ट्रेलिया के न्यू साऊथ वेल्स की पुलिस ने 2 तस्वीरें जारी की हैं और पिछले सप्ताह सिडनी में बी.ए.पी.एस. स्वामीनारायण मंदिर में तोडफ़ोड़ करने वाले दोषियों को पकड़ने के लिए जनता से मदद मांगी है। एन.एस.डब्ल्यू. पुलिस ने कहा कि कंबरलैंड पुलिस एरिया कमांड से जुड़े अधिकारियों को 5 मई को सुबह 9 बजे एलेनोर स्ट्रीट पर बुलाया गया था। वहां उन्होंने देखा कि मंदिर की दीवार पर पेंट छिड़का हुआ था। यह घटना 1 से 2 बजे के बीच हुई थी। शुरूआती घंटों में वर्जीनिया स्ट्रीट पर जेम्स रूज ड्राइव रोजहिल की ओर जाते हुए वाहन की एक छवि जारी की। जासूसों का मानना है कि वाहन सवारों के पास ऐसी जानकारी हो सकती है जो जांचकर्त्ताओं की सहायता कर सकती है। पुलिस द्वारा जारी की गई दूसरी तस्वीर में मंदिर के पास एक व्यक्ति दिख रहा है जिसने गहरे रंग के कपड़े पहने हुए हैं और काले रंग की टोपी और चेहरे पर नकाब डाला हुआ है। पुलिस ने कहा कि यह ज्ञात नहीं है कि दर्शाए गए व्यक्ति का दूसरी तस्वीर में दर्शाए गए वाहन से कोई संबंध है या नहीं। यह घटना 23 मई को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ऑस्ट्रेलिया यात्रा से ठीक पहले की है। तेजी से कार्रवाई करने और अपराधियों को कानून के कटघरे में लाने के लिए कहा है। इस वर्ष अपनी भारत यात्रा में प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीस ने पीएम मोदी को कड़ी कार्रवाई का आश्वासन देते हुए कहा था कि भारतीय समुदाय की सुरक्षा उनकी सरकार की प्राथमिकता है।

चीन एवं रूस बढ़ा रहे सैन्य सहयोग, जापान के विदेश मंत्री ने जताई टेंशन

टोक्यो एजेंसी।
जापान के विदेश मंत्री योशिमासा हयाशी ने एशिया में रूसी और चीनी सेनाओं के बीच सहयोग पर शनिवार को चिंता व्यक्त की और कहा कि यूक्रेन में रूस के हमले के मद्देनजर यूरोप की सुरक्षा स्थिति को हिंद-प्रशांत क्षेत्र से अलग नहीं किया जा सकता। स्वीडन में यूरोपीय एवं हिंद प्रशांत देशों के विदेश मंत्रियों की एक बैठक में हयाशी ने कहा कि यूक्रेन में जंग ने अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की बुनियाद को हिला दिया है और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को मिलकर इसका जवाब देना चाहिए।

उन्होंने कहा, अन्यथा अन्य क्षेत्रों से भी इसी तरह की चुनौतियां उभरेंगी और इससे उस व्यवस्था की बुनियाद हिल सकती है, जिस पर हमारी शांति एवं समृद्धि टिकी है। जापान युद्ध में यूक्रेन का समर्थन करता है जबकि चीन ने कहा है कि वह तटस्थ रहेगा और उसने संघर्ष को भड़काने के लिए अमेरिका तथा उत्तर अटलांटिक संधि

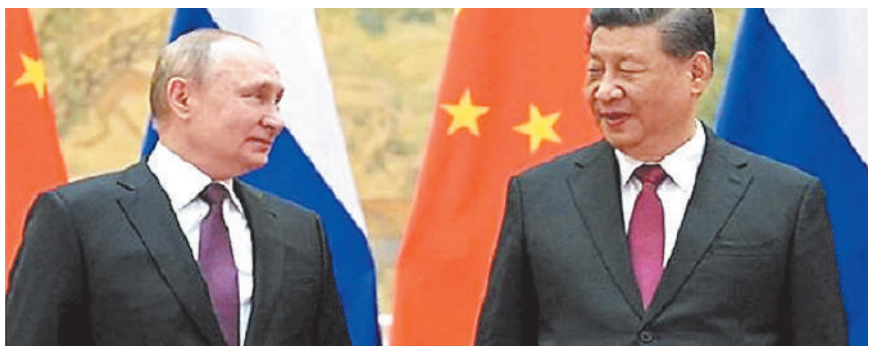

संगठन (नाटो) को जिम्मेदार ठहराया है। हयाशी ने बीजिंग पर पूर्वी और दक्षिण चीन सागरों में ताकत के दम पर यथास्थिति को बदलने के लिए लगातार कोशिश करने और ताइवान के आसपास अपनी सैन्य गतिविधियों को तेज़ करने का आरोप लगाया।

हयाशी ने यह भी चेताया कि उत्तर कोरिया, बैलेस्टिक मिसाइलों का परीक्षण कर क्षेत्र में तनाव भड़का रहा है। बैठक में यूरोपीय संघ और हिंद प्रशांत क्षेत्र के देशों के कई विदेश मंत्रियों ने शिरकत की। इसमें चीन को आमंत्रित नहीं किया गया था। भारत और पाकिस्तान जैसे हिंद प्रशांत के कुछ देशों ने यूक्रेन में युद्ध को खत्म करने का आह्वान किया है लेकिन उन्होंने इसके लिए रूस की निंदा नहीं की है।

पाकिस्तान की विदेश राज्य मंत्री हीना रब्बानी खार ने कहा, हम सबने अपने अलग-अलग तरीकों से इसका समाधान करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा, ''मुझे लगता है कि पाकिस्तान जैसे देश ने एक सबक सीखा है कि संघर्ष कभी समाधान नहीं हो सकता। हम शत्रुता का अंत चाहते हैं, संघर्ष का अंत चाहते हैं, ताकि लोग और लोगों की जिंदगी को नष्ट करने के बजाय जिंदगी बनाने का काम कर सकें।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@ pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129, 9430990555